ज्योतिष पुस्तक माला

सामान्य ज्योतिष

श्री के. एन. राव

न्यायाधीश एस. एन. कपूर

कर्नल ए. के. गौड़

B3

ज्योतिष पुस्तक माला

सामान्य ज्योतिष

23000

ज्योतिष पुस्तक माला

सामान्य ज्योतिष

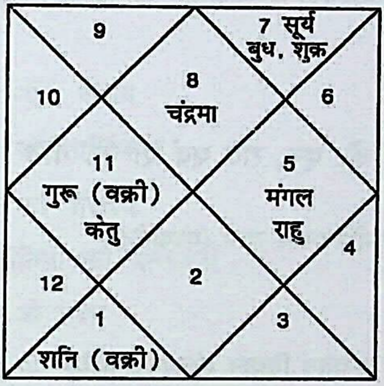

लेखक

श्री के.एन. राव

न्यायाधीश एस.एन. कपूर

कर्नल ए.के. गौड़

संकलनकर्ता

महेन्द्र नाथ केदार

प्रकाशक

भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान

ज्योतिष सामान्य

मूल्य : ₹ 200/-

© प्रकाशक, भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान, (पंजी0)
4649/21 दरियागंज, नई दिल्ली-110002 दूरभाष : 23271975

ज्येष्ठ दशहरा, सम्वत् 2068, जून 2011
नवीन एवं वृहद् संस्करण, गंगा दशहरा, ज्येष्ठ शुक्ल, सम्वत् 2071, 9 जून 2014
जुलाई 2018

लेखक
एस. एन. कपूर, के. एन. राव एवं ए. के. गौड़

अनुवादक : स्व. श्री योगेन्द्रनाथ गुप्ता (एडवोकेट)

प्रकाशक :
भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान (पंजी.)
4649/21 दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23271975, 23256911

लेजर टाइपसैटिंग :
एब्रो एन्टरप्राईजिज
2369, छत्ता शाहजी, चावड़ी बाजार,
दिल्ली-110006
दूरभाष : 23284462

मुद्रण :
अशोक प्रिंटिंग प्रेस
2810, गली माता वाली, नई सड़क,
दिल्ली-110006
दूरभाष : 23264968, 9810377836

पुस्तक मिलने का पता :
आर.वी.एस. बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
जी-4/30, गली न. 3, पांचवां पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110094
दूरभाष : 09953918219, 09582971153

पुस्तक भारती, भारतीय विद्या भवन
कस्तूरवा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 23381369

विषय-सूची

पाठ सं	विषय	पृष्ठ
	संशोधित वृहद् संस्करण	(v)
	प्रस्तावना	(vii)
1.	ज्योतिष–एक वेदांग	1
2.	ज्योतिष की तार्किकता	16
3.	ज्योतिष का परिचय	24
4.	एक ज्योतिषी की योग्यताएँ	34
5.	ज्योतिष..के लाभ	40
6.	ज्योतिष का इतिहास-I	45
	ज्योतिष का इतिहास-II	47
	ज्योतिष का इतिहास-III	49
7.	शिक्षकों के बारे में	67
8.	कर्म विचार, भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प	78
9.	कर्म सिद्धांत	85
10.	ज्योतिष एवं कर्म-विधान	94
11.	भाग्य पर विश्वास क्यों?	109
12.	ज्योतिष और विज्ञान	139
13.	ज्योतिष और मनोविज्ञान (श्री के.एन. राव)	145
	आत्मसार	154
	विषय-सूची	160

संशोधित, वृहद् संस्करण

कुछ समय से कक्षाओं में विद्यार्थियों की शंकाओं के समाधान करने से पुस्तक में कुछ और जानकारी लिखने की आवश्यकता पड़ने पर हमने भिन्न-भिन्न ग्रहों की स्थिति, नव ग्रहों का परिचय, पंचांग श्रवण का महत्त्व, ज्योतिष शास्त्र के षडंग, चंद्रमा, सूर्य और आयु, यात्रा मुहूर्त/प्रस्थान विचार, समय शूल, शुभ चंद्रमा, शुभ लग्न, दिशाशूल के परिहार नक्षत्र से मृत्यु योग, दिशाशूल के उपाय, मुहूर्त की उपयोगिता, नक्षत्र सूत्री कौन, मानव देह और नौ ग्रहों का संबंध, ज्योतिष शास्त्र पर विदेशी वैज्ञानिकों के मत, सिद्धांत स्कन्ध, संहिता स्कंध तथा होरा स्कंध, युग प्रमाण, मन्वन्तर, मनुओं के नाम, अमावस्या, पूर्णमासी के प्रकार, प्रातःकालादि का विवरण, ग्रहों द्वारा ही प्राणियों के पूर्व और अग्रिम जन्म की स्थिति, नक्षत्र और उनके देवता, वेदांग ज्योतिष, ज्योतिष के आचार्य, प्रारब्ध और पुरुषार्थ, लक्ष्मी सरस्वती का आवाहन मंत्र, पंचक विचार आदि साधारण जीवन की उपयोगी जानकारी भी जोड़ दी गई है जिनका एक ज्योतिष के विद्यार्थी के लिए जानना आवश्यक है।

इस पुस्तक के प्रूफ पढ़ने में सदैव की भाँति श्री पंकज जोशी, ज्योतिष विशारद के सहयोग के लिए मैं आभार प्रकट करता हूँ।

—महेन्द्र नाथ केदार

3 जून, 2014

प्रस्तावना

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (चेन्नई) जिसके संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय डा.बी.बी. रमन थे, के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर भारतीय विद्याभवन एवं अन्य ज्योतिष शिक्षा संस्थानों में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के लिए सामान्य ज्योतिष शीर्षक पुस्तक की रचना की गई है।

सामान्य-ज्योतिष में विद्यार्थियों को यह दर्शाया जाता है कि ज्योतिष का हमारी सभ्यता एवं हमारी धरोहर से कितना पारम्परिक, प्राचीन एवं अभिन्न संबंध है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को इस विद्या में अन्तर्निहित प्रतिष्ठा एवं वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराना है। वर्तमान काल में आदरणीय एवं मेधावी महापुरुषों ने इसका परीक्षण किया है और अपने-अपने विचार रखे हैं। इन बुद्धिमान तथा सुप्रसिद्ध ज्योतिषियों की धारणाएँ विविध सम्मत व ठीक हैं। जिन विद्यार्थियों के लिए यह पाठ निर्धारित किए गए हैं, उनके ज्योतिषीय ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखते हुए, हम उन ज्योतिषी विद्वानों के मत यहाँ नहीं दे रहे हैं।

इस पुस्तक में मोटे तौर से चार भाग हैं। प्रथम भाग में विद्यार्थियों को यह बताया गया है कि हमारी परम्परा एवं मूलरूप से तार्किकता को ध्यान में रखते हुए ज्योतिष शास्त्र की क्या उपयोगिता है, जिससे हम ग्रहों के होने वाले प्रभावों को पहले से जानकर, अपनी इच्छाओं को यथा संभव परिवर्तित करके अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत कर सकें। द्वितीय भाग में ज्योतिष के सिद्धान्त एवं इसकी प्राचीनता के बारे में बताया गया है। तृतीय भाग में कर्म सिद्धान्त बताया गया है और चतुर्थ भाग में यह बताया गया है कि इस प्राचीन विज्ञान-शास्त्र को वर्तमान विज्ञान-शास्त्र के पहलुओं से एवं मनोवैज्ञानिक रूप से कैसे देखा जा सकता है।

आइए, अब हम अपने लेखकों के विषय में कुछ बातें विद्यार्थियों को बता दें।

श्री के. एन. राव–भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (चेन्नई) के संस्थापक राष्ट्रीय उप-प्रधान, पिछले दो दशक से, ज्योतिष शास्त्र को वैज्ञानिक की दृष्टि से सही सिद्ध करने के दृढ़ संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से ज्योतिष में शोध कर रहे हैं एवं अपने मूलभूत ज्योतिष अनुपम अनुसंधान एवं पुस्तकों के रूप में प्रकाशित शास्त्र को वैज्ञानिक की दृष्टि से सही सिद्ध करने के दृढ़ संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से ज्योतिष की शिक्षा दे रहे हैं एवं अपने मूलभूत ज्योतिषीय अनुपम अनुसंधान एवं पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। 1990 में लेखा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कार्यालय से महासंचालक (Director General) के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद से उन्होंने अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं एवं शोधकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करने में लगे हैं।

न्यायाधीश शंकर नाथ कपूर–एक वरिष्ठ वैदिक ज्योतिषज्ञ हैं। आप भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (चेन्नई) के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। विभिन्न ज्योतिषीय विषयों पर व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने वाले लेखक एवं शोधकर्त्ताओं के मार्गदर्शक हैं।

कर्नल ए. के. गौड़–भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (चेन्नई) से "ज्योतिष विशारद" की परीक्षा पास की। आप पिछले कई वर्षों से ज्योतिष अध्यापन कार्य में रत हैं। आपकी एक पुस्तक (Profession) 'व्यवसाय' संस्थान द्वारा प्रकाशित हुई है। भारतीय प्राच्य एवं सनातन विज्ञान संस्थान उच्च स्तरीय पुस्तकें प्रकाशित करके ज्योतिष का प्रचार, ज्योतिष कार्यशालाओं का आयोजन करके एवं ज्योतिष विषयों पर विद्वानों द्वारा शंकाओं का सामधान एवं अच्छे लेखकों की कृति को प्रकाशित करके एक महान कार्य कर रहा है। पाठकों से आग्रह है कि वह उस कार्य में पूर्ण सहयोग दें।

–प्रकाशक

अध्याय 1

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धानि स्थितम्।।

(जैसे मोरों में शिखा है और नागों (सर्पों) में मणि इसी प्रकार वेदांग-शास्त्रों में ज्योतिष चोटी पर है) (यजुर्वेद)

ज्योतिष-एक वेदांग

वेद हमारी प्राचीन धरोहर है। वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान का सार समाया हुआ है। ज्योतिष भी वेदों की ही एक शाखा है, वेदों का ही एक अंग है—इसे वेदों का नेत्र माना गया है। ज्योतिष शास्त्र की वास्तविकता समझने के लिए, अर्थात् वेदों की इस शाखा का प्राचीन इतिहास जानने के लिए, यह आवश्यक होगा कि पहले हम वेदों की सर्व व्यापकता एवं उसकी विषय-वस्तु के बारे में कुछ बातें जान लें।

वेदों में निहित विषय-वस्तु-वेदों में ज्ञान का अपार भंडार छिपा है। बहुत प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने, यहाँ हम अंग्रेजी तारीखें अर्थात् सन् आरम्भ होने से 200-500 शताब्दियों पहले की बात कर रहे हैं, धीरे-धीरे यह ज्ञान एकत्रित किया था। सैकड़ों ऋषियों-मुनियों ने अपना-अपना योगदान दिया था। यह बात भी याद रखने योग्य है कि उस आदि काल में ज्ञान को केवल याद रखकर ही सुरक्षित रखा जाता था, क्योंकि उस समय आजकल की तरह कोई पुस्तकें नहीं थी, प्रकाशन संभव नहीं था। ऋषि-मुनि इस ज्ञान को विश्व की सारी जनसंख्या का जीवन सौभाग्यशाली एवं सुखमय बनाने के उद्देश्य से, सुरक्षित रखना चाहते थे। ज्ञान को सदैव

क्रम में रखा गया है। बुद्धिमता एवं चरित्र बल के अनुपात से ही प्रत्येक मनुष्य उसे ग्रहण कर सकता है। हर एक मनुष्य पी. एच. डी. अथवा डाक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकता है। वैदिक ज्ञान का भंडारण एवं विस्तारण बहुत मनोहारी विषय है। आइए, अब हम इस पर गहराई से विचार करें।

ज्ञान के भंडार की सुरक्षा एवं सौभाग्यशाली जीवन–आदिकाल में मनुष्य जो भी जानता था, उसे कंठस्थ कर लेता था। **श्रुति एवं स्मृति,** सुनकर और याद करके। किसी भी चीज को याद करने का सरल तरीका है, उसे लय बनाकर गाना और छोटे–छोटे गीतों के रूप में याद करना। यदि किसी व्यक्ति को बहुत बड़ी संख्या में भी किसी चीज को याद रखना हो, तब भी यही पद्धति उपयोगी साबित होता हैं बुद्धिमान व्यक्तियों की क्या कहें, साधारण से साधारण मनुष्य भी आकर्षक कहानियों के माध्यम से बहुत अच्छी अच्छी बातें सीख लेता है और उन्हें याद रखता है। हमारे ऋषि–मुनियों में अद्‌भुत दूरदर्शिता, बुद्धि की तीक्ष्णता और मानवीय प्रकृति को समझने की पूर्ण शक्ति विद्यमान थी। उन्होंने सारी प्रक्रिया का संश्लेषण किया और उसके फलस्वरूप ही इस वैदिक विषय वस्तु का आविष्कार किया।

इस विषय वस्तु के अन्तर्गत वेदों में ज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यह ज्ञान "ऋचाओं" एवं "सूक्त" के रूप में बताया गया है। इनकी भाषा एवं इनके शब्दों का चयन इस प्रकार से किया गया है कि प्रत्येक ऋचा अथवा श्लोक का अर्थ और उनकी व्याख्या अनेक प्रकार से की जा सकती है और वे सभी प्रकार से ठीक पाए जाते हैं। ऐसा इसलिए किया गया है कि इस ज्ञान के कुछ अंश केवल ऐसे व्यक्तियों के लिए ही रखे गए हैं जिनमें कुछ परिपक्वता आ चुकी है और उनकी बुद्धि का विकास हो चुका है; यदि ये अंश अपरिपक्व मनुष्यों के संसर्ग में आ गए तो समाज के लिए घातक भी सिद्ध हो सकते हैं। इसीलिए वेदों का ज्ञान केवल "सिद्ध" गुरुओं तक ही सीमित था। वेदों के कुछ साधारण भागों को और अधिक ऐसे व्यक्तियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से जिनकी बुद्धि का कुछ मानसिक विकास हो चुका है, उपनिषद एवं भाष्य लिखे गए थे।

ऋषियों ने इस ज्ञान को और अधिक संख्या में जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से पुराणों की रचना की और इसी क्रम में रामायण एवं महाभारत की रचना हुई। इनमें कहानियों के माध्यम पर जोर दिया गया, और प्रत्येक कहानी का उद्देश्य चरित्र की उन्नति एवं मानवीय दृष्टिकोण रखा गया था।

पुराणों में हम वेदांग ज्योतिष के बीज स्पष्ट रूप से पाते हैं। वेदों में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। विभिन्न ज्योतिषीय विषयों पर व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने वाले एक लेखक *श्री एस. एन. कपूर* ने अपने एक लेख में बताया है कि ऋग्वेद में ज्योतिष शास्त्र के बारे में *30 श्लोक* हैं। पुराणों में ऐसी बातें बताई गई हैं जिन्हें बुद्धिमान व्यक्ति, सिद्ध पुरुषों के मार्गदर्शन के सहारे समझ सकते हैं।

वेदों की इस शाखा ज्योतिष–अर्थात् वेदांग–का संबंध वैदिक सर्व व्यापकता से कैसे है, यह बात पुराणों में बताई गई है। ये संबंध हमारी वैभवशाली प्राचीन धरोहर का एक और मनोहारी नमूना है। पुराणों में ब्रह्मांड के बारे में बताया गया है और उसके साथ ही उस ब्रह्मांड में भारतवर्ष का विशिष्ट स्थान क्यों है यह भी बताया गया है। उसके आगे वर्णन करते हुए वे यह भी बताते हैं कि इस ब्रह्मांड के इस विशिष्ट देश भारत में ही क्यों ज्योतिष का विकास सम्भव हुआ। आइए, अब हम वैदिक ब्रह्मांड की जाँच करते हैं उसके साथ ही भारतवर्ष के बारे में जानकारी तथा उसके फलस्वरूप भारतवर्ष में ज्योतिष का विकास कैसे हुआ, इसकी जानकारी प्राप्त करते हैं।

वैदिक ब्रह्मांड–सभी अट्ठारह पुराणों में न्यूनाधिक रूप से ब्रह्मांड का वर्णन आता है। अब हम विष्णु पुराण के बारे में बताते हैं। मैत्रेय ऋषि एवं पाराशर ऋषि का वार्तालाप हो रहा है। मैत्रोय ऋषि के प्रश्न पूछे जाने पर पृथ्वी का वर्णन करते हुए उत्तर दे रहे हैं और यह कह रहे हैं–

''मैत्रेय–आपने मुझे स्वयंभुः द्वारा रचित ब्रह्मा के बारे में बताया। अब मैं आपसे पृथ्वी का वर्णन सुनना चाहता हूँ कि इस पृथ्वी में कितने समुद्र एवं द्वीप हैं, कितने राज्य हैं, कितने पर्वत हैं, कितने जंगल हैं, नदियाँ हैं, धार्मिक शहर हैं, उनका क्षेत्रफल क्या है, उनकी अन्तर्वस्तु क्या हैं, उनकी प्रकृति कैसी है और उनका स्वरूप कैसा है।

पाराशर मैत्रेय, अब आप मुझसे पृथ्वी का संक्षेप में वर्णन सुनिए। इसका पूरा विवरण तो मैं आपको एक शताब्दी में भी नहीं बता पाऊंगा। इसमें सात बड़े द्वीप-महाद्वीप हैं अर्थात् जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर। ये सभी द्वीप सात बड़े समुद्रों से घिरे हैं; क्षार समुद्र (लवण), ईख-रस (इक्षु), मदिरा (सुरा), घृत (सर्पी), दही (दधि), दूध (दुग्ध), और ताजा पानी (जल)।''

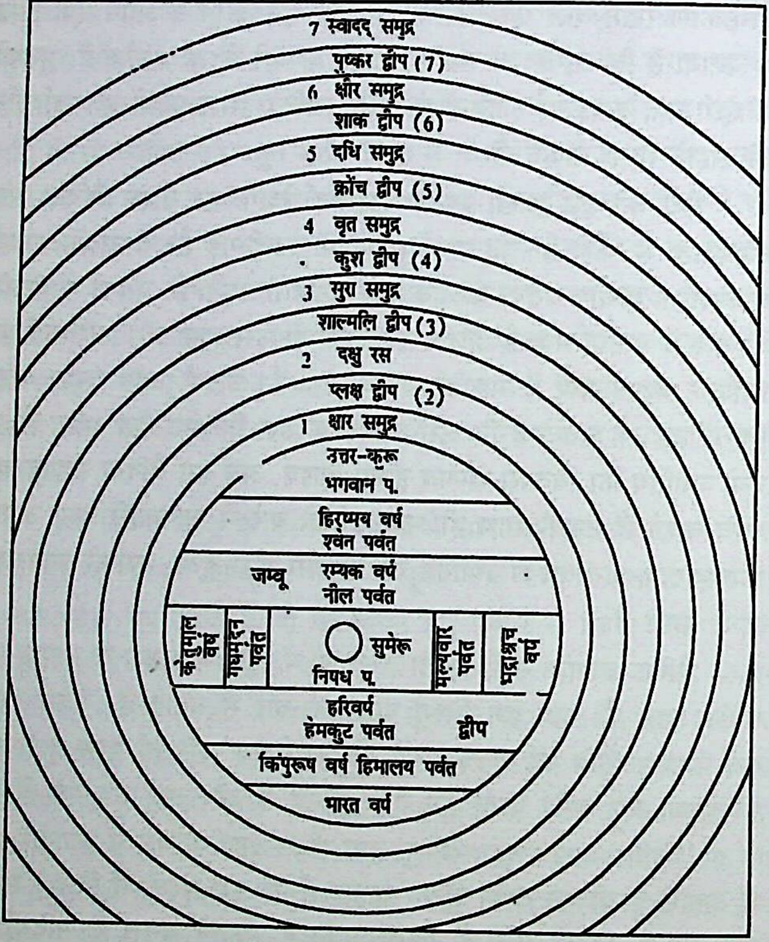

Geography of the seven continents

चित्रः (सप्तद्वीपी भूगोल)

"जम्बू द्वीप इन सबके बीच में है; और इस द्वीप के मध्य में सुमेरू (सुनहरी) पर्वत है। इस सुमेरू पर्वत की ऊँचाई चौरासी हजार योजन है; और पृथ्वी-तल के नीचे उसकी गहराई सोलह हजार योजन है। सर्वोच्च शिखर पर इसका व्यास बत्तीस हजार योजन है। इसकी तलहटी सोलह हजार योजन की है। इस प्रकार यह पर्वत पृथ्वी-कमल के बीच-प्याले के समान है।

सुमेरू पर्वत पर चार देंश स्थित हैं-

1. भद्राश्व वर्ष
2. भारतवर्ष
3. केतुमाल वर्ष
4. उत्तराकुरु वर्ष

ये चारों देश पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर में स्थित हैं।"

अब हम मत्स्य पुराण को देखते हैं। इसमें इन चारों देशों का वर्णन इस प्रकार किया गया है--

"भद्राश्व का शाब्दिक अर्थ है-मांगलिक घोड़ा, चीनी धर्म पौराणिक कथाओं तथा कला में ड्रेगोन को पवित्र माना गया है।

भद्राश्व का अभिप्राय है चीन। भारतवर्ष को हिमालय पर्वत के दक्षिण में होने के कारण हिमावतवर्ष भी कहा जाता था। केतुमाल, वंक्षशु (Oxus) नदी का स्थान था और यह सुमेरू पर्वत के पश्चिम की ओर स्थित था। उत्तर कुरु अल्ताई पर्वत से उत्तरी समुद्र तक फैला विशाल क्षेत्र था।

सुमेरू पर्वत चौकोर था और इसके साथ एक विशेष उपाधि जुड़ी हुई है। अर्थात् सुमेरू पर्वत चार मुख वाले प्रजापति के समान है। पूर्वी मुख सफेद है और इसमें ब्राह्मण जैसा प्रभुत्व झलकता है; इसका दक्षिणी भाग पीला है जो वैश्य जैसा रूप प्रदर्शित करता है; और उत्तरी भाग लाल है जिससे क्षत्रियों की झलक दिखाई देती है। वह केन्द्र सुमेरू पर्वत स्वयं स्थित है, उसे इलावृत कहते हैं।"

आइए अब हम अपना ध्यान 'भारतवर्ष' पर केन्द्रित करें और यह देखें कि इस देश का संबंध वेदांग ज्योतिष के सृजन से कैसे और क्यों रहा। हम एक बार फिर विष्णु पुराण में देखते हैं कि-

''वह देश जो इस समुद्र के उत्तर में तथा बर्फीले पहाड़ों के दक्षिण में स्थित हैं, भारत कहलाता है, क्योंकि वहाँ पर राजा भरत के वंशज रहते थे। इसका विस्तार नौ हजार लीग है (एक लीग में 3 मील की दूरी होती है) और यह कर्म-भूमि है जिसके फलसवरूप मनुष्य स्वर्ग को जाता है और मोक्ष प्राप्त करता है।''

भारत की प्रशंसा चार कारणों से की गई है–

1. इस पृथ्वी पर भारत जैसा कोई अन्य देश नहीं है।

2. भारत का स्थान स्वर्ग से ऊँचा तथा बढ़कर है, क्योंकि स्वर्ग के देवी-देवता भी भारत में ही जन्म लेना पसंद करते हैं।

3. भारत कर्म-भूमि है, अर्थात् इस पृथ्वी पर कर्म किया जा सकता है।

4. मानव-जीवन के सभी फलों के बीज भारत की मिट्टी में मौजूद है।

भारत एक कर्म-भूमि है और स्वर्ग भोग-भूमि है, यह बात अनेक विद्वानों ने स्पष्ट रूप से वर्णित की है–

पृथिव्यां भारतं वर्ष कर्म भूमिरूदाहता। (ब्रह्म पुराण, 27.2)

देहं लब्ध्वा विवेकाढ्यं द्विजत्वं च विशेषतः।
तत्रापि भारते वर्षे कर्मभूमौ सुदुर्लभम (अध्यात्म रामायण, 6.5.51)

न तत्रापि भारतं वर्ष कर्मक्षेत्रमुशंति ह।
(देवी भगवत गीता, 8.7.34)

प्रयाति कर्म भूर्ब्रह्मन नान्यलोकेषु विद्यते। (मार्कन्डेय 57.62)

भारतं नाम यद्वर्षं दक्षिणेना मयोदितम्।
तत कर्मभूमिर्नान्यत्र संप्राप्तिः पुष्यसपापयोः।
एतत प्रधानं विज्ञेयं यत्र सर्व प्रतिष्ठितम।
(मार्कन्डेय पुराण 55, 21-22)

जाम्बये भारतं वर्ष तीर्थ त्रैलोक्यविश्रुतम।
कर्मभूमिर्यतः पुत्र तस्मात तीर्थ तदृचयते।।
(ब्रह्म पुराण, 70.21)

अभिजितं संपूतिजं यस्माद भारतं बहु पुण्यदम।
कर्म भूमिरतो देवैवर्ष तस्मात्प्रकीर्तितम।।

(ब्रह्म पुराण, 79.24)

साधू, सन्यासी एवं ऋषियों ने भारतवर्ष को कर्मभूमि घोषित किया, क्योंकि यहाँ मनुष्य को कर्म-फल प्राप्त हो सकता है। ज्योतिष का मूल आधार ही कर्म एवं कर्मफल हैं। जिन विद्वानों ने भारत को कर्मभूमि घोषित किया, उन्होंने कर्म व कर्मफल के बारे में कुछ नियम भी बताए। इस प्रकार इन ऋषि मुनियों ने ज्योतिषशास्त्र का विकास किया।

सैकड़ों ऋषियों-मुनियों की सैकड़ों सालों की तपस्या एवं साधना-मनन के फलस्वरूप ही भारतवर्ष का विकास एक कर्मभूमि के रूप में हुआ है। ये महापुरुष बहुत बुद्धिमान तथा भविष्य दृष्टा थे। इन ही महान् विभूतियों ने "कारण और फल" की एक संतुलित विचारधारा बनाई जो गहन होते हुए भी स्पष्ट थी। इसमें बताया गया था कि कारण प्रत्यक्ष भी हो सकते हैं और अप्रत्यक्ष भी। इसी प्रकार अच्छे और बुरे कर्मों के आधार पर कार्मिक प्रतिफल पाने की विचारधारा बनाई गई। यह विचारधारा कैसे काम करती है, और इसका क्या उपभोग है, यही बात इसी वेदांग में जिसे हम ज्योतिष कहते हैं, बताई गई है।

संक्षेप में, हमने इस पाठ में यह देखा कि-

1. वेद हमारी प्राचीन धरोहर हैं। ज्योतिष शास्त्र वेदों का ही एक अंग है।

2. पुराणों में ज्योतिष का क्रमिक अविर्भाव विस्तारपूर्वक बताया गया है। ज्योतिष शास्त्र का आविर्भाव भारतवर्ष में हुआ, क्योंकि

(क) भारतवर्ष को कर्म-भूमि माना गया है, जहाँ पर मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। मानव कर्म करने में स्वतंत्र है और अपने कर्मों द्वारा, अपने प्रारब्ध में प्राप्त दुखों को कम कर सकता है तथा अपना भविष्य में भी सुधार सकता है।

(ख) इसे कर्म-भूमि बनाने के लिए हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने विशेष तप किये थे।

(ग) वातावरण के साथ अपने कर्मों का संचालन करना, शारीरिक एव मानसिक दोनों प्रकार से, और कर्मों के फलस्वरूप कर्मफल प्राप्त करना ही ज्योतिष है, जिसे वेदांग भी कहा गया है।

चार वेद–

1. ऋग
2. यजुः
3. साम
4. अथर्व

छह वेदांग–

1. शिक्षा (शुद्ध आचरण)
2. कल्प (कर्म आधारित विद्या)
3. व्याकरण (शब्द अनुशासन)
4. निरूक्त (कारण सहित शब्दार्थ)
5. छंद (लय के अनुसार)
6. ज्योतिष (छिपी सम्भावनाओं व घटनाओं पर प्रकाश बिम्ब डालना)

श्रीमद भागवत से

भिन्न-भिन्न ग्रहों की स्थिति

भगवान सूर्य सम्पूर्ण लोकों की आत्मा हैं। वे पृथ्वी और द्युलोक के मध्य में स्थित आकाशमण्डल के भीतर कालचक्र मे स्थित होकर बारह मासों को भोगते हैं, जो सम्वत्सर के अवयव हैं और मेष आदि राशियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से प्रत्येक मास चन्द्रमान से शुक्ल और कृष्ण दो पक्ष का, पितृ भाव से एक रात और एक दिन तथा सौरमान से सवा दो नक्षत्र का बताया जाता है।

सूर्य की किरणों से एक लाख योजन ऊपर चंद्रमा है। उनकी चाल बहुत तेज है, इसलिए वे सब नक्षत्रों से आगे रहते हैं। ये सूर्य के एक वर्ष के मार्ग को एक मास में, एक मास के मार्ग को सवा दो दिन में और एक पक्ष के मार्ग को एक ही दिन में तय कर लेते हैं। ये कृष्ण पक्ष में

क्षीण होती हुई कलाओं से पितृगण के और शुक्ल पक्ष में बढ़ती हुई कलाओं से देवताओं के दिन-रात का विभाग करते हैं तथा तीस-तीस मुहूर्तों में एक-एक नक्षत्र को पार करते हैं। अन्नमय और अमृतमय होने के कारण यह ही समस्त जीवों के प्राण और जीवन हैं।

चंद्रमा से तीन लाख योजन ऊपर अभिजीत के सहित अठाईस नक्षत्र हैं। भगवान ने इनहें कालचक्र में नियुक्त कर रखा है, अतः यह मेरू को दायीं ओर रख कर घूमते रहते हैं। इन से दो लाख योजन ऊपर शुक्र दिखाई देते हैं। ये वर्षा करने वाले ग्रह हैं, इसलिए लोकों को प्रायः सर्वदा ही अनुकूल रहते हैं।

शुक्र के अनुसार ही बुध की गति भी समझ लेनी चाहिए। ये चंद्रमा के पुत्र बुध शुक्र से दो लाख योजन ऊपर हैं। ये प्रायः मंगलकारी ही हैं; किन्तु जब सूर्य की गति का उल्लंघन करके चलते हैं, तब बहुत अधिक आँधी, बादल और सूखे के भय की सूचना देते हैं। इनसे दो लाख योजन ऊपर मंगल है। वे यदि वक्र गति से न चलें तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्षों में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं। ये अशुभ ग्रह हैं और प्रायः अमंगल के सूचक हैं। इनके ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर भगवान बृहस्पति हैं। ये यदि वक्र गति से न चलें तो एक-एक राशि को एक-एक वर्ष में भोगते हैं।

बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर शनैश्चर दिखाई देते हैं। ये तीस-तीस महीने तक एक-एक राशि में रहते हैं। अतः इन्हें सब राशियों को पार करने में तीस वर्ष लग जाते हैं। ये प्रायः सभी के लिए अशान्तिकारक हैं। इनके ऊपर ग्यारह लाख योजन की दूरी पर सप्तर्षि दिखाई देते हैं। ये सब लोकों की मंगल कामना करते हुए भगवान विष्णु के परमपद ध्रुवलोक की प्रदक्षिणा किया करते हैं।

सप्तर्षियों से तेरह लाख योजन पर ध्रुव लोक है। इसे भगवान विष्णु का परम पद कहते हैं। यहाँ उत्तानपाद के पुत्र परम भगवद्भक्त ध्रुव जी विराजमान हैं।

नव ग्रहों का स्वरूप

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्चद्विभुजः स्यात सदा रविः।।
श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी।।
रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः।।
पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः।।
दैवदैत्यगुरु तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्र कमण्डलू।।
इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाण बाणासनधरः कर्तव्योऽर्क सुतस्तथा।।
करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते।।
धूम्रद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

अनुवाद—

सूर्यदेव की दो भुजाएँ निर्दिष्ट हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं, उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं। उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की सी है और वे सात घोड़ों तथा सात रस्सियों से जुते रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

चंद्रमा गौरवपूर्ण, श्वेत वस्त्र और श्वेत अश्वयुक्त हैं। उनका वाहन श्वेत अश्वयुक्त रथ है। उनके दोनों हाथ में गदा और वरदमुद्रा से युक्त होने चाहिए।

धरणीनन्दन मंगल की चार भुजाएँ हैं। उनके शरीर के रोएँ लाल हैं, वे लाल रंग की पुष्प माला और वस्त्र धारण करते हैं। उनके चारों हाथ क्रमशः शक्ति, त्रिशूल, गदा एवं वरमुद्रा से सुशोभित रहते हैं।

बुध पीले रंग की पुष्पमाला और वस्त्र धारण करते हैं। उनकी शरीर कान्ति कनेर की पुष्प-सरीखी है। वे भी चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वर मुद्रा धारण किये रहते हैं।

देवताओं और देत्यों के गुरु बृहस्पति और शुक्र की प्रतिमाएँ क्रमशः पीत और श्वेत वर्ण की करनी चाहिये। उनकी चार भुजाएँ हैं, जिनमें वे दण्ड, रूद्राक्ष की माला, कमण्डलु और वरमुद्रा धारण किये हुए हैं।

श्नैश्चर की शरीर कान्ति इन्द्रनीलमणिकी-सी है। वे गीध पर सवार होते हैं और हाथ में धनुष बाण, त्रिशूल और वर मुद्रा धारण किये रहते हैं।

राहु का मुख भयंकर है। उनके हाथों में तलवार, ढ़ाल, त्रिशूल और वर मुद्रा शोभ पाती है। वे नीले रंग के सिंहासन पर आसीन रहते हैं। ध्यान (प्रतिमा) में ऐसे ही राहू प्रशस्त माने गये हैं।

केतु बहुतेरे हैं। उन सभी की दो भुजायें हैं, उनके शरीर आदि धुम्रवर्ण के हैं। उनके मुख विकृत हैं। वे दोनों हाथों में गदा एवं वर मुद्रा धारण किये हैं। नित्य गीध पर समासीन रहते हैं। (मत्स्यपुराण)

पंचांग श्रवण का माहात्म्य

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
यत्रैतत्पञ्चकं स्पष्टं पञ्चाङ्गं तन्निगद्यते।।
जानाति काले पञ्चाङ्गं तस्य पापं न विद्यते।
तिथेस्तु श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्धनम्।।
नक्षत्राद्धरेत पापं योगाद्रोगनिवारणम्।
करणात्कार्यसिद्धिः स्यातपञ्चाङ्गफलमुच्यते।।
पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्।

तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण—इन पाँचों का जिसमें स्पष्ट मानादि रहता है, उसे पंचांग कहते हैं। जो यथा समय पंचांग का ज्ञान रखता है, उसे पाप स्पर्श नहीं कर सकता। तिथि का श्रवण करने से श्री की प्राप्ति होती है, वार के श्रवण से आयु की वृद्धि होती है, नक्षत्र श्रवण पाप को नष्ट करता है, योग के श्रवण से रोग का निवारक होता है और करण के श्रवण से कार्य की सिद्धि होती है।

यह पंचांग फल कहा गया है। इसे सुनने से गंगास्नान का फल प्राप्त होता है।

ज्योतिष शास्त्र के षडंग

जातक गोल निमित्त प्रश्न मुहूर्त्तारव्यगणितनामानि
अभिदधतीह षडङ्गान्याचार्या ज्योतिषे महाशास्त्रे।।

(प्रश्न मार्ग)

जातक, गोल (x), शकुन, प्रश्न, मुहूर्त और गणित—ये मुख्यतः छ अंग माने गये हैं। यह भी स्कन्धत्रय (सिद्धांत, होरा तथा संहिता) के अन्तर्गत ही आते हैं।

नोट—(x) गोल एक प्रकार का क्षेत्र विशेष है जिसमें आकाशीय ग्रहस्थिति का प्रत्याभास करके ग्रहगणित को समझा जाता है।

चंद्रमा, सूर्य तथा आयु

आयु की सूक्ष्म गणना करना व्यर्थ किंवा सुमूर्खता है। स्थूल रूप से दीर्घायु, मध्यायु तथा अल्पायु का ज्ञान ही पर्याप्त है। तन्यका परिमापन करने से क्या लाभ? विषाद से आयु क्षीण होती है, प्रसाद से आयु बढ़ती है। विषाद एवं प्रसाद का वास स्थान मन है। ''चन्द्रमा मनंसा जातः' (अथर्व 19/6/7) मन से स्थूल शरीर प्रभावित होता है। स्थूल शरीर या लग्न का कारक सूर्य है। सूर्य आत्मा (शरीर प्राण है) कथन है—'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चा' (यजु. 13/46) इसलिए कुण्डली में चंद्रमा एवं सूर्य की स्थिति एवं बल का आकलन कर आयु की ऊहा करनी चाहिए। पांराशर के अनुसार (कलियुग में मनुष्य की सामान्य आयु 120 वर्ष है। प्रत्येक ग्रह एक निश्चित आयु देता है। सूर्य-6, चंद्रमा-10, मंगल-7, राहु-18, गुरु-16, शनि-19, बुध-17, केतु-7, शुक्र-20 वर्ष है।

यात्रा मुहूर्त/प्रस्थान विचार

दिशाशूल—

सोम शनीचर पूरब न चालू। मंगल बुध उत्तर दिशि काले।।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहीं पाये।।
बीफे दक्खिन करै पयान।। फिर नहीं समझे ताको आन

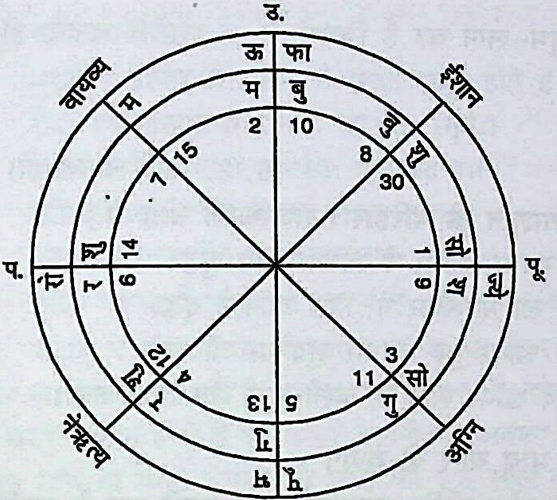

आठों दिशाओं तथा उनके नक्षत्र-शूल, दिशाशूल तथा तिथि शूल उपरोक्त चक्र से शीघ्र पता लगता है। दिशा के नीचे पहले नक्षत्र का नाम, फिर वार तथा अन्त में नीचे तिथियों को दिखाया गया है। इन परिस्थितियों में इन दिशाओं में योगिनी का वास होता है। इस ओर जाने से योगिनी सम्मुख होगी। सन्मुख और दाहिनी योगिनी अशुभ होती है।

समयशूल—उषा काल पूरब को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्धरात्रि में उत्तर को और मध्याहं काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

दक्षिण यात्रा का निषेध—कुंभ तथा मीन के चंद्रमा में अर्थात् पंचक में दक्षिण कदापि न जाय।

शुभ चंद्रमा (यात्रा में)

पूर्व की यात्रा—मेष सिंह तथा धनु = अग्नि तत्त्व

पश्चिम में—तुला, मिथुन और कुंभ = वायु तत्त्व

उत्तर में—कर्क, वृश्चिक तथा मीन = जल तत्त्व

दक्षिण में—वृष, कन्या, तथा मकर = पृथ्वी तत्त्व

यात्रा में चंद्रमा संमुख तथा दाहिने शुभ होता है।

पीछे होने से मरण तुल्य कष्ट और बांई ओर होने से धन हानि।

शुभ लग्न—कुंभ लग्न व कुंभ नवांश में यात्रा कदापि न करें।

शुभ—लग्न वह है जिसमें 1, 4, 8, 9 स्थानों में शुभ ग्रह हों।
3, 6, 11 स्थानों में पाप ग्रह हों।

अशुभ–लग्न वह है जिसमें 1, 6, 12 वें चन्द्रमा हो।
10 वें शनि।
7 वें शुक्र।
6, 8, 12वें लग्नेश हो।

दिशाशूल के परिहार (राजस्थानी दोहे में)

घी खायर इतवार ने सोमवार पय शुद्ध।
गुढ़ खा मंगलवार ने, तिल खाय रे बुद्ध।
दही खायर गुरु ने, अर शुक्रवार जौ खाय।
उड़द खायर शनि ने, चलो शूल दोष मिट जाय।।

नक्षत्र से मृत्यु योग के वर्णन

उषा सोम दीति अनुराधा बुधाशिवनी गुरु ने मृगसिरा।
भौम शतमिषा मौत योग है शुक्रा अखलेखा हस्त शनिवार।।

सोमवार को उ. आषाढ़ रविार के अनुराधा, बुधवार के अश्विनी, गुरुवार को मृगशिरा, मंगल को शतभिषा, शुक्रवार को अश्लेषा और शनिवार के हस्त नक्षत्र हो तो मृत्यु योग होता है। इन वारों व नक्षत्रों में शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।)

मीन, शनि, भौम तुल, कर्क बृहस्पति, होय
डंक कहवे सुण भड्डली विरला जीवे कोय।।

(मीन राशि में शनि गोचर करता हो, तुला में मंगल तथा कर्क राशि में गुरु गोचर करता है तो डंक कवि ने भड्डली नामक कन्या को कहा कि संसार में ऐसे समय में कोई बिरला ही जीता है। अर्थात् प्रचुर मात्रा में नर संहार होता है।

दिशाशूल के उपाय (कवि जायसी द्वारा)

अवसि चला चौहे जौ कोई। औषद कहौं, रोग नहीं होई।।
मंगल चलत मेल मुख धनिया। चलत सोम देखे दरपनिया।।
सूकंहि चलत मेल मुख राई। बीफे चले दखिन गुड़ खाई।।
अदित ताँवोल मेलि मुख मंडे। बायबिरंग शनीचर खंडे।।
बुद्धहि दहि चलहु करि योजन। औषद इहै और नहिं खोजन।।

मुहूर्त की उपयोगिता

मुहूर्त माने दो घटी। दिन में पन्द्रह मुहूर्त होते हैं–

रौद्रः श्वेतश्च मैत्रश्च तथा सारघटः स्मृतः।
सावित्रो वैश्वदेवश्च गार्न्धवः कुतपस्तथा।।
रोहिणस्तिलकश्चैव विजयो नैर्ऋतस्तथा।
शम्बरो वारुणश्चैव भगः पञ्चदशः स्मृतः।।

इसमें ग्यारहवाँ मुहुर्त जो विजय है उसी को 'विन्द' कहते हैं।

जटायु ने श्री रामचंद्र जी को कहा था कि जिस मुहूर्त में रावण ने सीता का अपहरण किया है, उसका नाम 'विन्द' है। इस मुहूर्त में जो कुछ भी वस्तु अपहृत होती है वह उसके स्वामी को अवश्य मिलती है। उसका वचन सत्य हो गया। भगवान ने सीता को एक साल के अन्दर ही प्राप्त कर लिया था।

नक्षत्र सूची कौन है?

अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते दूस पंक्तिपूषकः पापी ज्ञेयो नक्षत्र सूचकः।

(जो पुरुष ज्योतिष शास्त्र को जाने बिना दैवज्ञ बन जाय उस पापात्मा को पंक्तिदूषक को नक्षत्र सूची जानना चाहिए।)

तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैव साधनम्।
परवाक्येन वर्तेन्ते ते वै नक्षत्र सूचकाः

(तिथि की उत्पत्ति को नहीं जानते, ग्रहों के साधन का जिन्हें ज्ञान नहीं है, केवल दूसरों के कहे–सुने के अनुसार व्यवहार करते हैं वे नक्षत्र सूचक होते हैं।)

गृहे गृहे गत्वाप्टष्ट एष नक्षत्राण्यशिवन्यादीनि शुभाशुभ फलसूचकानि सूचयातीति नक्षत्र सूची।

जो घर–घर जाकर बिना किसी के पूछे ही–शुभाशुभ फल को बताने लगता है वह नक्षत्र सूची कहलाता है।

□□□

अध्याय 2

पर्वसु द्विगुणं दानमृतौ दशगुणं भवेत् ॥24॥
अयने विषुवे चैव षडशीति मुखेषु च
चंद्रसूर्योपरागे चं दत्तमक्षयमुच्यते ॥25॥

(महाभारत बनपर्व अ. 200)

(पर्व-दिनों में, अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा के दिन दिया गया दान पुण्य उत्पन्न करता है; ऋतु के आरंभ में दिया गया दान दस-गुना पुण्य उत्पन्न करता है। उत्तरायण, दक्षिणायन और विषुवों पर, तथा षडशीतिमुखो और चंद्र तथा सूर्य के ग्रहणों पर दिया गया दान अक्षय कहा जाता है।)

ज्योतिष की तार्किकता

ज्योतिष शांति प्रदायक

हमारी प्राचीन सभ्यता के बारे में लिखे लेखों से हमारे पूर्वजों की विचारधारा का एवं उनके भविष्य दृष्टा होने का पता चलता है। उन्होंने हमारे मनन के लिए ये विचार रखे–

(क) प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों के अधीन रहता है। उसे कर्म अवश्य करना है और यही उसका जीवन है।

(ख) प्रत्येक कर्म का प्रतिफल होता है। यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत हैं वैदिक विचारधारा यह बताती है कि कर्म और उसका प्रतिफल एक साथ कार्य नहीं करते हैं जैसा कि हम स्थूल रूप से देखते हैं। किसी भी कर्म का प्रतिफल सोया रह सकता है और बाद में कभी भी उभर कर सामने आ सकता हैं, यह एक सुविचारित तथ्य हैं। *कर्म और कर्मफल का यह लचीला सिद्धांत ही ज्योतिष का सार है।*

(ग) प्रत्येक मनुष्य को अपना भविष्य जानने की बहुत उत्कंठा रहती है। परंतु एक क्षण-भंगुर व्यक्ति अपनी अज्ञानतावश इसको कैसे जान व समझ सकता है, अतः कर्मफल के इस गुप्त रहस्य को जानने के लिए उसको इस दैवीय अर्थात् ज्योतिषीय विचारधारा का सहारा लेना ही पड़ता है।

(घ) मनुष्य जीवन का सार शांतिपूर्वक जीवन-व्यतीत करने में है। मनुष्य अपने आसपास के वातावरण में, अपने व्यवसाय में, अपनी इच्छाओं व संकल्पों की पूर्ति के बारे में अपने परिवार में, शांति पूर्वक रहकर ही सार्थक जीवन व्यतीत कर सकता है। ज्योतिष शास्त्र वह विज्ञान है जो प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत करने में सहायक होता है।

ज्योतिष शास्त्र में कर्म बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। क्योंकि पिछले जन्मों में किए गए कर्मफलों के आधार पर ही इस जन्म में प्रारब्ध बनता है जो ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्रकाशमान होता है। इसलिए इसको वेदांग कहते हैं। भारतवर्ष को कर्म-भूमि घोषित किया गया था; जहाँ कर्मफल सदैव उपलब्ध रहता है। यहाँ का मानव भोग में लिप्त होता हुआ भी सुकर्म नहीं छोड़ता था।

भारतवर्ष वह कर्मभूमि है जो तपस्या एवं मनन के द्वारा विकसित और पवित्र हुई। सारे संसार में यही केवल एक ऐसा देश है जहाँ की सारी जनसंख्या कभी न कभी समय निकालकर तीर्थ करने अवश्य जाती है। शिवपुराण में बताया गया है कि किसी न किसी नदी में किसी विशेष दिनों में स्नान करने से नक्षत्रों के प्रभाव से अद्भुत घटनाएँ घटित हो सकती हैं। जब सूर्य व वृहस्पति एक राशि में मिलते हैं तब उसे विशेष मांगलिक अवसर माना जाता है। जब ये दोनों ग्रह मकर राशि में मिलते तब जनता को हरिद्वार में गंगा-स्नान करने के निर्देश दिए जाते हैं। *हरिद्वार में कुंभ 1997 में मनाया गया था। समुद्र मंथन से अमृत कुंभ के प्राप्त होने पर असुर उसे छीनने के लिए देवताओं पर टूट पड़े। इन्द्र का पुत्र जयन्त उस अमृत कलश को लेकर भाग निकला। दैत्य उसके पीछे दौड़े। यह भाग दौड़ 12 दिवस तक (मानुष 12 वर्ष) तक चलती रही, इन दिव्य 12 दिनों*

में चार स्थानों पर चार बार दैत्यों ने जयन्त को पकड़ा और अमृत कुंभ को छीनना चाहा। सूर्य ने घटकों फूटने से, चंद्रमा ने अमृत को गिरने से तथा बृहस्पति ने जयन्त का साथ देकर चारों स्थानों पर रक्षा की। परन्तु फिर भी इन चारों स्थानों पर अमृत की कुछ बूँदें गिरीं, इसलिए यह चारों स्थान प्रयाग, हरिद्वार, गोदावरी (नासिक) तथा अवन्तिका (उज्जैन) का कुंभ महापर्व से संबंध बना हुआ है। उसी स्थिति में जब सूर्य, चंद्र तथा गुरु जब भी आते हैं इन चारों स्थानों पर बारी-बारी कुंभ पर्व मनाया जाता है। प्रत्येक तीसरे वर्ष क्रम से यह पर्व मनाया जाता है।

सन् 2001 में प्रयाग कुभांवसर पर बृहस्पति वृष राशि में थे और सूर्यदेव 14 जनवरी 2001 मकर में प्रवेश किया और स्नान प्रारम्भ हो गये। लाखों की संख्या में संत समागम पूरे माघ मास में रहा जिसे कल्पवास कहते हैं। मकर संक्रांति के दिन गंगासागर का मेला भी होता है। द्वितीय स्नान 19 जनवरी को एकादशी का, तृतीय स्नान 24 जनवरी को मुख्य स्नान माघकृष्ण 30 (अमावस्या) जिसे मौनी अमावस्य कहते हैं, चतुर्थ स्नान 29 जनवरी को वसंत पंचमी का, पंचम स्नान, अंचला सप्तमी का 1 फरवरी को, षष्ठ स्नान 4 फरवरी एकादशी का तथा सप्तम स्नान 8 फरवरी 2001 को माघ शुक्ल पूर्णिमा का था।

प्रत्येक तीन वर्ष बाद अर्ध कुंभ के रूप में यह पर्व हर स्थान पर मनाया जाता है। परन्तु प्रत्येक 12 वर्षों के बाद पुनः उस ही स्थान पर पूर्ण कुंभ का पर्व मनाया जाता है। प्रयाग का कुंभ भी पुनः 12 वर्षों के बाद 2013 में आया। इसी प्रकार जब बृहस्पति और सूर्य सिंह राशि में मिलते हैं तब जनता को गोदावरी नदी में स्नान करने को कहा जाता है। यह योजना बहुत सोच विचार करने के बाद बनाई गई थी, ताकि देश के विभिन्न भागों के व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित होकर ग्रुपों (संगठों) में एक साथ पूजा अर्चना कर सकें और अच्छे कर्मों को सामाजिक मान्यता दे सकें। *श्री भगवान आदि शंकराचार्य जी महाराज जब अपने विरोधियों को परास्त करने के लिए भारत भ्रमण कर रहे थे और उनके शिष्य मण्डली दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही थी, तो उन्होंने उन लाखों उत्साही शिष्यों को आज्ञा दी कि तुम सब लोग देश के कोने-कोने में पहुँचकर धर्म प्रचार का कार्य सम्पन्न करो।*

शिष्यों के प्रश्न करने पर कि हम श्री चरणों का साक्षात्कार फिर कब कैसे और कहाँ कर सकेंगे, के उत्तर में स्वामी जी ने प्रति तीसरे वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, गोदावरी तथा उज्जैन के कुंभ पर्वों पर एकत्रित होने की अनुमति प्रदान की। इसीलिए लाखों की संख्या में विद्वान, सन्यासी व भक्तगण पूरे मास कल्पवास कर इस अवसर का लाभ उठाते हैं। इसलिए भारत को एक विशेष कर्म भूमि का दर्जा दिया गया है। यहाँ पर कोई भी व्यक्ति निस्वार्थ भाव से मन लगाकर कार्य कर सकता है और अपनी एवं राष्ट्र की उन्नति भी कर सकता है। इस प्रकार उसमें जागृति आती है और देश के अन्य भागों से आए व्यक्ति उसकी हंसी नहीं उड़ाते, वरन् उसका उत्साह बढ़ाते हैं। ऐसा करने के लिए, अर्थात् आत्म उन्नति की ओर अग्रसर होने के लिए और सिद्धि प्राप्त करने की ओर पहला कदम उठाने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छाओं का मेल अपनी योग्यताओं से करना होता है। यही ज्योतिष की तार्किकता है, अर्थात् सार है। यही बात कर्म के बारे में सभी तर्कों का आधार है। प्रत्येक जन्मपत्री में कर्मफल अनेक भावों के ग्रहों की स्थिति देखकर, विशेषत: 10वें भाव की स्थिति देखकर बताया जाता है। 10वें भाव को कर्म-भाव कहा गया है।

आइए अब हम एक कुण्डली का परीक्षण करें और यह देखें कि कोई व्यक्ति अपनी इच्छाओं का मेल अपनी योग्यताओं से कैसे करता है और उन्नति की ओर अग्रसर कैसे होता है।

यह कुण्डली आइज़न हावर की है। इन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में 'ओवर लार्ड' आपरेशन के लिए एक ही स्थान पर अब तक सबसे बड़ी संख्या में तैनात, लगभग तीस लाख, सैनिकों का संचालन किया। मित्र राष्ट्रों का यह हमला यूरोप में किया गया था, जिसके फलस्वरूप जर्मन राष्ट्र ने आत्मसमर्पण किया जो 7 मई, 1945 को श्री आइज़न हावर द्वारा स्वीकार किया गया था। बाद में वे अमेरिकन सेना के चीफ बने और उसके बाद 1952 व 1956 में दो बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए।

जन्मतिथि-अक्टूबर 14, 1890

समय-5:15 सायं/स्थानीय

जन्मस्थान-37°-45′ उ., 96°-32′ पू.

अयनाँश-20°-52′

राहू महादशा भोग्य 7 वर्ष 10 मास 6 दिन।

लग्न		राहु	
	राशि		
बृह.			शनि
मंगल	शुक्र केतु	सूर्य चन्द्रमा	बुध

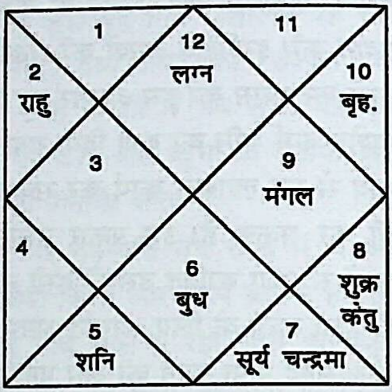

लग्न केतु		बृह बुध	
चन्द्रमा	नवमांश		
शुक्र	मंगल	शनि सूर्य	राहु

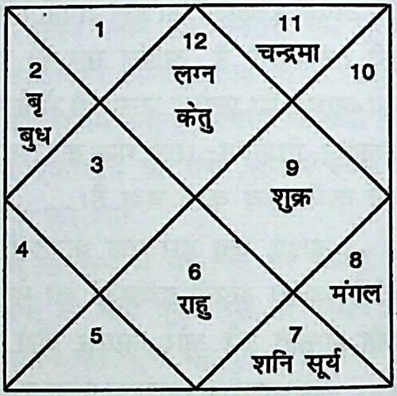

सांसारिक बोलचाल की भाषा में इन्होंने अपना सर्वोच्च ध्येय प्राप्त किया। आइए अब हम उनकी कुण्डली देखें कि यह सब कैसे संभव हुआ इनकी कुण्डली में शक्ति भरी पड़ी है। ज्योतिष प्रवीण की कक्षा में ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए इस समय केवल यह जानना पर्याप्त रहेगा कि इस कुंडली में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य शक्ति देने वाले ग्रह किस-किस स्थान पर बैठे हैं।

(क) वर्गोत्तम लग्न और सूर्य। (राशि चक्र तथा नवांश में लग्न एक ही मीन राशि में है)

(ख) शक्तिशाली मंगल ग्रह, 10वें स्थान पर दिग्बली।

(ग) आठ ग्रह लगातार एक के बाद एक स्थान पर, छठे से ग्यारहवें भाव तक, बैठे हैं। (जो एक प्रकार का माला योग बना रहे हैं)

(घ) सबसे अधिक ग्रह 7वें स्थान के बाद हैं।

(ङ) 5वें से 9वें स्थानों के स्वामी आगे-आगे बढ़ रहे हैं अर्थात् 5वें भाव का स्वामी 8वें में बैठा है, 7वें भाव का स्वामी 7वें भाव में है, 8वें भाव का स्वामी 9वें घर में है; 9वें भाव का स्वामी 10वें भाव में है, और 10वें भाव का स्वामी 11वें घर में है। इसका परिणाम यह निकला कि यह व्यक्ति लगातार उन्नति की ओर अग्रसर होता चला गया।

(च) यहाँ पर दो विपरीत राजयोग हैं। (षष्ठेश अष्टम में तथा द्वादशेश षष्ठ भाव में)

(छ) गजकेसरी योग। (गुरु तथा चंद्रमा परस्पर केन्द्र में हैं)

(ज) नीच भंग राजयोग

(झ) बेसी योग/वोसी योग

(ट) सुनफा योग/अनफा

(ठ) दुर्धरा योग

मंगल दूसरे व 9वें भाव का स्वामी 10वें भाव में है। मंगल 10वें भाव में होने के कारण दिग्बली है। दसवां भाव कर्म-भाव का होता है। मंगल 10वें भाव में होने से यह व्यक्ति सेना में कमांडर बन गया (जातक तत्त्व, 7वां विवेक, 11वां श्लोक) आइज़न हावर के परिवार में कोई व्यक्ति कभी सेना में भरती नहीं हुआ, परन्तु इसने सेना में भरती होने की ठानी और अपनी जीवन-वृत्ति यहीं से आरंभ की।

अब आप देखिए, यह व्यक्ति कैसे उन्नति की ओर अग्रसर होता गया। जन्म के समय राहू की दशा चल रही थी और उसके 7 वर्ष 10 माह 6 दिन बाकी रहे थे। इसके बाद बृहस्पति की दशा आई। यह 10वें भाव का स्वामी होकर 11वें भाव में दुर्बल होकर बैठा है। यह दुर्बलता आरम्भ में साधारण प्रवृत्ति दर्शाती हैं पर इसके समाप्त होने पर अद्भुत उन्नति के योग बनते हैं। गुरु वर्गोत्तम होने से भी बलवान है। नवांश में भी गज·केसरी योग बना रहा है। फिर शनि की दशा आरम्भ होती है। 11वें और 12वें

भाव का स्वामी छठे स्थान पर बैठा है, जब द्वादशेश छठे भाव में बैठा हो तो इससे विपरीत राजयोग (विमल योग) बनता है, इसका अर्थ है इनके व्यवसाय में उन्नति होगी। अभी क्रमशः तैयारी का समय चल रहा है। यद्यपि यह कुण्डली बहुत अधिक शक्तिशाली है, फिर भी 45 वर्ष की आयु तक यह व्यक्ति किसी विशेष पद पर नहीं पहुँच पाता है। सन् 1935 तक वह केवल एक निम्नस्तर के पद मेजर तक पहुँच सका। इन 45 वर्षों में उसकी इच्छाएँ बढ़ती रहती हैं क्योंकि उसकी कुंडली बहुत अधिक शक्तिशाली है, परन्तु उसके द्वारा लिए गए निर्णय उसे क्षति पहुँचा सकते हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की थी कि वह अपनी ऊँची उड़ती हुई इच्छाओं पर नियंत्रण रखे और शांतिपूर्वक धीरे-धीरे उन्नति की ओर अग्रसर होता रहे। क्योंकि उसके ग्रहों की दशा उसे धीरे-धीरे उन्नति की ओर ले जाना चाहती है। यह उसकी परीक्षा का समय है, क्योंकि शनि बहुत बुद्धिमान एवं सबसे कठोरता से काम लेने वाला ग्रह है। इसी समय के दौरान परीक्षा के बाद ही यह व्यक्ति बुध ग्रह की दशा में भ्रमकारक पेचीदे प्रश्नों का डटकर मुकाबला करता रहा। उच्च के बुध ग्रह ने ही अंत में इसे ऊँचे पद पर बैठाकर इसकी उन्नति की। सप्तमेश सप्तम भाव में बैठा है तो यह भद्र महापुरुष योग कहलाता है। बुध-मंगल के योग से उसने सबसे बड़ी सेना का नियंत्रण संभाला और उन बीसियों कमांडरों के ऊपर पदोन्नति पाई जो उससे काफी पहले से कमांडर के पद पर कार्य कर रहे थे। मंगल दूसरे भाव का स्वामी है, लग्न से भी और चन्द्रमा से भी। जब इसका संयोग बुध के साथ हो जाता है, और बुध बाणी का कारक है, इसी का प्रतिफल था कि सारे संसार के मनुष्य यह इंतजार कर रहे थे कि यह व्यक्ति कुछ बोले, और जब वह व्यक्ति बोला तो उसके प्रत्येक शब्द की सराहना की गई।

कर्मफल, 10वें स्थान अथवा कर्म-भाव से देखा जाता है। इस कुंडली में इस स्थान पर मंगल बैठा है जो उग्र ग्रह है और वह भी धनुराशि में बैठा है, जो स्वयं एक क्रूर राशि है। इसका परिणाम यह होता है कि इस व्यक्ति के व्यवसाय में चकाचौंध रूप से उन्नति होती है। दसवें भाव का स्वामी बृहस्पति है, यह ग्रह बृद्धि का परिचायक है। दसवें घर का मालिक

यह बृहस्पति, चन्द्रमा (5वें घर का मालिक) के साथ मिलकर गज केसरी योग बनता है। बृहस्पति की दृष्टि 5वें भाव (बुद्धि) और 7वें भाव (पदवी) की ओर है, इससे इस व्यक्ति ने अपना बुद्धिमत्ता एवं साहस (मंगल, 9वें भाव का स्वामी 10वें भाव में; तीसरे घर का स्वामी 9वें भाव में) के बल से सबसे ऊँची पदवी प्राप्त की। ऐसी कुंडलियाँ बहुत कम देखने में आती हैं और इनके कर्मफल भी अपूर्व, अत्यधिक भयंकर एवं चकाचौंध करने वाले होते हैं। कर्मफल को मंगल ग्रह की स्थिति से भी देखा जाता है, मंगल ग्रह ने सबसे ऊँचा स्थान ग्रहण कर रखा है। यह व्यक्ति अपने कर्मों के फलस्वरूप ही अपनी कुंडली की दशाओं के अनुसार सेना में भरती होता है और शांतिपूर्वक बुध की दशा आने तक इंतजार करता है। उच्च का बुध मंगल से दसवें भाव में तथा दसम में मंगल उसे खींच कर सबसे ऊँचे पद पर बैठा देता है जिससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल जाती है और उसके सम्मान में विशेष प्रकार के आयोजन किए जाते हैं। आठवां ग्रह जो पंक्ति में खड़ा था, इससे कम क्या कर सकता था।

यहाँ पर जो बात समझने की है, वह यह है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्म उसी हिसाब से करने चाहिए जैसे उसकी कुंडली उसे बताए। कभी ऐसे समय आते हैं जब आपके कार्य की प्रशंसा होती है, और कभी-कभी काफी मेहनत करने के बावजूद निराशा ही हाथ लगती है एवं मानसिक थकवाट भी होती है तथा कोई कार्य सही नहीं बैठता है। ज्योतिषशास्त्र का यही सार है कि आप अपना भविष्य पहले से मन में विचार.लें और आने वाले समय पर संतुलित रहकर कार्य करें; अच्छा समय आने पर न तो बहुत गर्व महसूस करें और न बुरा समय आने पर निराशा ही महसूस करें। जब आपको अपने ऊपर नियंत्रण रखना हो, तब किसी कार्य में जल्दबाजी न करें; अपने कार्यों को शांतिपूर्वक, करें और जब समय अच्छा चल रहा हो तो सारे कार्य पूरे जोश तथा होश के साथ पूरे करें। यही ज्योतिष की सार्थकता है।

□□□

ज्योतिष का परिचय

अध्याय 3

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोतमुक्तं निरूक्तं च कल्पः करौ।
या तु शिक्षास्य बेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः॥

(जिस प्रकार कोई प्राणी सावयव होने पर भी यदि नेत्रहीन है तो वह जीवन की सार्थकता को नहीं जान सकता, उसी प्रकार शिक्षा, कल्प निरूक्त, छन्दः और व्याकरण शास्त्र में निष्णात होने पर भी ज्योतिष शास्त्र से अपरिचित विद्वान उस नेत्रहीन प्राणी की भांति वैदिक कार्यों में सर्वथा अन्धा रहता है।)

ज्योतिष शास्त्र क्या है?

यद्यपि ज्योतिष को अंग्रेजी में ऐस्ट्रोलौजी (Astrology) कहते हैं, पर यह ज्योतिष शब्द का सही अनुवाद नहीं है। अंग्रेजी का ऐस्ट्रोलौजी (Astrology) शब्द ऐस्टर (Aster) एक नक्षत्र से लिया गया है; और (Logos) लोगस शब्द का अर्थ है कारण अथवा तर्क। चेम्बर्स की 20वीं सेन्चुरी (Century) डिक्शनरी में Astrology शब्द का अर्थ उस प्रकार दिया गया है–आरम्भ में इसका अर्थ था व्यावहारिक खगोल विद्या; अब यह शब्द केवल नक्षत्रों का मानव जीवन एवं पृथ्वी संबंधी सांसारिक मामलों पर प्रभाव की कला तथा विज्ञान बन कर रह गया है।

ज्योतिष के बारे में कहा गया है कि 'सूर्यादि ज्योतिषां ग्रहणां बोधक शास्त्रम्' अर्थात् वह ज्ञान जो ग्रहों की स्थिति एवं उनके भ्रमण और काल,

एवं उनका हम सब पर पड़ने वाले प्रभाव को बताता है, उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं।

यह भी कहा गया है कि यह ग्रहों के आकार एवं प्रभाव को ध्यान में रखकर व्यक्तियों तथा राष्ट्रों के लिए भूतकाल में घटित घटनाओं एवं भविष्य में होने वाली घटनाओं की खोज करने, उसका विश्लेषण करने का दर्शन अथवा तर्क शास्त्र है।

ज्योतिष शास्त्र के बारे में यह भी कहा गया है कि यह वह विज्ञान है जिससे ग्रहों के नियमित रूप से बदलते रहने, व्यक्तियों एवं राष्ट्रों के भाग्य एवं दुर्भाग्य, जल-प्रलय, भूकम्प प्लेग, ज्वालामुखी पर्वत लंबी, महामारी और अन्य पृथ्वी संबंधी सांसारिक मामलों के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। संस्कृत में इसे होरा शास्त्र भी कहते हैं जिसका अर्थ है वह विज्ञान जो समय के बारे में विस्तारपूर्वक विचार करता है। डॉ. बी. बी. रमन के अनुसार इसे ज्योतिष इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह शास्त्र ज्योति अर्थात् प्रकाश के ज्ञान के बारे में है, और यही प्रकाश सृष्टि में निर्माण की गई सभी प्रसिद्ध वस्तुओं का मूल कारण है।

लेकिन फिर भी उपर्युक्त सभी परिभाषाएँ इस विषय के बारे में सही कल्पना प्रतिपादित नहीं करती हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, एक स्थान पर डॉ. रमन ने कहा है कि ज्योतिष शास्त्र काल, दूरी और वस्तुओं को एक साथ मिलाकर देश, काल तथा पात्र को ध्यान में रखते हुए निश्चित नियम बताता है और यह भी बताता है कि किस समय कौन सी अचानक घटना हो सकती है, अथवा एक ही समय में कौन-कौन सी अनेक घटनाएँ हो सकती हैं।"

इस प्रकार यह स्पष्ट होगा कि ज्योतिषशास्त्र एक दैवीय विज्ञान है जो आकाश में ग्रहों की स्थिति बदलते रहने से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्थिति पर क्या-क्या परिवर्तन होते हैं; यह स्पष्ट करता है। ये परिवर्तन मनुष्यों, जानवरों तथा प्राणहीन वस्तुओं पर भी, उनकी प्रकृति के अनुसार हो सकते हैं। यह सिद्धि (अन्तिम परिणाम) पीढ़ियों दर पीढ़ियों के अनुभवों और कुछ विद्वानों के अनुसार हमारे पूर्वजों के अन्तर्ज्ञान से प्राप्त हुई है।

संक्षेप में ज्योतिष शास्त्र वह खगोल विद्या है जो सभी जीवों एवं प्राणहीन वस्तुओं जड़ व चेतन) पर लागू करके सांसारिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करने के लिए यथा संभव मार्गदर्शन एवं सहायता करती है और इसका अंतिम लक्ष्य आत्मिक शांति एवं मोक्ष प्राप्त कराना है। यह ज्योतिष शास्त्र के लिए हिन्दू विचारधारा है। पश्चिमी देशों के अनुसार यह शास्त्र केवल सांसारिक एवं शारीरिक सुखों तक सीमित रहता है।

ज्योतिष शास्त्र के विषय-यह कहा गया था कि ज्योतिष शास्त्र के तीन विषय हैं 'स्कन्धत्रय', अर्थात् सिद्धांत, होरा एवं संहिता।

1. **सिद्धान्त**—इसमें सूर्यादि, भचक्र एवं नक्षत्र आदि की स्थिति निश्चित करने का तरीका बताया गया है और उनकी गति में .कैसे-कैसे परिवर्तन होते रहते हैं यह बताया बया है। यह खगोल विद्या की शिक्षा देते हैं। इस बारे में पाँच सिद्धान्त प्रचलित हैं।

1. सूर्य सिद्धान्त
2. रोमक (लोमश) सिद्धांत
3. पौलिश सिद्धांत
4. वशिष्ठ सिद्धांत
5. पितामह सिद्धांत

इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर, जैसा कि समय-समय पर इनमें कुछ सुधार भी किए गए हैं सारे पंचाग, पत्रे, जन्त्री आदि बनाए जाते हैं।

2. होरा—आरम्भ में होरा शब्द 'अहोरात्र' था, जिसका अर्थ है रात-दिन। इसमें से 'अ' शब्द व अंतिम 'त्र' शब्द निकाले जाने से होरा रह गया, जिसका तात्पर्य है समय की गणना करना।

प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुंडली निर्भर करती है उसके जन्म की तिथि, समय व स्थान पर जिसका सम्बन्ध मानव के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से है। एक बार कुण्डली बन जाने के बाद उस मनुष्य के जीवन की सारी घटनाएँ देखी जा सकती हैं; अर्थात् उस मनुष्य का स्वभाव कैसा होगा, उसमें क्या-क्या विशेषताएँ होंगी, उसकी आयु कितनी होगी, उसका स्वास्थ्य कैसा रहेगा, अचानक दुर्घटना, उसकी वित्तीय स्थिति, विवाह, संतान

एवं कष्ट आदि सभी बातें बताई जा सकती हैं। ये परामर्श एक राजा हो या भिखारी, सभी के लिए लाभदायक होता हैं।

आजकल इसमें विशिष्ट क्षेत्रों में अलग-अलग प्रवीणता प्राप्त करने लगे हैं, जैसे, महिलाओं संबंधी ज्योतिष, चिकित्सा संबंधी ज्योतिष, व्यवसाय संबंधी ज्योतिष, वित्तीय संबंधी ज्योतिष, और मानवीय संबंधी जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक तथा व्यापार संबंधी ज्योतिष आदि।

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में घटनाओं की भविष्यवाणी अनेक निर्देशक प्रणालियों के अनुसार अर्थात् विशोंत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, कालचक्र, दशा प्रणाली आदि के अनुसार की जाती हैं। वास्तव में ऋषि पराशर ने 26 दशा प्रणालियाँ निहित की हैं।

पश्चिमी देशों में भविष्यवाणी (Progressed Horoscope) 'उन्नत की गई कुण्डली' के आधार पर की जाती हैं।

भारत में हमने इस पद्धति का स्वांगीकरण ताजिक प्रणाली के अनुसार तैयार किए गए वर्षफल के रूप में कर लिया है।

3. संहिता—यह नक्षत्रों की स्थिति एवं उनमें होने वाले परिवर्तन तथा उनका मौसम, वस्तुओं, खेती की उपज, महामारी, आंधी-तूफान, भूचाल, राजनैतिक परिवर्तन आदि से संबंधित है। ऋतु संबंध-ज्योतिष (ऐस्ट्रोमीमिओरोलौजी), मुंडेन ज्योतिष (मेदनीय ज्योतिष), व्यापार/वस्तु संबंधी ज्योतिष, आदि इसकी विशिष्ट शाखाएँ बनने लगी हैं।

श्री के. एन. राव ने स्कन्धत्रय की व्याख्या इस प्रकार की हैं—ज्योतिषशास्त्र के घेरे में सभी विषय आ जाते हैं। यह विज्ञानों का विज्ञान है, *क्योंकि मानव तथा उसके पूरे संसार पर होने वाले ग्रहों के प्रभाव से संबंधित हैं। इसी कारण ज्योतिषशास्त्र को तीन शाखाओं में विभाजित किया गया है।*

(क) गणित ज्योतिष (सिद्धांत)—इसे आजकल खगोल-विज्ञान कहते हैं। इसमें नक्षत्रों की स्थिति व उनमें होने वाले परिवर्तन की गणना की जाती है।

यदि ग्रहों के परिवर्तन का, मनुष्यों एवं संसार पर पड़ने वाले प्रभावों का, हम भविष्यवाणी करने के प्रयोग में न लाएँ तो खगोल शास्त्र का मनुष्य

जाति के लिए कोई उपयोग नहीं रह जाता है। परंतु इस तथ्य को आजकल के खगोल शास्त्री नहीं मानते। ऐसे खगोल शास्त्री अपनी गलत धारणा पर अड़े रहते हैं। ऐसी धारणा अपवित्र है और यह संसार को पृथक-पृथक देखने की भावना है। संसार में प्रत्येक वस्तु का एक दूसरे से परस्पर संबंध होता है, चाहे वह सजीव हो अथवा निर्जीव।

अभी हमें कुछ दशक तक और ठहरना पड़ेगा, तब हम देखेंगे कि खगोल विद्या में निपुण ज्योतिषी अपनी विचारधारा में परिवर्तन करेंगे और यह समझेंगे कि ज्योतिष शास्त्र की अन्य मुख्यधारा फलादेश है, और यही शाखा मनुष्य जाति के लिए लाभदायक है, बहुत प्रकाश करने वाली है, और प्रभावकारी ढंग से उपयोगी भी हैं। उन खगोल शास्त्रियों से संसार को काई लाभ होने वाला नहीं है जो केवल अपना मन प्रसन्न करने के लिए इस ब्रह्मांड का आरम्भ पता लगाने और उसका एक स्पष्टीकरण देने के असंभव प्रयास में जुटे हैं।

(ख) संहिता (मुंडेन)–ज्योतिष शास्त्र की इस शाखा से किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं अपितु सामुहिक रूप से पड़ने वाले प्रभाव के विषय में विचार किया जाता है। उन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के, जो अच्छे पद पर हैं और जिनकी नीतियों का अन्य समकालीन सामाजिक व्यवस्था पर असर पड़ता है; के विषय में भी इसी खण्ड में विचार होता है।

आइए हम विचार करें कि क्या ग्रहों एवं उनकी गतिविधियों का आर्थिक नीतियों तथा सरकारी मनोरंजन कार्यक्रमों पर भी प्रभाव पड़ता है; क्या इनके कारण संसार में युद्ध छिड़ सकता है। इन बातों पर विश्लेषण करने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी अद्‌भुत एवं अनूठी घटनाओं का कोई भी व्यक्ति पूर्वानुमान नहीं लगा सकता है और न ऐसी बातों की भविष्यवाणी की जा सकती है। ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जिनमें ऐसी घटनाओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है और भविष्यवाणी की जा सकती है। इसके समर्थन में सार पूर्ण तथ्य एकत्रित किए गए हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रतिकूल अनर्गल एवं निराधार आलोचनाएँ की जाती है; यहाँ तक कि कुछ भौतिक वैज्ञानिकों ने तो 'धार्मिक आधार' पर ज्योतिष शास्त्र के विरूद्ध अपने हस्ताक्षरित वक्तव्य प्रसारित भी किए हैं।

इस बात को देखकर ज्योतिषियों को हंसी आती है कि अमेरिका जैसे देश में ऐसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं जो ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन करने की बजाय और यह देखने की बजाय कि इसकी भविष्यवाणियों में संसार को कितना लाभ हो रहा है, इस शास्त्र का विरोध धार्मिक आधार पर करते हैं। इन परिस्थितियों में कोई भी व्यक्ति यह पूछ सकता है कि इन वैज्ञानिकों के पास कौन-सी चीज वैज्ञानिक रूप से सही है।

नोट—ग्रहों की गतिविधियों का देश की आर्थिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों पर होने वाले प्रभाव ज्योषि के इस स्कन्ध 'संहिता' में भी चर्चित होते हैं। यह बात कितनी सही है, बताने के लिए हम यहाँ दो दृष्टांत दे रहे हैं–

1. सन् 1991 में 26 मई को 16.32 बजे बृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश किया, बुध व सूर्य दोनों ने 25-5-99 को 23-51 बजे युति की, मंगल तुला में शनि उसके सामने मेष में भ्रमण कर रहा था और 26 ता. को बृहस्पति भी शनि के साथ आ गया।

इसी दिन भारत-पाक युद्ध 'विजय ऑपरेशन' शुरु हुआ।

2. 25-1-2001 को 23-36 बजे बुध मकर से कुंभ राशि में प्रवेश किया, साथ ही 25 जनवरी 2001 को गुरु 14-08 बजे तथा शनि 5-54 बजे मार्गी हुये, 24-1-2001 को नेप्चयून की सूर्य से युति हुई। 26 जनवरी को ठीक 9-44 बजे चंद्रमा के कुंभ में प्रवेश किया और गुजरात में भयंकर भूकंप आया।

केवल ग्रहों की गतिविधियों का प्रभाव बताने के लिए उपरोक्त चर्चा की गई है। इस विषय में विस्तार से तो केवल संहिता स्कन्ध का पूर्ण अध्ययन करना होगा, जो ज्योतिष विशारद की कक्षाओं में करवाया जाता है।

एम. एन. केदार द्वारा लिखित देखें "संहिता ज्योतिष" नामक पुस्तक जहाँ इसके दर्जनों उदाहरण दिए गए हैं।

(ग) होरा (सिद्धांत)—होरा ज्योतिष शास्त्र की सबसे प्रसिद्ध शाखा है, क्योंकि यह व्यक्तियों के बारे में भविष्यवाणी, उनके जीवन में होने वाली अच्छी-बुरी घटनाओं, उनकी आने वाली सफलताओं एवं निराशाजनक

बातों, उनकी आशा-निराशा और यहाँ तक कि उनके जीवन में घटित होने वाली सभी प्रकार की घटनाओं के बारे में जानकारी देता है।

उपर्युक्त 3 विषयों (स्कन्धत्रय, 'सिद्धांत होरा' तथा 'संहिता') के अतिरिक्त, ज्योतिषशास्त्र के विकास के साथ-साथ दो विषय और जुड़ गए हैं-वे हैं, 'प्रश्न' और 'शकुन'। इस प्रकार यह स्कन्धत्रय (सिद्धांत, होरा एवं संहिता) के स्थान पर स्कन्धपंच (सिद्धांत, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन) बन गया है। अब ज्योतिषशास्त्र के पाँच विषय हैं।

शकुन-यह तथ्य आगे भी विवादपूर्ण रहेगा कि शकुन को ज्योतिषशास्त्र का एक अंग माना जाए अथवा नहीं, क्योंकि शकुन को ग्रहों की गतिविधि से सीधा कोई व्यवहार नहीं होता है। शेक्सपियर ने धूमकेतु के आर्विभाव के बारे में अपने अन्तर्ज्ञान से यह कहा है-*"जब किसी भिखारी की मृत्यु होती है तब कोई धूमकेतु आसमान में नहीं दिखाई देता; पर जब किसी राजकुमारी की मृत्यु होती है, तब स्वर्ग भी जलने लगता है।"*

प्रश्नशास्त्र (Horary Astrology)—यह प्रश्न किये गये समय पर आधारित होता है। जब कोई व्यक्ति किसी ज्योतिषी से कोई प्रश्न पूछता है उस समय के अनुसार से वह ज्योतिषी एक राशिचक्र बना लेता है और उस चक्र के आधार पर उस व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर बता देता है। यह विशेषकर उन व्यक्तियों के मामलों में लाभदायक सिद्ध होता है, जिनके पास अपनी जन्म कुण्डली नहीं होती है अथवा किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ ज्योतिषी केरल के अंकन शास्त्र को भी ज्योतिष का एक भाग मानते हैं। इसमें प्रश्न पूछने वाले व्यक्ति से कहा जाता है कि वह अपने शरीर के किसी भाग को हाथ से छुए, अथवा किसी फूल का नाम बताए, तो ज्योतिषी उसके द्वारा छुए गए भाग अथवा फूल के हिसाब से उसके प्रश्न का उत्तर बता देता है। लेकिन चूंकि यह भविष्यवाणी ग्रहों की खगोलीय स्थितिसे सीधे तौर से संबंधित नहीं होती है, अतः इस प्रणाली को प्रश्न शास्त्र का अंग नहीं माना जा सकता है।

इस प्रकार 'शकुन' तथा 'प्रश्न' को तभी और उसी सीमा तक ज्योतिषशास्त्र का अंग माना जा सकता है जब तक उनका सीधे तौर से

अथवा अप्रत्यक्ष रूप से (खगोलीय स्थिति) नक्षत्रों की गतिविधियों से कोई संबंध रहता है। इस परिभाषा से बाहर रहने पर नहीं।

परोक्ष दर्शन तथा अन्तर्ज्ञान–ज्योतिष शास्त्र के अंग नहीं है–न तो परोक्ष दर्शन (जिसमें आंतरिक बल से दूर की घटना को देखने की शक्ति हो) और न ही अन्तर्ज्ञान (जिसमें तत्काल किसी बात की सत्यता का पता बिना किसी कारण अथवा विश्लेषण किए लग जाता है; इसमें तत्काल पता लगता है, न कि बीच-बीच में धीरे-धीरे), ज्योतिषशास्त्र के अंग है; यद्यपि ये दोनों भविष्यवाणी करने तथा विचारपूर्वक मन्तव्य प्रकट करने में सहायक हो सकते हैं। इसका कारण यह है कि ये दोनों, ज्योतिषशास्त्र के नक्षत्रीय आधार से सीधे तौर से संबंधित नहीं है और मेल नहीं खाते हैं। इसके साथ ही, इन्हें स्कंधपंच में भी सम्मिलित नहीं किया गया है।

ज्योतिषशास्त्र की गणना उच्च कोटि के साहित्य में आती है। शास्त्रीय ग्रन्थों में इसका मूल स्वरूप वर्णित हैं और उन्हीं के आधार पर सूक्ष्म गणना करके, गणित की दृष्टि से बिल्कुल सही भविष्यवाणियाँ की जाती हैं। ये कदापि गलत नहीं हो सकती। परेशानी वहाँ पैदा होती है जब इस दैवीय व्यवस्था का संचालन मानव जाति को दे दिया जाता है। प्रत्येक ज्योतिषी इस दैवीय ज्ञान भंडार में से उतना ही ज्ञान प्राप्त करता है जिसको प्राप्त करने का *वह योग्य/अधिकारी होता है। आवश्यकता इस बात की है की ज्योतिषी अपने ज्ञान की मात्रा अधिकाधिक बढ़ाए, नहीं तो उसकी दशा उन्हीं सैकड़ों व्यवसायी, व्यक्तियों की तरह होगी जो सड़क के किनारे तोते से भाग्य के कार्ड खिंचवाते हैं।*

मानव देह और 9 ग्रहों का संबंध

सूर्य–यह प्राणतत्त्व का अधिष्ठता है। हमारे जीवन में क्रिया शक्ति, प्राणशक्ति के रूप में परिलक्षित होता है।

चंद्रमा–यह मन का अधिष्ठता है। यह चिन्तन प्रक्रिया को प्रतिक्षण प्रभावित करता है।

मंगल–यह इच्छा, वासना काम से सम्बन्धित हैं।

बुध–मन की विविध क्षमताओं से सूक्ष्म रूप से जुड़ा है।

गुरु—आध्यात्मिक शक्ति, संवेदना, भावना तथा श्रद्धा को प्रभावित करता है।

शुक्र—शुक्र अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों को जन्म देता है।

शनि—यह प्रकृति का अधिष्ठता तथा पृथ्वी तत्त्व प्रधान ग्रह है। इन्द्रियगम्य सभी पदार्थ इनके अर्न्तगत आते हैं।

शरीर और उसके विभिन्न भागों पर ग्रहों, राशियों का तारतम्य एवं प्रभाव

1. मेष—अधिपति मंगल शरीर के मस्तिष्कीय क्रियाकलापों से सम्बन्धित है।

2. वृष—अधिपति शुक्र। इसका संबंध शरीर के ग्रीवा-कष्ठ से है।

3. मिथुन—अधिपति बुध। इसका सम्बन्ध छाती और पेट से है।

4. कर्क—अधिपति चंद्रमा। इसका संबंध शरीर के पृष्ठ भाग से है।

5. सिंह—अधिपति सूर्य। इसका सम्बन्ध शरीर के हृदय, मेरुदण्ड तथा कोहनी से नीचे के भाग से है।

6. कन्या—अधिपति बुध। इसका सम्बन्ध पेडू तथा जननांग से है। इसके अतिरिक्त हाथ, आँतें तथा विसर्जन तन्त्र से है।

7. तुला—अधिपति शुक्र। इसका संबंध शरीर के पिछले भाग तथा मूत्राशय तन्त्र से है।

8. वृश्चिक—अधिपति मंगल। इसका संबंध पेडू तथा जननांग से है।

9. धनु—अधिपति गुरु है। इसका संबंध जाँघ, नितम्ब. तथा यकृत से है।

10. मकर—अधिपति शनि। इसका संबंध घुटनों तथा अस्थि-संस्थान से है।

11. कुंभ—अधिपति शनि। इसका संबंध चर्म तथा टखनों से है।

12. मीन—अधिपति गुरु—इसका संबंध पैर तथा नाड़ी संस्थान से है।

नोट—हमारे विचार से ठीक नहीं हैं। उपरोक्त स्थिति पाश्चात्य ज्योतिषीय एवं चिकित्साशास्त्री ''डेविड कान्वे'' की पुस्तक 'मैजिक आफ हर्ब्स' में लिखी गई है।

इसलिए यह चर्चा की है कि इसकी विदेशी आयुर्विज्ञान वाले ज्योतिष शास्त्र का रोग उपचार में भली भांति प्रयोग कर रहे हैं। और शोध कर रहे हैं।

पैरासेल्सस का मत है ''कि ज्योतिष शास्त्र चिकित्सा-जगत के लिए लाभप्रद है। ज्योर्तिविज्ञान मात्र आकाशीय पिंडो की गति स्थिति की जानकारी तक ही सीमित नहीं है, वरन् ग्रहों के पृथ्वी के वातावरण एवं प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, विश्लेषण और परस्पर आदान-प्रदान से लाभ उठाना भी उद्देश्य है।

1. सिद्धांत स्कन्ध के प्रसिद्ध ग्रंथ—सूर्य सिद्धांत, सिद्धांतशिरोमणि, सिद्धांत तत्त्वविवेक, पंचसिद्धान्तिका, सिद्धान्त शेखर एवं आर्यमटीयम्।

2. संहिता स्कंध—गर्गसांहिता, वसिष्ठसंहिता, नारदसंहिता आदि, आर्षग्रंथ तथा वृहत्संहिता, अद्भुतसागर इत्यादि पौरुष ग्रंथ है। वराहमिहिर के वृहत्संहिता को संहिता स्कन्ध का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है।

3. होरा स्कन्ध—वृहत्पाराशर होरा शास्त्र, वृहज्जातक, जातकपारिजात, फलदीपिका, सारावली, जैमिनीसूत्र आदि।

□□□

अध्याय 4

न त्वस्य कालपुरूषाख्यमहार्णवस्य,
गच्छेत् कदाचिदनृषिर्मनसापिपारम।।

(ज्योतिष शास्त्र में पारङ्त होने के लिए ऋषि की अन्तः प्रज्ञा एवं दर्शन अपेक्षित है।)

एक ज्योतिषी की योग्यताएं

महर्षि पाराशर ने जो कलियुगी ज्योतिषियों के अग्रणी प्रकाश स्तम्भ माने जाते हैं, प्रत्येक ज्योतिषी के गुण व योग्यताएं निर्धारित की है। ये योग्यताएं वृहत् पाराशर होरा शास्त्र में (अध्याय 27, श्लोक, 39 व 40 में) बताई गई हैं। वे इस प्रकार हैं–

गणितेषु प्रवीणों यः शब्दशास्त्रे कृतश्रमः।
न्यायविद बुद्धिमान देशदिक्कालज्ञो जितेन्द्रियः।।39।।
ऊहापोह-पटुहोरास्कन्धश्रवणासम्मतः
मैत्रैय। सत्यतां यानि तस्य वाक्यं न संशयः।।40।।

आइए हम इन का विश्लेषण करें।

गणित में योग्यता-(गणितेषु प्रवीणो)-किसी भी ज्योतिषी को कम से कम कुण्डली बनाना, इसके वर्ग चार्ट बनाना, दशा एवं अष्टवर्ग बनाना आना चाहिए। आजकल के कम्प्यूटर युग में यह और भी आवश्यक हो गया है क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रकार के कम्प्यूटर बाजारों में उपलब्ध हैं जिनसे

भिन्न-भिन्न प्रकार की गलतियां होने की संभावना बनी रहती है और उन्हे ठीक करना आवश्यक होता है। जिनको गणित का परिपक्व ज्ञान होगा साथ ही गोचर में ग्रहों की गति का ज्ञान होगा वह ही उस त्रुटि को जान सकते हैं। अनेक स्थानों पर कम्प्यूटर की सहायता उपलब्ध नहीं हो सकती है और ज्योतिषी को स्वयं ही कुण्डली आदि बनाना आवश्यक हो जाता है। ज्योतिषीय भविष्यवाणियां करने के लिए गणित तथा खगोल में पूर्ण योग्यता प्राप्त करना नितांत आवश्यक है।

शब्द शास्त्र में परिश्रमी-(शब्द शास्त्रे कृत श्रमः)-ज्योतिषियों की पिपासा असीमित होती है। जितना वह जानता उससे अधिक उसकी समझ होती है। उसे उसके पास सलाह लेने के लिए आए व्यक्तियों की बातें ध्यान से सुननी होती हैं और अपनी राय उन्हें स्पष्ट करनी होती है, अतः उसका अच्छा बोलना भी एक अच्छी जमा-पूंजी होती है। परिश्रमी और सतत प्रयास करने वाला ज्योतिषी लगन से काम करता है, जबकि एक शौकीन ज्यातिषी खोखला होता है। यदि किसी ज्योतिषी के पास इतनी योग्यता होगी कि वह प्रामाणिक (स्वतः सिद्ध) ज्योतिषीय सूत्रों के विभिन्न भावों के सूक्ष्म अन्तरों की पहचान कर सकती है, तब भी उसे शब्द शास्त्र में पारंगत माना जा सकता है।

न्यायविद-प्रत्येक ज्योतिषी को न्यायविद भी होना आवश्यक है ताकि वह ग्रहों के परस्पर विरोधी लक्षणों का समुचित विश्लेषण कर सके और एक सही निर्णय पर पहुच सके। किसी भी ज्योतिषी को न्याय की तराजू में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए उसे किसी गुरू की आवश्यकता अवश्य पड़ती है। क्योंकि मूल पाठों में परस्पर विरोधी अर्थ दिए होते हैं।

बुद्धिमान-बुद्धिमान ज्योतिषी का अर्थ है, वह परीक्षण तथा समीक्षा करने वाला हो, उसकी बुद्धि तीव्र हो एवं उसे सदैव जागृत अवस्था में रहना आता हो, ऐसा ज्योतिषी ही बड़ा होने की चेष्टा से स्पर्धा कर सकता है और लगातार उन्नति कर सकता है। ऐसा व्यक्ति ही बुद्धिमान होता है जो अपनी त्रुटियों का अनुभव करके उन्हें सुधारने और सतत ज्ञानवर्धन करता जाए।

देश दिक्कालज्ञो–प्रत्येक ज्योतिषी को अपने कार्य-क्षेत्र के भूगोल, पराम्पराओं, सभ्यता एवं सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके बिना उसके द्वारा की गई भविष्यवाणियां विनाशकारी सिद्ध हो सकती है।

जितेन्द्रिय–ज्योतिषी प्रत्येक ज्योतिष सलाह लेने वाले व्यक्ति के सबसे गुप्त विचारों का भेद जानता है। अतः वह उस व्यक्ति से पैसा ऐंठने, उसे भावपूर्ण बनाने, तथा अन्य लाभ कमाने के लिए उसे डरा धमका कर अवैध रूप से उपहार आदि ले सकता है। अतः ज्योतिषी का नैतिक आचरण सही होना चाहिए और उसे संतुलित विचार वाला होना चाहिए।

ऊहा-पोह-पटुः–किसी घटना को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की योग्यता। किसी विषय के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने की क्षमता। परस्पर विपरीत फल दृष्टिगोचर होने पर उनका सही विश्लेषण करने की क्षमता और स्पष्ट रूप से किसी बात को काट कर अच्छी तरह समझाने की योग्यता होनी चाहिए।

होरा स्कंध श्रवण सम्मतः–होरा स्कंध का उसे पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक हैं।

उपरोक्त सभी गुणों से संपन्न ज्योतिषी ही सत्य रूप से भविष्यवाणी कर सकता है। उसकी वाणी में सरस्वती विराजेगी।

श्री के. एन. राव ने आचार्य वाराह मिहिर द्वारा बताई गई योग्यताओं की स्पष्ट एवं संक्षेप में व्याख्या इस प्रकार की है–

श्री वाराह मिहिर द्वारा किसी अच्छे ज्योतिषी की योग्यताएं इस प्रकार बताई गई हैं–

1. पवित्रता–ह्दय की पवित्रता ही केवल ग्रहों के प्रभाव को आत्मसाध कर सकती है और अन्तर्ज्ञान को सजीव कर ज्योतिषी को संतृप्त ज्ञान द्वारा जन्मपत्री को पढ़कर विनम्रतापूर्वक स्पष्ट भविष्यवाणी करने की क्षमता प्रदान करता है।

2. कार्यक्षमता–ज्योतिष का ज्ञान एक दैवीय विज्ञान है, अतः इसके लिए तकनीकी जानकारी एवं बुद्धि की कार्यक्षमता का होनां आवश्यक है।

3. बोलने की शक्ति–प्रत्येक ज्योतिषी को अपनी भाषा एवं बोलने की शक्ति पर पूरा अधिकार होना चाहिए, क्योंकि इसी से वह अपने विषय की व्याख्या कर सकता है और अपने पास सलाह के लिए आए व्यक्तियों का ठीक तरह सहानुभूतिपूर्वक मार्गदर्शन कर सकता है।

4. मेधावी–ज्योतिषी को बहुत बड़ी संख्या में कुण्डलियों का आंकलन करके व्याख्या करनी होती है और उसके पश्चात् ही किसी ठोस नियम/सूत्र प्राप्त होते हैं। इस कार्य को अनमने ढंग तथा निरुत्साह से करने का कोई लाभ नहीं है।

5. शांत अन्तर्मन से–प्रत्येक ज्योतिषी एक योगी की तरह होता है जिसका चित्त शुद्ध हो चुका हो। जब वह किसी कुण्डली में चौंका देने वाली ग्रहों के योगों की स्थिति को देखे तो उसको विचलित नहीं होना चाहिए। इसलिए यह आवश्यक है कि उसे शांत एवं गंभीर व्यक्ति होना चाहिए।

6. निर्भीक–किसी भी कुण्डली के बारे में गहन अध्ययन करने के पश्चात वाणी किसी भी सभा में निर्भय होकर बोलने की क्षमता होनी चाहिए।

7. दृढ़ संकल्प–यदि किसी ज्योतिषी को अन्य बुद्धिमान ज्योतिषीयों के सम्मुख अपने विचार रखने हों तो दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखने चाहिए। वह अपने आपको अस्त/लाचार न समझें।

8. शकुन तथा संकेत–कोई भी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक किसी रोगी द्वारा कमरे में दाखिल होते ही, उसके चलने, बैठने, बात करने के ढंग आदि से उसके बारे में बहुत सी बातें जान लेता हैं। यही हाल ज्योतिषियों का है, और यह प्रथा बहुत पुरानी है। मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों ने तो केवल ज्योतिषियों की इस तकनीक को अपनाया है, यद्यपि वे इस बात को कभी खुलकर स्वीकार नहीं करते हैं। अतः प्रत्येक ज्योतिषी में यह गुण होने चाहिए कि वह शकुन तथा संकेतों को समझकर उनकी व्याख्या कर सके।

9. व्यसन–लत न होना–कोई भी व्यसन हो, उससे मनुष्य की (बुद्धि) संतुलित नहीं रह सकती है। इसीलिए ऐसा मनुष्य दूसरों को क्या लाभ पहुंचा सकता हैं?

10. ग्रहों को शांत करने वाले मंत्रों की जानकारी—ज्योतिष शास्त्र का आध्यात्मिक उपायों से गहरा संबंध है, यह उपाय मंत्रों के आधार पर किए जाते हैं। अतः ज्योतिषी को इन मंत्रों का ज्ञान हो तथा प्रयोग आना चाहिए ताकि वे चिन्ताग्रस्त मनुष्यों को शांत चित्त बनाये रखने का मार्गदर्शन कर सके।

11. भूत-प्रेत भागने की क्षमता—कुछ मनुष्य किसी दूसरे व्यक्ति को तंग करन या हानि पहुंचाने के विचार से अभिचार, सम्मोहन आदि तांत्रिक क्रियाओं द्वारा घात करवाते हैं। एक ज्योतिषी का इनका सामना करनें की क्षमता भी होनी चाहिए।

12. आध्यात्मिक—प्रत्येक ज्योतिषी को पवित्र और अनुशासित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

13. बुद्धिमत्तापूर्वक प्रश्न पूछने की क्षमता—प्रत्येक ज्योतिषी को ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो उसे कुंडली की गहराई से छानबीन करने के बाद व्याख्या करने में सहायक हो सकें।

14. उपयोगी चेतावनी—प्रत्येक ज्योतिषी को चाहिए कि वह सलाह लेने के लिए आए व्यक्ति को पहले से चेतावनी देदे, कि उसे किस समय और क्या-क्या सावधानी की आवश्यकता है।

15. ज्योतिषीय सूत्रों का गहरा ज्ञान—प्रत्येक ज्योतिषी को इसके सिद्धांतो की पूरी जानकारी होनी चाहिए ताकि वह कुंडली के फलादेश सही प्रकार से बता सके।

ऊपर, वराहमिहिर द्वारा बताई गई योग्यताओं का सूक्ष्म रूप से सार बताया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक ज्योतिषी को चंचल, वैज्ञानिक, बुद्धिमान, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक तथा सबसे आवश्यक एक आदर्श मार्गदर्शक होना चाहिए।

अब समय आ गया है कि हम अपनी पुरानी परम्पराओं को फिर से जागृत करें। विज्ञान और तकनीक ने मनुष्यों की आध्यात्मिक परम्पराओं को छिन्न-भिन्न कर दिया है और इस कारण आज का मानव एक अपूर्ण, टूटा हुआ, चेतनाहीन, निराश व्यक्ति बन कर रह गया है जो भावमय शून्यता

की ओर अंधे की तरह खोज में डूब जाता है। आजकल के समाज में संयुक्त परिवार पद्धति नष्ट होती जा रही है। इसी पद्धति से मनुष्यों का जीवन संतुष्टमय तथा स्नेहपूर्ण बना रहता था। यही किसी मनुष्य का मनोवैज्ञानिक रूप से सबसे बड़ा धन तथा जीवन की आकांक्षा होती है।

इन परिस्थितियों में, कोई भी सच्चा और ईमानदार ज्योतिषी आजकल के बदलते युग में अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति सिद्ध हो सकता है।

ये शब्द महर्षि पाराशर एवं वाराह मिहिर के हैं, उनके द्वारा बताई गई योग्यताएं प्राप्त करने की लालसा प्रत्येक ज्योतिषी को होनी चाहिए। यदि हम उपर्युक्त गुणों में से 4/5 गुण भी अपना लें, तो हम एक ज्योतिषी कहलाने के लायक हो सकेंगे। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम इनमें से अधिक से अधिक गुणों को अपनाने का लगातार प्रयास करें और अपनी उन्नति करते जाएं।

□□□

अध्याय 5

अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारूणैग्रैहः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्याङ्गारंकराहुभिः॥

(बाल्मीकि रामायण)

(राजा दशरथ राम से कहते है हे राम। कोई महान संकट आने वाला है क्योंकि दैवज्ञों का कथन है कि सूर्य, मंगल तथा राहु एक साथ मेरे जन्म नक्षत्र का बेध करने वाले हैं।)

ज्योतिष के लाभ

पिछले अध्याय–3 'ज्योतिष शास्त्र क्या है', में हमने देखा है कि स्कंधपंच के अन्तर्गत इस संसार में घटित हो सकने वाली प्रत्येक घटना आ जाती है। इस प्रकार ज्योतिषशास्त्र बहुत विस्तृत हैं। अतः इसके लाभ भी बहुत विस्तृत ही हैं। इस पाठ में हम होरा स्कंध के लिए ज्योतिष शास्त्र के लाभ के बारे में विचार करेंगे, क्योंकि यही स्कंध प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में होने वाली घटनाओं से संबंधित हैं।

ज्योतिषशास्त्र के लाभ हम तीन प्रकार से विचार करेंगे–

1. भविष्य की योजनाएं।
2. जीवन को समृद्ध बनाना।
3. लाभजनक प्रयासों की संख्या अधिकतम करना।

भविष्य की योजनाएं–इस क्षेत्र में ज्योतिष शास्त्र उपयोग का सर्वाधिक मार्गदर्शन करता हैं। भविष्य की योजनाएं बनाने के लिए 3 क्षेत्रों में, अर्थात् शिक्षा, व्यवसाय तथा विवाह में ज्योतिष शास्त्र का बहुत सहारा लिया जाता है।

शिक्षा तथा व्यवसाय परामर्श—व्यवसाय निश्चित करने के बारे में सलाह–इस क्षेत्र में हमारे विशेषज्ञ हैं–श्री महेन्द्र नाथ केदार, जिन्होंने सैकड़ों बच्चों को उनकी कुण्डलियाँ देखकर ज्योतिषीय परामर्श दिया कि उन्हें किस क्षेत्र में अपनी शिक्षा जारी रखनी चाहिए और ऐसी सलाह बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। उन्होंने Advanced Techniques of Astrological Predicitions (Vol.I), नामक पुस्तक में छपे Education for a Career and the Tension of Parents शीर्षक के अंतर्गत एक लेख में यह कहा है–

मैंने एक कहानी सुनी थी, हो सकता है यह झूठी हो, कि एक शादीशुदा पति तो यह चाहता था कि उनका लड़का डॉक्टर बने, जबकि पत्नी यह चाहती थी कि उनका लड़का इंजीनियर बने, उनकी विचारधारा में यह मतभेद असहनीय था और स्थिति तलाक तक पहुंच गई। जब वह न्यायालय में पहुंचे तो न्यायाधीश ने पूछा कि लड़के की क्या उम्र है तो उत्तर मिला कि उनकी शादी हुए अभी छह माह ही हुए हैं।

इस कहानी से यह पता चलता है कि आजकल शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों के भविष्य के विषय में कितने चिंतित रहते हैं। देखिए सामाजिक वातावरण में कितना परिवर्तन आ गया है। पहले बच्चे वही कार्य करते थे जो उनके माता–पिता करते थे, अब पैतृक व्यवसाह करने की प्रथा समाप्त होती जा रही है। आज की जनसंख्या में शिक्षित वर्ग अधिक होता जा रहा है। जबकि इस शताब्दि के आरम्भ में केवल 10 प्रतिशत पुरूष और 5 प्रतिशत महिलाएं शिक्षित थीं। भारत एक केवल औद्योगिक राष्ट्र ही नहीं है बल्कि इसका स्थान संसार के पहले दस औद्योगिक राष्ट्रों में आता है। सारे संसार में तकनीकी व्यक्तियों की सबसे अधिक संख्या भारतीयों की हैं। इससे पता लगता है कि शिक्षा तथा व्यवसाय चयन में कितनी प्रतिद्वन्द्विता हो गई है तथा समाज की सबसे बड़ी चिंता बन कर रह गई है।

ज्योतिष शास्त्र ही केवल माध्यम है जो शिक्षा तथा व्यवसाय के विषय में मार्गदर्शन दे सकता है, क्योंकि मनोवैज्ञानिक बच्चों की रूचि के अनुसार अब विद्यार्थियों की बुद्धि तथा प्रतिभा का पता लगाने में असमर्थ रहे हैं।

दिल्ली में हमने कुछ ऐसे व्यक्तियों की कुंडलियां देखी हैं जो अपने जीवन में बहुत सौभाग्यशाली, सम्पन्न तथा विशिष्ट व्यक्ति रहे हैं उनके पास ऐसे साधन भी है जिनसे और उनकी संताने भी, आगे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। इसके विपरीत हमारे पास ऐसे अनेक विदेशी नागरिक आए, जिन्होंने ये देखकर आश्चर्य प्रकट किया कि यह भारत के ज्योतिष शास्त्र की सहायता से किसी व्यक्ति की शिक्षा (कितनी होगी, कैसी होगी, क्या कोई व्यवधान आएगा, किस ओर उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा आदि) के बारे में स्पष्ट राय दी जा सकती है, जबकि पश्चिमी देशों में आजकल के मनोवैज्ञानिक विद्यार्थियों की रूचि की जानकारी के आधार पर अटकनें लगाकर अंधेरे में घूम रहे हैं। एक अंग्रेजी जानने वाली रूसी महिला की कुण्डली देखकर हमने उससे कहा कि वह लेखिका, कवित्री, फोटोग्राफर, तथा भाषा प्रवीण (अनेक भाषाएं जानने वाली) महिला है। यह सुनकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ और कहा यह शत प्रतिशत ठीक है। उसने यह भी कहा कि यदि आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति पश्चिमी देशों में हो और उन्हें इतनी सुविधाएं प्राप्त हों, तो वे ऐसे अनुसंधान करके सारे संसार में प्रसिद्ध व्यक्ति बन सकते हैं, जबकि भारतीय ज्योतिषी यह सारा कार्य बिना किसी प्रचार के कर रहे हैं, उन्हें कोई विशेष मान्यता प्राप्त नहीं होती है।

ज्योतिषशास्त्र का भविष्य में विशेष प्रयोग व्यक्तियों के व्यवसाय से संबंधित है क्योंकि भविष्य जानने के लिए यही वास्तविक विज्ञान है। भविष्य में प्रतियोगिताओं में अवसर बढ़ रहे हैं ओर ज्योतिष शास्त्र यह स्पष्ट तौर से बता सकता है कि कौन सा समय व्यवसाय के लिए अच्छा रहेगा, कौन सा समय खराब रहेगा और कब उतार-चढ़ाव आऐंगें। इसी का नाम वास्तविक जीवन है, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे बदलते समय आते रहते हैं। ज्योतिष की सहायता से इन्हें जानने की आवश्यकता है और जागरूक रहने की आवश्यकता है।

2. व्यवसाय-व्यवसाय के बारे में सदैव से ज्योतिषाशास्त्र का मार्गदर्शन लाभदायक व उपयोगी रहा है। ज्योतिषी किसी भी व्यक्ति की कुंडली देखकर यह बता सकता है कि इस व्यक्ति की रूचि किस व्यापार में होगी, किस समय उसे किस व्यापास में लाभ होगा और कब उसे सावधानी बरतनी

चाहिए। वह यह भी बता सकता है कि उसका क्षीण समय कौन सा है और अच्छा समय कब होगा जब उसे अधिक परिश्रम करके अधिकतम लाभ उठाने की संभावनाऐं हैं। ज्योतिषी यह बता सकता है कि किसी व्यक्ति को अपनी कार्यक्षमता से पहला लाभ या वेतन कब मिलेगा। इस विषय में भी न्यायमूर्ति शंकरनाथ कपूर तथा श्री महेन्द्र नाथ केदार के अनेकों लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

3. विवाह—कुण्डली मिलान, विवाह का समय तथा वैवाहिक जीवन में सुख प्रत्येक माता-पिता, विशेष तौर पर लड़की के माता-पिता इस विषय में जानना चाहते हैं। जैसा कि श्री महेन्द्र नाथ केदार एवं डॉ. ललिता गुप्ता, न्यायमूर्ति शंकर नाथ कपूर तथा श्री जे. एन. शर्मा आदि की पुस्तक **विवाह का समय** में बताया है, कोई भी ज्योतिषी ठीक प्रकार से बता सकता है कि किसी लड़के या लड़की की शादी कब होगी।

वास्तव में ज्योतिष शास्त्र का लाभ तभी होता है जब भविष्य की योजनाएं विश्वसनीय बन सकें और यह हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा मानव जाति को दी गई एक महान् भेंट है कि उन्होंने इस आश्चर्यजनक विज्ञान का प्रतिपादन किया।

सौभाग्यशाली जीवन—एक प्रसिद्ध दोहा है-

दुख मे सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

यह केवल ज्योतिष शास्त्र ही बता सकता है कि कब आपका अच्छा समय होगा और कब खराब समय होगा। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जब किसी व्यक्ति का अच्छा समय आए, तब उस समय उसे अपना ध्यान आध्यात्मिक कार्यों की ओर अधिक लगाना चाहिए, ताकि बुरा समय आने पर वह सत्कर्म काम आ सकें। इसी बात को एक दूसरे ढंग से इस प्रकार देखिए। किसी भी मनुष्य की आदर्श प्रार्थना यह हो सकती है, "हे ईश्वर, तू मुझे इतनी बुद्धि दे कि जिस वस्तु को मैं बदल सकता हूं, उसे बदल सकूं और जिस चीज़ को मैं नहीं बदल सकता, उसे मैं साहस के साथ सहन कर सकूं।" इसी बात से ज्योतिषशास्त्र की महत्ता का पता लग जाता है। यह बात केवल एक ज्योतिषी ही बता सकता है कि आप का अच्छा

समय कौन सा है जबकि आप उस समय अधिक मेहनत करके अपना भविष्य अच्छा बना सकते हैं और यह कि आपका खराब समय कौन सा है, जबकि विशेष सावधानी से आप समय व्यतीत कर सके और कष्ट को सहज भाव से सहन करना ही पड़ेगा। इस प्रार्थना पर गहन विचार करें तो आपको ज्योतिषी का महत्वपूर्ण सहयोग तथा ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता का पता स्वयं स्पष्ट होगा।

लाभजनक प्रयासों की संख्या अधिकतम करना—ज्योतिषशास्त्र का वास्तविक लाभ तभी होगा जब हम अपने कार्यों को इस प्रकार से व्यवस्थित कर सकें कि जब अच्छा समय आए तब हम उसका भरपूर लाभ उठाएं। यदि कोई ज्योतिषी यह बताता है कि अमुक महिने में उसकी लड़की की शादी का योग अच्छा है, तब उस व्यक्ति को उसी माह में अपनी लड़की की शादी के लिए लड़का ढूढंने में दुगुनी शक्ति लगा देनी चाहिए। इस प्रकार अपने प्रयासों की सीमा अधिकतम करके भरपूर लाभ कमाया जा सकता है। यदि विवाह का समय नहीं आया है, तो जितने भी प्रयास किये जायेंगे वह निष्फल रहेंगे। ज्योतिष विज्ञान द्वारा संभावित समय का ज्ञान प्राप्त होता है। उस संभावित समय में किये गये प्रयास फलीभूत होते हैं।

हमारा ज्ञान सीमित है। इस बात को सभी वैज्ञानिक और बुद्धिमान लोग मानते हैं कि ऐसे बहुत से अद्भूत विषय होते है जिन्हें हम केवल मोटे तौर पर ही जान सकते हैं।

आईसटीन (Einstein) ने बहुत ही थोड़े शब्दों में इसे इस प्रकार कहा है कि ज्ञान की उन्नति करना "किसी अगम्य वस्तु में से कोई और अगम्य वस्तु निकालना है।" प्रत्येक ज्योतिषी किसी विद्वान की इस बात से सहमत होती है कि हम इस स्थान को नहीं चलाते हैं, वरन् यह अपने आप चलता है। हम तो सिर्फ इस चलायमान के एक अंग हैं।" ज्योतिषशास्त्र का लाभ तभी है जब हम अपने आप को इस चलायमान का एक अंग मान लें और अच्छा समय आने पर भरसक प्रयत्न करके अधिकतम उन्नति करें एवं बुरा समय आने पर उसे चुपचाप सहन करें।

□□□

अध्याय 6

सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रि पराशरः।
कश्यपों नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिराः।।
लोमशः पौलिश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्यौतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः।।

ज्योतिष का इतिहास भाग-I

इतिहास का शब्दिक अर्थ चाहे जो हो, इतिहास का अर्थ है किसी घटना, राष्ट्र, पूर्वजों की सम्पति, अथवा विज्ञान के उद्भव और विकास का ब्यौरेवार विवरण। इसकी उत्तमता उस ब्यौरे की सत्यता पर निर्भर रहती है। पिछले सोवियत संध में कम्युनिस्टों के झक्की नेताओं ने बार-बार रूस देश के इतिहास को बदला और उसे पुनः लिखा। इस प्रकार उन्होंने अपना राजनैतिक उल्लू सीधा किया। इसी बात को देखते हुए, यह बात कही जाती है कि रूस से पिछले इतिहास के बारे में अनुमान लगाना भी असंभव हैं।" रूस में केवल 70 वर्ष पुराने कम्युनिस्ट शासन ने वहां की स्थिति इतनी खराब कर दी है, जरा सोचिए, हमारी क्या दशा होगी क्योंकि हम तो पिछले पांच शताब्दियों से गुलामी में जकड़े हुए थे और अब हम ज्योतिषशास्त्र जैसे विज्ञान का जो वेदों की भांति अनादि (जिसका कोई आरंभ नहीं होता) कहा जाता है इतिहास खोजना चाहते। वास्तव में यह एक निराशाजनक कार्य है। पर यह हमारी पूर्वजों की सम्पत्ति है और यदि हमने इसका परीक्षण नहीं किया तो यह बिल्कुल नष्ट हो जाएगी।

हम अपनी इस विरासत का परीक्षण निम्न चार भागों में कर रहे हैं-

(क) भाग-I ढूंढने में कठिनाइयां।

(ख) भाग-II ज्योतिषीय तकनीक से पुरानी तारीखों का पता लगाना।

(ग) भाग-III विभिन्न कालों का मोटे तोर से बंटवारा।

(घ) भाग-IV विस्तृत रूप से काल विवरण।

संक्षेप में ज्योतिष एक मानसिक बुद्धि संबंधी विज्ञान है। अतः इसका इतिहास बिल्कुल सही, एवं विश्वसनीय लगातार तारीखवार प्रमाणित विवरण के रूप में होना चाहिए। परंतु ऐसा नहीं हैं। इसके निम्न कारण हैं-

श्रुति तथा स्मृति--कागज और छपाई के साधन अभी हाल ही के आविष्कार हैं। पहले सारा ज्ञान स्मरण शक्ति पर आधारित रहता था। इसे **स्मृति कहते हैं**। जिन व्यक्तियों को ज्ञान प्राप्त था, वे किसी घटना को देखकर उसे विस्तृत रूप से यादकर लेते थे और बाद में उस ज्ञान को बोलकर दूसरे व्यक्तियों तक पहुंचाया जाता था। **इसे श्रुति कहते थे**, अर्थात् उन्होंने यह ज्ञान किसी अन्य व्यक्ति से सुनकर प्राप्त किया है। इस प्रकार बोलने और सुनने से इस ज्ञान के विवरण में बहुत सी त्रुटियां, अथवा भ्रांतियां हो गई।

सभ्यता पर आक्रमण--लगभग पांच शताब्दियों तक हमारी विरासत एवं सभ्यता पर असभ्य एवं अशिक्षित व्यक्तियों ने आक्रमण जारी रखा है। उन्होंने किसी बात की परवाह न करते हुए हमारी सभ्यता एवं पैत्रिक सम्पत्ति को जलाया, लूटा, छीना और चुराया। इस पर भी उन्हें तसल्ली नहीं हुई और उन्होंने हमारे इतिहास की घटनाओं को अपनी इच्छानुसार लिखा आज भी हमारे राजनीतिज्ञ अपनी कुर्सियां बचाने के लिए इतिहास में वास्तविकता को छुपाने की चेष्टा कर रहे हैं।

व्याख्याकारों का दोष--हमारे राष्ट्र की एक बड़ी त्रासदी रही है, लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति, जिसने हमारी सभ्यता को अपमानित करके उसका विध्वंस ही कर डाला। उसने यह सुनिश्चित किया कि एक पढ़ा लिखा भारतीय केवल एक क्लर्क बन कर रह जाए और उसे अपने नैतिक

मूल्यों की कोई परवाह न रह जाए अर्थात् वह केवल अपने शारीरिक सुख संबंधों की चिंता करे एवं सभ्यता के लिहाज से बिल्कुल मूर्ख बन जाए। इसके साथ ही कुछ ऐसे बहुत बोलने वाले आलसी व्यक्तियों को प्रमुखता दी गई जिन्होंने संस्कृत के शब्दों का अंग्रेजी में रूपान्तर बिल्कुल गलत रूप से किया है। इनकी व्याख्या करने वालों में अधिकतर व्यक्ति यूरोप के एक धर्म विशेष को मानने वाले व्यक्ति थे जिनकी सभ्यता व विचार बिल्कुल अलग थे और वे यह मानते थे कि इस संसार को बने ईसवी सन् से पहले केवल 3000 वर्ष अर्थात् कुल 5000 वर्ष हुए हैं। इस प्रकार उन्होंने सारे इतिहास को छोटा कर दिया, और गलत तरीके से लाभहीन दृष्टि से इसे असंगत बना दियां।

अनैतिक ज्योतिषी–पिछले लगभग 150 वर्षों में ज्योतिषियों ने अपने लेखों में न तो ईमानदारी दिखाई है और न पवित्रता प्रदर्शित की है ऋषि पाराशर के समर्पित कठिन कार्य तथा अन्वेषण कृति 'कृत श्रमः' को भुला दिया गया और इन व्यक्तियों ने अलौकिक एवं असंगत भविष्वाणियां बता–बताकर मनुष्यों को चकित करके अनुचित प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उन्होंने ज्योतिष शास्त्र के इतिहास में अपनी आवश्यकताओं के अनुसार फेर–बदल किया और इस प्रकार मनुष्यों में इस विज्ञान के विकास के बारे में सही विवरण न देकर अनावश्यक रूप से संदेह पैदा कर दिए।

ज्योतिषीय तकनीक से पुरानी तारीखों का पता लगाना–

हम यहां पर पुरानी तारीखों का पता लगाने के दो तरीकों पर विचार करेंगे–

(क) संपात का अयन।

(ख) महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में ज्योतिषीय लेख–प्रमाण।

संपात का अयन–(संपात बिन्दु का पीछे खिसकना) का मुख्य कारण पृथ्वी के विषुवत् रेखा पर उभरे हुए भागों पर सूर्य तथा चंद्रमा के आकर्षण शक्तियों के प्रभाव हैं। परिणामतः पृथ्वी की एक अतिमध्दम डगमगाहट भरी गति हो जाती हैं। खगोलीय ध्रुव क्रांति वृत के ध्रुव के चारों

ओर एक छोटी वृत्ताकार कक्षामें घूमता है। जिसके कारण खगोलीय विषुवत् वृत्त क्रांति वृत को जहां काटता है वह बिन्दु पीछे खिसक रहा है। मेष के प्रथम बिन्दु का पीछे हटना 'सम्पात का अयन' कहलाता है। यह हर वर्ष लगभग 50.3" कम हो जाती है। विषुवीय बिन्दु की किसी नक्षत्र में स्थिति समय का कालक्रमिक बोध कराती हैं। नक्षत्र मंडल की सही स्थिति से ज्योतिष शास्त्र के इतिहास का लगातार विवरण प्राप्त हो सकता है। उस दिन नक्षत्रों की स्थिति जिस अंश पर होती है, वह अंश प्रत्येक 72 वर्ष में 1° (एक डिग्री) कम हो जाता है, 960 वर्ष में एक नक्षत्र (13°20') और लगभग 2160 वर्ष में 30° अर्थात् एक राशि कम हो जाता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां पर कृषि मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती है। अति प्राचीन काल से उत्तरायन सूर्य (जब सूर्य मध्यानतर रेखा से दक्षिण की ओर अपनी यात्रा आरंभ करता है) का समय वर्षा आरंभ होने के साथ जोड़ा जाता रहा है। इस वर्ष (2002 में) सूर्य (सायन) ने कर्क राशि में 21 जून, 2002 को 18-54 बजे (भारतीय मानक समय के अनुसार) प्रवेश किया। इस समय सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में था। वह (ता. 22 जून 2002 को 08:50 बजे) मृगशिरा नक्षत्र को छोड़कर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर गया। इस प्रकार यदि हम किसी भी युग के उत्तरायण सूर्य की तारीख पता कर सकें तो हम उसका काल-निर्णय कर सकते हैं।

पूना के एक डा. पदमाकर विष्णु वर्टक के अनुसंधान के अनुसार ऋग्वेद काल में वर्षा ऋतु उस समय आरम्भ होती थी, जबकि सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में होता था। इससे यह पता लगता है कि वह काल आज से 25,920 वर्ष पूर्व रहा होगाए क्योंकि आजकल भी वर्षा ऋतु उस समय आरम्भ होती है, जब सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में होता है। 27 नक्षत्र × 960 वर्ष = 25920 वर्ष। इस प्रकार ऋग्वेद काल का समय ईसा से 23918, वर्ष पूर्व (25920 – 2002) = 23918 वर्ष निश्चित किया जा सकता है। उस समय मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य किस स्थान पर था, यह तो निश्चित नहीं है, पर यह परिवर्तन 960 वर्ष से अधिक नहीं हो सकता और यदि इस बारे में और अनुसंधान किया जाए तो इस काल (960 वर्ष) की अवधि को महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में और कम किया जा सकता है।

ज्योतिषीय लेख-प्रमाण-यह हमारी परम्परा रही है, जिसे पश्चिमी विचाराधारा वाले व्यक्ति नहीं समझ सके हैं कि हम अपनी बड़ी-बड़ी घटनाओं का लेख-प्रमाण ज्योतिषीय लेखों में निबद्ध कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम राम के जन्म के समय, अथवा महाभारत के युद्ध के समय नक्षत्रों की क्या स्थिति थी। यह पता लगा लें, तो इससे उसका काल निर्णय करने में आसानी हो जाती है। डॉ. वर्टक के अुनसार श्रीराम की कुण्डली से यह पता लगता है कि उनका जन्म ईसा से 7323 वर्ष पूर्व हुआ होगा; इसी प्रकार महाभारत काल के समय शनी पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में था, बृहस्पति श्रावण नक्षत्र में था, राहू उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में था और मंगल अनुराधा नक्षत्र में था। इससे वह तारीख ईसा से 5561 वर्ष पूर्व 16 अक्टूबर आता है। इसके साथ ही वेद व्यास जी ने यह भी लिखा है कि एक ही मास मे चन्द्रग्रहण व सूर्य ग्रहण दोनों थे। यह माननीय एवं ठीक तरीका है।

समय का रेखाचित्र

ज्योतिष शास्त्र का इतिहास जानने के लिए हमने सुविधाजनक विधि तरीका अपनाने के लिए, सारे काल को निम्न भागों में बांट दिया है-

1. वैदिक काल
2. पौराणिक काल
3. पाराशरी काल
4. वाराह मिहिर काल
5. शिक्षक काल।

1. वैदिक काल (23 ,927 से वर्ष 8350 ईसा से पूर्व तक)—वेद अनादि हैं अर्थात् इस बारे में कोई विचार नहीं किया जा सकता कि उनका उद्‌भव कब हुआ। वेदों में सारा ज्ञान भरा पड़ा है। ज्योतिष शास्त्र तो केवल उसका एक अंग है, अर्थात् वेदांग है। यह वेदांग भी वेदों के साथ ही बना और विकसित हुआ था। ऋषियों और मुनियों को विभिन्न श्लोक, ऋचाएं तथा सुक्त बनाने में हजारों साल लगे थे जब उन्होंने नक्षत्रों का ध्यानपूर्वक पर्यवेक्षण किया था।

हमें पूर्वजों की विरासत में ज्योतिषशास्त्र के बारे में निम्न श्लोक प्राप्त हुए है-

(क) ऋग्वेद में-36 श्लोक

(ख) यजुर्वेद में-44 श्लोक

(ग) अथर्ववेद में-162 श्लोक

इस काल में ज्योतिषशास्त्र पूरी तरह से विकसित शास्त्र था। श्री एस. एन. कपूर ने अपने अनुसंधान में 3 श्लोक बताएं हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं।

दिवा अधिपति-

आदित्य, सौमो, भौमश्च तथा बुद्ध बृहस्पति।

भार्गव, शनैश्चरै व एते सप्रदिनाधिपाः।।13।।

'जन्म-नक्षत्र' तथा उसका का अन्य नक्षत्रों से संबंध

जन्म संपादिपत क्षेम्यः प्रत्यरः साधकस्तय।

नैधनौ मित्र वर्गश्च परमोमैत्र एवं च।।103।।

दशम जन्म नक्षत्रात्कर्म नक्षत्र मुच्यते

एकोन विंशति चैव गर्भाधानक मुच्यते।।104।।

हम आज भी इसी प्रणाली से विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, इसमें कोई परिवर्तन नहीं आया है।

हमें इस बात पर गर्व अनुभव होता है हम उस ज्ञान की शिक्षा दे रहे हैं जो हजारों वर्षों के परीक्षण को पार कर चुका है। इससे यह भी पता लगता है कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि कितने दूरदर्शी एवं बुद्धिमान थे।

2. पौराणिक काल (8350 से 3000 वर्ष ईसा से पूर्व)—इस काल में 18 प्रवर्तकों ने अर्थात् ऋषि-मुनियों ने इस क्षेत्र में और उन्नति की तथा दूर-दूर के क्षेत्रों में इस शास्त्र को फैलाया। उनका योगदान चारों ओर फैला। उन्होंने सिद्धांत (नक्षत्र विज्ञान एवं गणित ज्योतिषशास्त्र), होरा (जातक अथवा जन्म कुण्डली), और संहिता (मुंडेन, ऋतु ज्योतिष, अन्तरिक्ष विद्या आदि) का प्रतिपादन किया। ये प्रवर्तक हैं-

1. सूर्य 2. पितामह 3. वशिष्ठ 4. अत्रि 5. पाराशर
6. कश्यप 7. नारद 8. गर्ग 9. मारीच 10. मनु
11. अंगिरा 12. लोमश 13. पौलिश 14. च्यवन 15. व्यास
16. यावन 17. भृगु 18. शौनक।

इसी काल में हमारे शाश्वत महाकाव्य रामायण और महाभारत भी लिखे गए। डॉ. वर्टक ने श्रीराम का जन्म समय ईसा से 7323 वर्ष पूर्व निर्धारित किया है। श्रीराम की कुण्डली केवल ज्ञानवर्धन की दृष्टि से नीचे दी जा रही है।

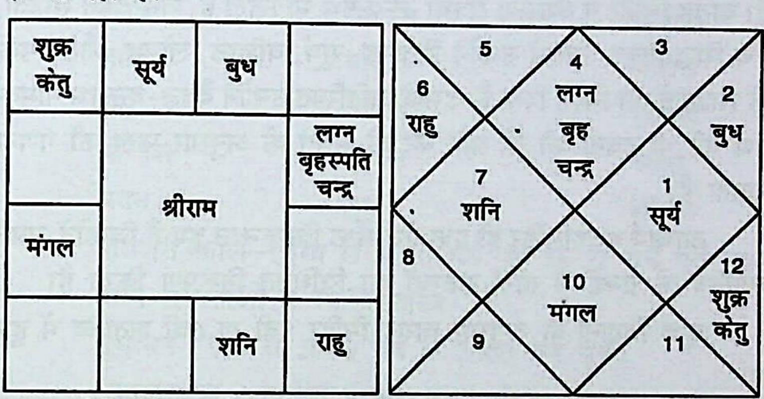

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक स्थान पर दो ज्योतिषीयों की अलग-अलग राय होती हैं। ज्योतिषशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते हम सभी विचारधाराओं पर दृष्टि डालते हैं। फिर उन पर तर्कपूर्ण विचार करके उनका विश्लेषण करते हैं। ऊपर दी गई कुण्डली में भी कुछ विद्वान यह कहते हैं कि सूर्य उस समय मीन राशि में था, न कि मेष राशि में। उनके विचार से उनका जन्म-समय भी भिन्न था। कुछ विद्वान उनका जन्म ईसा से 5000 से 4000 वर्ष पूर्व मानते हैं। महाभारत काल ईसा से 5562 से 3000 वर्ष पूर्व था। स्पष्ट तौर से यह काल राजकुल शासन का था।

3. पाराशरी काल (3000 वर्ष से सन् 57 ईसा पूर्व तक)—पाराशर को कलियुग का सबसे अग्रणी ज्योतिषी माना जाता है। कलियुग का आरम्भ ईसा से 3102 वर्ष पूर्व से हुआ है। वैदिक ज्योतिषशास्त्र में पाराशर की स्मारक-कृति वृहत पाराशर होरा शास्त्र, प्रधान ग्रंथ है। हमारे शिक्षण की

आधार पुस्तक यही है। इस काल के अन्य मुख्य ज्योतिषी थे, जैमिनी, गर्ग, सत्याचार्य आदि।

4. वाराह मिहिर काल (ईसा से 57 वर्ष पूर्व से सन् 1900 तक)–इस युग में वाराह मिहिर का प्रभुत्व रहा। वाराह मिहिर राजा विक्रमादित्य, जो ईसा से 57 वर्ष पूर्व गद्दी पर बैठे थे, के राजज्योतिषी थे। विक्रमी संवत उन्हीं के नाम पर इसी तारीख से आरम्भ होता है। वाराह मिहिर द्वारा रचित वृहत जातक दूसरा ग्रंथ है जो हमारे शिक्षण का आधार है। वाराह मिहिर ने व्याख्या संबंधी अन्य ग्रंथ भी लिखे हैं, जैसे वृहत संहिता, पंच सिद्धांतिका, जिनमें उन्होंने पितामह, सूर्य, वशिष्ठ, लोमश और रोमक के सिद्धांतों को मिला दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने दैवज्ञ–वल्लभ नामक ग्रंथ की भी रचना की जो प्रति घंटे के समय के अनुसार फल की गणना बताता है।

आचार्य वराहमिहिर ही एक ऐसे श्रेष्ठ त्रिस्कन्धज्ञ हुए हैं जिन्होंने अपने ज्योतिष के ग्रन्थों में तीनों स्कन्धों का विधिवत् निरूपण किया है।

कुछ विद्वानों के अनुसार वाराह मिहिर 5वीं या 6वीं शताब्दि में हुए थे।

वास्तव में हमारे प्राचीन ग्रंथों का समय 8वीं शताब्दि के बाद से अधिक विश्वसनीय रहा है। इस काल में हुए बड़े–बड़े विद्वानों का परिचय इस अध्याय के अंत में एक सारणी में दिया जा रहा है।

5. शिक्षक काल (सन् 1900 से अब तक)–इस काल में दो प्रमुख ज्योतिषीयों ने शिक्षकों का सही मार्गदर्शन किया और जिन भारतीयों को लार्ड मैकाले के दर्शन ने कुमार्ग पर धकेल दिया था, उन्हें अपनी पूर्वजों की विरासत व सभ्यता का विशाल, बहुमूल्य, गंभीर एवं स्पष्ट सुनहरा मार्ग दिखाया। हम अगले अध्याय में इस काल के बारे में और विस्तृत चर्चा करेंगे।

वैदिक ज्योतिषशास्त्र का काल क्रमानुसार इतिहास

- वैदिक काल–(ईसा से 23,750 वर्ष पूर्व)

ऋग्वेद–30 श्लोक

यजुर्वेद–44 श्लोक

अर्थववेद–162 श्लोक

पौराणिक काल–(ईसा से 8300 वर्ष से 3000 वर्ष पूर्व)

रामायण–ईसा से 5000 वर्ष पूर्व तक)

महाभारत–(ईसा से 5000 वर्ष से 3000 वर्ष पूर्व तक)

अठारह प्रवर्तक–

सूर्य	पितामह	वशिष्ठ
अत्रि	पाराशर	कश्यप
नारद	गर्ग	मारीच
मनु	अंगिरा	लोमश
पौलिश	च्यवन	व्यास
यवन	भृगु	शौनक

पाराशरी काल–(ईसा से 3000 वर्ष पूर्व से 57 वर्ष पूर्व तक)

अन्य सभ्यताओं में ज्योतिषशास्त्र–

सुमेयिन (ईसा से 5000 वर्ष से 2000 वर्ष पूर्व)

(चन्द्रमा पर आधारित पंचांग, नक्षत्र मंडल का ज्ञान)

बेबीलोनियन (ईसा से 3000 वर्ष से 1000 वर्ष पूर्व)

सीरियन (ईसा से 1690 वर्ष से 60 वर्ष पूर्व)

ग्रीक (ईसा से 1500 वर्ष से 200 वर्ष पूर्व)

(इन पर सुमेरियन सभ्यता का पूर्ण प्रभाव था। सुमेरियन सभ्यता ने वैदिक एवं बेबीलोनियन ज्योतिष के नियमों को ग्रहण किया था।

पाराशर–

वृहत पाराशर होरा शास्त्र।

जैमिनी–

जैमिनी ज्योतिषशास्त्र।

गर्ग–

गर्ग संहिता

सत्याचार्य-

नाड़ी ज्योतिषशास्त्र

वाराह मिहिर काल-ईसा से 57 वर्ष पूर्व से सन् 1900 तक)

(कुछ विद्वान इनका काल सन् 500 ई. मानते हैं।)

वृहत जातक

वृहत संहिता

पंच सिद्धांतिका

योग यात्रा

विवक पटल

दैवज्ञ वल्लभ

कल्याण वर्मा-(सन् 578 ई.)-

सारावली (इसमें वैदिक ज्योतिषशास्त्र एवं यावन जातक मिले हुए हैं।)

उत्पल भट्ट अथवा भट्टोत्पला-(सन् 880 ई.) देहली

वाराह मिहिर की रचनाओं के प्रसिद्ध समालोचक।

इनकी अपनी पुस्तकें है-विव्रुथी एवं राहू-निवाकरण

भास्कराचार्य-(सन् 1114 ई.) विजयावाडा

भाव-चंद्रिका एवं भाव दीपिका

वैद्यनाथ-(14वीं शताब्दी) कर्नाटक

जातक पारिजात

नारायण भट्ट-(14वीं शताब्दी) उडीपी

चमत्कार चिंतामणि

वेंकटेश शर्मा-(16वीं शताब्दी) उत्तरी भारत

सर्वार्थ चिंतामणि (दशा-फल के बारे में विस्तृत चर्चा)

ढुण्ढि राज-(16 शताब्दी) नासिक

जातक भरण (जन्म कुण्डली से फलित जो यवन एवं वृत्दयावन जातक पर आधारित है।)

मंत्रेश्वर–(16वीं शताब्दी) मद्रास

फल दीपिका (जातक पारिजात का संक्षिप्त रूपक: जन्म कुण्डली से फलित पर अधिकारपूर्ण कृति)

नीलकंठ–(16वीं शताब्दी) महाराष्ट्र

ताजिक नीलकंठी (वर्षफल में अनुसंधान कर्ता)।

गणेश दैवज्ञ–(18वीं शताब्दी) गुजरात

जातक अलंकार (शुक जातक का संक्षेप)

महादेवजी पाठक–(जन्म सन् 1842 ई.) रतलाम

जातक तत्त्व

श्री सूर्य नारायण राव–(जन्म सन् 1856 ई.)

वृहत जातक, जैमिनी सूत्रम के व्याख्याकार एवं अत्यधिक सम्मानित लेखक।

राम दयालु–(सन् 1881 ई.) पंजाब

संकेत निधि

पंडित महेश–(सन् 1874 ई.) कश्मीर

रामवीर

ज्योतिष महानिबंध।

डा. बी. वी. रमन–(सन् 1912–1998 ई.) इंग्लिश में अनेकों पुस्तकें लिखीं तथा विश्व के सर्वोच्च स्तर की इंग्लिश पत्रिका में प्रकाशन द्वारा ज्योतिष शास्त्र को एक नया आयाम दिया।

युग प्रमाण

सत्य युग–4000 देवता वर्ष, सत्य युग की पूर्व संध्या = 400 देवता वर्ष सत्य युग की अन्तिम संध्या = 400 देवता वर्ष/कुल वर्ष 1440000 + 144000 + 144000 = 17,28,000.

(सत्रह लाख अट्ठाईस हजार) मानव वर्ष

त्रेता युग–3000 देवता वर्ष 1 त्रेतायुग की पूर्व संध्या = 300 देवता वर्ष। त्रेता युग की अन्तिम संध्या = 300 देवता वर्ष = त्रेता युग की अन्तिम संध्या = 300 देवता वर्ष।

कुल 1080000 + 108000 + 108000 = 12,96,000

(बाहर लाख छियानवे हजार) मानव वर्ष

द्वापर युग–2000 देवता वर्ष। द्वापर की पूर्वसंध्या 200 देवता वर्ष।

द्वापर की अन्तिम संध्या = 200 देवता वर्ष

कुल 720000 + 72000 + 72000 = 8,64,000

(आठ लाख चौसठ हजार) मानव वर्ष

कलियुग–1000 देवता वर्षा कलियुग की पूर्व संध्या 100 देवता वर्ष कलियुग की अंतिम संध्या = 100 देवता वर्ष

कुल 360000 + 36000 + 36000 = 4,32,000

(चार लाख बत्तीस हजार) मानव वर्ष

चतुर्युगी–12000 देवता वर्ष। मनुष्यों के 43,20,000

(तिरालीस लाख बीस हजार) मानव वर्ष

कलियुग से दुगुना द्वापर, तिगुना त्रेता युग और चौगुना सत्य युग होता है। एक चतुर्युगी कलियुग से दस गुनी होती है।

विश्व सृष्टिमान–इसवी सन् 2014 मं कलियुग को प्रारंभ हुए 5115 वर्ष हो गये हैं। विश्व सृष्टि के 1972949115 वर्ष। (एक अरब सत्तानवे करोड़ उनतालीस लाख, उनचास हजार एक सो प्रंदह वर्ष) बीत चुके हैं। अभी 28वाँ चतुर्युग चल रहा है। यह वैवस्वत नाम का सातवाँ मनवन्तर चल रहा है।

मन्वन्तर

1 महायुग (चतुर्युगी) = 43,20,000 मानव वर्ष

71.43 महायुग = 1 मन्वन्तर (1 मनु का जीवन-काल)

1000 महायुग = 1 कल्प = ब्रह्म का एक दिन

(4320000000) मानव वर्ष ब्रह्मा की एक रात = एक कल्प

360 कल्प = ब्रह्मा का एक वर्ष

ब्रह्मा की आयु–100 ब्राह्मवर्ष = 360 × 100 = 36000 कल्प

1 मन्वन्तर = 1000 चतुर्युगी का चौदहवाँ भाग = 1,71,103 दिव्य वर्ष

2 मन्वन्तर = 2 ब्राह्म अयन 1 उत्तरायण = ब्रह्मलोक का प्रकाश मार्ग दक्षिणायन--ब्रह्मलोक का धूम्रमार्ग।

मन्वन्तर का उत्तरायण—एक मनु की पूर्ण आयु।

मन्वन्तर का दक्षिणायन = अन्य मनु का जीवन काल।

ब्रह्म का 1 वर्ष = दस हजार अस्सी मनुओं की आयु के बराबर।

1 कल्प = 14 मन्वन्तर।

मनुओं के नाम (14 हैं)

(i) स्वायम्भुव (ii) स्वोचिष (iii) उत्तम (iv) तामस (v) रैवत

(vi) चाक्षुष (vii) वैवस्वत (viii) सावार्णि (ix) दक्षसावर्णि (x) ब्रह्म सावीर्ण (xi) धर्म सावीर्ण (xii) रूद्र सावर्णि (xiii) देव सावीर्ण तथा (xiv) इन्द्र सावीर्ण।

वर्तमान काल में सातवें वैवस्वत मनु का काल चल रहा है। प्रथम छः मनुओं के काल व्यतीत हो चुके है। 28वाँ महायुग चल रहा है, जिसके प्रथम तीन युग (सत्युग), (त्रेता और द्वापर) बीत चुके हैं और चौथा युग 'कलियुग' चल रहा है। अभी कलियुग का प्रथम चरण हैं। ब्रह्मा का द्वितीय परार्ध है। श्वेतवाह नाम का कल्प हं और वैवस्वत नाम का मन्वन्तर है।

अमावस्या के प्रकार—दो प्रकार की होती है (i) 'सिनी वाली' जो चतुर्दशी' तिथि मिश्रित हो (ii) कूहू—जो प्रतिपादमिश्रित हो।

पूर्णमासी के प्रकार (i) 'अनुमति' (ii) राका

प्रातः काल—प्रतिदिन सूर्योदय से 48 मिनट पूर्व।

अरुणेदयकाल—सूर्योदय से 1 घण्टा 12 मिनट पूर्व।

उषा काल—सूर्योदय से 2 घण्टा पूर्व।

अभिजित काल—दोपहर 11-36 बजे से 12.24 बजे तक (बुधवार को वर्जित)

प्रदोष काल–प्रतिदिन सूर्यास्त के 48 मिनट बाद तक

गोधूलि काल–प्रतिदिन सूर्यास्त के 24 मिनट पहले से 24 मिनट बाद तक

राहु काल–प्रतिदिन 1½ घण्टे का

रविवार = 16-30 से 18 बजे।

सोमवार–7.30 से 9.00 बजे

मंगलवार = 15 से 16-30 बजे,

बुधवार = 12 से 13.30 बजे,

बृहस्पतिवार = 13-30 से 15 बजे तक

शुक्रवार = 10-30 से 11 बजे तक,

शनिवार = 9 से 10.30 बजे तक।

गुलिक काल (1½-1½ घण्टे तक)

रविवार 15 से 16–30

सोमवार 13–30 से 15 बजे

मंगलवार 12 से 13–30 बजे

बुधवार 10–30 से 12 बजे तक

गुरुवार 9 से 10–30 बजे तक

शुक्रवार 7–30 से 9 बजे तक

रविवार 6 बजे से 7–30 बजे तक।

यम गण्ड काल (प्रतिदिन 1½-1½ घण्टे)

रविवार 12 से 13–30
सोमवार 10–30 से 12
मंगलवार 9 बजे से 10–30 तक
शनिवार 13–30 से 15 बजे तक

बुधवार 7–30 से 9 बजे तक
गुरुवार 6–00 से 7–30 बजे तक
शुक्रवार 15 से 16–30 तक

ग्रहों के द्वारा ही प्राणियों के पूर्व और अग्रिम जन्म की भी स्थिति ज्ञात होती है।

गुरुरुडुपति शुक्रो सूर्यभौमौ यमज्ञौ, विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः।

दिनकर शशि वीर्याधिष्ठिता स्त्र्यंशनाथाः प्रवर समकनिष्ठास्तुङ्गह्रासाद नूके॥

(द्रेष्काण वृहज्जात 25/14)

प्राणियों के जन्म-समय में सूर्य और चंद्रमा में जो बलवान हो,

यदि गुरु के त्र्यंश (द्रेष्काण) में हो तो जातक को पूर्व जन्म में देवलोक वासी, यदि चंद्रमा और शुक्र के त्र्यंश में हो तो मर्त्यलोक वासी और यदि शनि या बुध के त्र्यंश में हो तो नरकलोकवासी समझना चाहिए।

उक्त त्र्यंशपति ग्रह अपने उच्चस्थान, मध्य स्थान या नीच स्थान में हो तो उक्त लोक में भी जातक को यथाक्रम उत्तम, मध्यम, और अधम स्थान/श्रेणी का समझना चाहिए।

इसी प्रकार मरण काल में त्र्यंशपति की स्थिति के अनुसार देवलोक, पितृलोक, मृत्युलोक अथवा नरकलोक में अग्रिम जन्म समझना चाहिए।

नक्षत्र और उनके देवता

1. अश्विनी (अश्विनी कुमार)	2. भरणी (यमराज/वाहि)
3. कृत्तिका (अग्निदेव)	4. रोहिणी (ब्रंह्मा)
5. मृगशिरा (चंद्रदेव)	6. आर्द्रा (रूद्र)
7. पुनर्वसु (अदिति)	8. पुष्य (बृहस्पति)
9. श्लेषा (सर्प)	10. मघा (पितर)
11. पू. फा. (भग)	12. उ.फा. (अर्यमा)
13. हस्त (सूर्य)	14. चित्रा (त्वष्टा)
15. स्वाति (वायुदेव)	16. विशाखा (इन्द्राग्नि)
17. अनुराधा	18. ज्येष्ठा (इन्द्र)
19. मूल (निर्ऋति)	20. पू. आ. (अप्/जल)

21. उ. आ. (विश्वदेव)
22. अभिजित (ब्रह्मा)
23. श्रवण (विष्णु)
24. घनिष्ठा (वसु)
25. शतभिषा (वरूणदेव)
26. पू. भाद्रा (अजैकपात)
27. उ. भाद्रा (अहिर्बुध्न्य)
28. रेवती (पूषा)

ज्योतिष का इतिहास II

ज्योतिष शास्त्र का संक्षिप्त इतिहास

वेदा हि यज्ञार्थभीमप्रवृत्ताः (वेदांग जयोतिष)

इस वेदांग वचन से यह ध्वनि व्यंजित है कि मूलतः वेदों का प्रवर्तन यज्ञ-सम्पादन के लिये हुआ, क्योंकि वे सर्वगत परमात्मा यज्ञ में प्रतिष्ठित रहते हैं–**तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्** (गीता 3/15) यह व्यापक यज्ञ कालाधीन है और वह अमूर्त तथा मूर्त कालतत्त्व कालातीत परमेश्वर का स्वरूप है। अतः उसके संज्ञान तथा उसकी उपलब्धि के लिए वेदों में काल एवं कर्म का निर्वचन करने वाले ज्योति रूप विज्ञान ज्योतिषशास्त्र का यत्र-तत्र प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिफलन हुआ है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द तथा ज्योतिषस्वरूप वेद पुरुष का प्रकाशमय नेत्र ''ज्योतिषशास्त्र ही कहा गया है।' 'वेदस्य निर्मलं चक्षुः' भूः, भुवः, तथा स्वर्लोक की गतिका नियामक यह ज्योतिषशास्त्र आर्ष ऋषियों की दृष्टि का विषय रहा है। इसलिए स्फुट एवं अस्फुट रूप में वह वहाँ व्यक्त है। काल के समस्त अवयवों, पृथ्वी-आकाश एवं नक्षत्र मण्डल के सौरादि ग्रहों की गतियों तथा उनसे होने वाले प्रभावों की चर्चा संहिताओं तथा ब्राह्मण भाग में उपलब्ध है। मधु, माधव, शुक्र आदि बारह मासों की चर्चा तथा उसमें विहित कर्मानुष्ठानों आदि का वर्णन तैत्तिरीय संहिता में निर्दिष्ट है। वैदिक बाङमय में ज्योतिर्विज्ञान के मूल सिद्धान्त विद्यमान हैं। वेदार्थ के सम्यक् अवबोध के लिये ही वेदांगशास्त्र उद्बुद्ध हुआ और उसमें ज्योतिष-अंग विशेष महत्त्वपूर्ण है। जैसे नेत्रहीन के लिए सब कुछ अंधकार मय है, वैसे ही ज्योतिषरूपी नेत्र के बिना वेद का सम्यक दर्शन संभव नहीं। अतः इस शास्त्र की विशेष उपयोगिता है।

कल्प नाम से अभिहित वेदांग के अन्तर्गत श्रौतसूत्र, ग्रहय सूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्बसूत्र आतो हैं। इनमें मुख्य रूप से धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र ही प्रकारान्तर से वर्णित हैं। यज्ञादि के मण्डप आदि की संरचना का शास्त्र-शुल्बसूत्र ज्योतिष के रेखागणित का ज्ञान कराता है। शेष तीन सूत्र ग्रन्थों में श्रौत-स्मार्त कर्म की मीमांसा ज्योतिष के परिपेक्ष्य में की गई है। धर्मसूत्र तो ज्योतिष की आचार सीमांसा है। धर्मसूत्रों का ही विस्तार मनु, याज्ञवल्क्यादि की स्मृतियों के रूप में हुआ है। वहाँ ज्योतिष के विविध पक्ष निरुपित है।

वेदांगज्योतिष नाम से सम्प्रति तीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं–

(i) ऋग्ज्योतिष (ii) याजुष ज्योतिष तथा (iii) अथर्वज्योतिष

श्री लगधाचार्य को वेदांग ज्योतिष का प्रवक्ता आचार्य कहा गया है।

ऋग्ज्योतिष में 36 श्लोक हैं, याजुष ज्योतिष में 44 श्लोक हैं। इसका अधिकांश भाग ऋग्जयोति से साम्य रखता है। तथा अथर्वज्योतिष में 162 श्लोक है।

ज्योतिष के मूलतत्त्व वेदों में समाहित हैं, उनका विस्तार पुराणों में हुआ है, जो अठारह हैं और ये भगवान वेदव्यास द्वारा उद्धेत हैं। पुराणों में भी नारद पुराण, गरूड़पुराण, अग्निपुराण, विष्णुपुराण और विष्णुधर्मोत्तरपुराण में ज्योतिष का विशेष वर्णन हुआ है। नारद पुराण का त्रिस्कन्धज्योतिष तो प्रसिद्ध है। गरूड़पुराण में सामुद्रिक शास्त्र, स्वरोदय शास्त्र एवं शकुन शास्त्र का निरूपण है। अग्निपुराण तो विश्वकोश ही है। पुराणों का प्रमुख प्रतिपाद्य ज्योतिः सन्निवेश तथा भुवनकोश-वर्णन है। भागवत, विष्णु आदि पुराणों में भुगोल एवं खगोल, सूर्यादि ग्रहों की गति, शिशुमार चक्र आदि का विस्तार से वर्णन है। ऐसे ही बाल्मीकीय रामायण तथा महाभारत आदि में ज्योतिष की बहुत सी बातें आयीं हैं। महाभारत के लिए तो कहा है 'यन्न भारते तन्न भारते' अर्थात् महाभारत में सभी विषय वर्णित हैं। जो यहाँ नहीं हैं वह कहीं और भी नहीं है।

ज्योतिष के आचार्य

एक परम्परा से तो ज्योतिषशास्त्र के आचार्य के रूप में सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा प्रतिपादित हैं। उनका ज्योतिष शास्त्र पैतामहशास्त्र कहलाता है। इस ज्योतिषशास्त्र को उन्होंने नारद जी को प्रदान किया और फिर परम्परा से लोक में इसका अनुवर्तन हुआ। दूसरी परम्परा के अनुसार इस शास्त्र के उद्भावक भगवान सूर्य हैं, उन्होंने इसे मय को प्रदान किया, फिर लोक में इसका विस्तार हुआ। कश्यपसंहिता, पराशरसंहिता तथा नारदसंहिता में ज्योतिष के प्रवर्तक अठारह (मतान्तर से उन्नीस) आचार्य बताये हैं। जिनके नाम

(i) सूर्य (ii) पितामह (ब्रह्मा) (iii) व्यास (iv) वशिष्ठ, (v) अत्रि (vi) पराशर (vii) कश्यप (viii) नारद (ix) गर्ग (x) मरीचि (xi) मनु (xii) अंगिरा (xiii) रोमश (xiv) पौलिश (xv) च्यवन (xvi) यवन (xvii) भृगु (xviii) तथा शैनक।

इस प्रकार ज्योतिष का इतिहास अत्यन्त समृद्ध तथा गैरवशाली रहा है। ज्योतिषशास्त्र के संहिता, होरा तथा सिद्धान्त–इन तीनों स्कन्धों से सम्बन्ध अत्यन्त महत्त्व के ग्रंथों की रचना होती रही है। जैनाचार्यों का भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान है। होराशास्त्र के अन्तर्गत रमल, प्रश्न तथा स्वप्नविज्ञान पर भी अनेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के प्रधान आचार्यों तथा उनकी रचनाओं की एक बहुत बड़ी संख्या है जिसका पूर्ण विवरण यहाँ नहीं कर पायेंगे। ऐसे विद्वानों में से कुछ के नाम हम यहाँ अवश्य दे रहे हैं।

आर्यभट्ट–ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास इनके समय से ही मिलता है। इनका गणित ज्योतिष से सम्बद्ध आर्यभटीय तन्त्र प्राप्त है। यह उपलब्ध ग्रन्थों में सबसे प्राचीन है।

वराहमिहिर–भगवान सूर्य के कृपा पात्र ही पहले आचार्य हैं। ज्योतिषशास्त्र को सिद्धान्त, संहिता तथा होरा के रूप में स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया। तीनों स्कन्धों पर अलग-अलग रचना की।

पृथुयश–आचार्य वराहमिहिर के पुत्र हैं। इनके विरचित 'षटपंचाशिका' ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ है।

कल्याण वर्मा–इनकी लिखी सारावली होराशास्त्र का प्रमुख ग्रंथ है।

आर्यभट (द्वितीय)–इनका आर्यभटीय महासिद्धान्त नामक ग्रंथ प्रसिद्ध है।

भास्कराचार्य–वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त के बाद इनके समान प्रतिभाशाली कोई और ज्योतिर्विद नहीं हुआ। सिद्धान्त शिरोमणि तथा करणकुतुहल ये दो प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

सिद्धान्त शिरोमणि ज्योतिषसिद्धान्त का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इस पर अनेक टीकाऐं हैं। सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थ पारीगणित (लीलावती), बीज गणित, ग्रह गणित तथा गोलाध्याय इन चार भागों में विभक्त हैं। चारों भाग स्वयं से एक-एक ग्रंथ के समान हैं। लीलावती पर अनेक टीकाऐं हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि लीलावती नाम की इनकी कन्या अत्यन्त विदुषी तथा स्वरूपवती थी, किन्तु उसकी कुण्डली में अपरिहार्य वैधव्ययोग को देखकर इन्होंने उसका विवाह तो नहीं किया, किन्तु उसकी सन्तति के रूप में इस ग्रन्थ का निर्माण किया और लीलावती इसका नाम रखा।

नरपति दैवज्ञ–इनके द्वारा रचित 'नरपति जय चर्या' ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। संहिता के अन्तर्गत मुख्य रूप से शकुनशास्त्र ग्रन्थ है। इसमें स्वर के द्वारा राजाओं के शुभाशुभ फल बताये गये हैं। इसमें 6 अध्याय हैं।

काली दास दैवज्ञ–इनका ज्योतिर्विदाभरण नामक प्रसिद्ध मुहूर्तग्रन्थ है। 20 अध्याय हैं। ये रघुवंशादि काव्य के प्रणेता कविवर कालिदास से भिन्न हैं।

वैद्यनाथ–इनका 'जातक पारिजात' नामक प्रसिद्ध होरा शास्त्र का फलित·ग्रन्थ है।

गणेश दैवज्ञ–इनका इतिहास में अप्रतिम स्थान है। इनके बनाए ग्रंथ जिनमें ग्रहलाघव, तिथिचिन्तामणि, लीलावती-टीका, सिद्धान्त शिरोमणि विवृति, विवाहवृन्दावन-टीका प्रसिद्ध हैं।

दुण्ढ़िराज–जातकभरण, सुधारस करण-चषक, ग्रहलाघववोदाहरण, ग्रहकलोपपत्ति, पंचांगफल, कुण्डल्पलता आदि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। यह नृसिंह दैवज्ञ के पुत्र थे।

नीलकण्ठ—अकबर की राजसभा के प्रधान पण्डित थे। अनन्तदैवज्ञ के पुत्र तथा रामदैवज्ञ के बड़े भाई थे। ताजिक नीलकण्ठी तथा टोडरानन्द' ये दो ग्रंथ हैं।

राम भट्ट (रामदैवज्ञ)—अनन्तदेवज्ञ के पुत्र तथा नीलकण्ठ के अनुज/इनकी 'मुहूर्त चिन्तामणि' ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है।

गणेशदैवज्ञ—'जातकालंकार' नामक फलित शास्त्र का अत्यन्त प्रौढ़ ग्रन्थ है।

नारायण भट्ट—होसार सुधानिधि, ताजिकसुधानिधि, गणक प्रिया, स्वरसागर, नरजातक व्याख्या आदि ग्रंथ हैं।

जीवनाथ—भास्कराचार्य बीजगणित की टीका की, 'भाव-प्रकाश' नामक फलित ज्योतिष ग्रंथ बड़े महत्त्व का है।

इस समय में 74 ऐसे आचार्य हुए हैं उनमें से कुछ की चर्चा हम कर पाये हैं। इनके ब़ाद में काशी के कुछ आचार्य/अमूल रत्न भी हुए हैं। जैसे प. लक्ष्मीपति, कृष्णदेव, पं. लज्जाशंकर शर्मा, पं. नन्द लाल शर्मा, पं. देवकृष्ण शर्मा आदि जिनमें भ. म. पं. श्री बापूदेव.शास्त्री एक प्रसिद्ध व सम्मानित विद्वान हुए हैं। जिनकी कृतिया व भविष्यवानियाँ अविस्मरणीय हैं।

ज्योतिष जगत के सूर्य—पं. श्री सूर्य नारायण जी व्यास
(सन् 1902-1976 ई.)

इनके विषय में एक घटना है कि यह यूरोप की यात्रा कर रहे थे, ग्रीनविच की विश्वविख्यात वेधशाला देखने गये थे। वेधशाला के संचालक यह समझ गये कि ये कोई भारत के प्रभावशाली लेखक तथा विद्वान हैं इसलिए उनका आदर से स्वागत किया और विभिन्न विभाग दिखा रहे थे। अनुसंधान विभाग में एक दर्जन से अधिक विद्वान लम्बी मेज पर झुके थे और चित्रों पर तल्लीन मुद्रा में शोध कार्य कर रहे थे। संचालक ने अपनी वेध शाला का बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य बताया कि लगभग दो वर्ष से सूर्य के चारों ओर कुछ धब्बे दिखाई दिये थे और वेधशाला के दूरवीक्षण-विभाग में उन धब्बों के चित्र लिये गये थे। उन्हीं का रहस्य खोजने में लगे हुए हैं।

भारतीय दर्शक के मुख पर मुस्कान की रेखा देखकर संचालक चौंक गया और पूछा आप इस संबंध में कुछ जानते हैं। उत्तर मिला हाँ, भारत का ज्योतिषशास्त्र इस सम्बन्ध में सब कुछ जानता है। फिर दो घण्टे में यह भी बताया कि वे धब्बे कब, क्यों आते हैं। और अब कब आयेंगे। उस विभाग की खोज पूर्ण हुई। संचालक ने आग्रह किया और अपने विभाग के साथ उनका एक फोटो लिया। बाद में प्रशंसा भरे शब्दों के साथ यूरोप के समाचार पत्रों में छपा।

महर्षि सान्दीपनि के वंश से पं. सूर्यनारायण व्यास का सीधा संबंध है। इनके पिता थे श्री नारायण जी महाराज जिनके विषय में कांशी के महामहोपाध्याय कवि राज गोपीनाथ ने लिखा है कि जब नारायण जी महाराज समाधिस्थ-अवस्था में होते थे तो उनकी नाभि से कमल खिलता था और वह एक साथ दोनों हाथों से लिखते थे। एक हाथ से ज्योतिष-पंचांग का कार्य तथा एक हाथ से व्याकरण।

गुजरात में जब भूकम्प आया तो सारी दुनिया में बहस हो रही थी कि ज्योतिष का कोई विद्वान भूकम्प की पूर्व भविष्यवाणी कर सकता है। सारे चैनलों पर चर्चा हो रही थी। 1962 में असैम्बली में एक सांसद दूधोलिया साहब ने पूछा क्या कोई ऐसा यंत्र बना है, जो भूकम्प की पूर्व घोषणा कर सके।

पं. सूर्यनारायण व्यास ने सन् 1932 में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में भूकम्प पर एक लेख लिखा और एक पत्र लिखा, उसमें उन्होंने आने वाले उन भूकंम्पों की सूचि छपवा दी। उस लेख के क्रम से ही भूकम्प आये।

1934 का विश्व प्रसिद्ध बिहार भूकम्प। 1932 में उन्होंने विश्वयुद्ध की घोषणा की थी। 1924 में हर समाचार पत्र को लिखकर देना कि गाँधी जी मरेंगे नहीं मारे जायेंगे और गाँधी का वध एक ब्राह्मण करेगा।

यह भी उनकी घोषणा कि नेहरू 1946 के बाद 10 वर्ष तक राज करेंगे।

राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी लिखा था कि 'मुझे राष्ट्रपति चुने जाने पर आपका भेजा बधाई का पत्र मिला। इसके बारे में आपने बरसों पहले ही कहा था। यह तो शास्त्र की बात है।'' **विप्र वचन किमी होई असाँचा।**

स्वतंत्रता के समय निर्धारण के लिए भी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने गोस्वामी गणेश दत्त जी महाराज के माध्यम से व्यास जी को बुलवाया। पं. हरदेव शर्मा (सोलन वाले) को व्यास जी साथ लेकर गये। उसमें भारत की आजादी का बारह बजे का स्थिर भाव लग्न, नक्षत्र जिसमें इस देश का लोकतन्त्र सदा स्थिर रहेगा, निकाला।

इसी प्रकार की उनकी बहुत सी भविष्यवाणियाँ प्रसिद्ध हैं। श्री सूर्य नारायण राव (जिनके विषय में पृष्ठ 69 पर लिखा है।)

श्री डॉ. बी. बी. रमन (अध्याय 7 में पढ़ें)।

□□□

अध्याय 7

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

(यजुर्वेद सं. 25/19)

(इसमें इन्द्र, पूषा, ताक्ष्र्य तथा बृहस्पति की प्रार्थना की गई है। 28 नक्षत्रों का चतुर्थांश 90 अंश का होगा जो कि सात नक्षत्रों पर बनेगा। समस्त नक्षत्रों में मध्य भाग 14 वां नक्षत्र चित्रा है जिसका स्वामी इन्द्र है तथा उसके ठीक सामने रेवती नक्षत्र जिसका स्वामी पूषा देवता तथा चतुर्थांश दोनों ओर श्रवण एवं पुष्य नक्षत्र होंगे जिनके स्वामी क्रमशः विष्णु एवं बृहस्पति हैं। इस मन्त्र में चारों नक्षत्रों व उनके स्वामियों से शुभाशीश की कामना की गई है।)

शिक्षकों के बारे में

सन् 1950 के बाद से ज्योतिषशास्त्र के क्षेत्र में ज्ञान का विस्फोट हुआ है। इस धमाके से विस्मयजनक समाज में पहले से बहुत अधिक व्यक्ति ज्योतिष के प्रति जागरूक हो गये हैं। जो दयालु हैं, जो अपना मत आमने-सामने स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं, जिनका चरित्र अच्छा है, मद से रहित है, और अपने ज्ञान को दूसरे व्यक्तियों को बाँटने में तत्पर हों। इन सभी योग्यताओं को धारण करने वाले इस शताब्दी में दो विद्वान ज्योतिषी हैं। ये दोनों महानुभाव अपने लेख, शिक्षण व्याख्या एवं पुस्तकों की रचना के माध्यम से लाखों व्यक्तियों को ज्योतिष का ज्ञान निस्वार्थ भाव से परिश्रमपूर्वक करवा रहे है। वे सच्चे अर्थों में शिक्षक हैं। ज्योतिषशास्त्र

एक गुरुमुख विद्या हैं, यह किसी गुरु के चरणों में जाकर ही उनके आशीर्वाद से सीखी जा सकती है। केवल पुस्तकें पढ़कर कोई भी व्यक्ति अच्छा ज्योतिषी नहीं बन सकता। आइए, हम इन दोनों विद्वानों का परिचय आपसे कराएं जो विलक्षण क्षमता ही नहीं रखते हैं बल्कि वे उस ज्ञान और ज्ञान विस्फोटक के युग में अपने ज्ञान का प्रसार करके इस ज्ञान के पिपासुओं की प्यास बुझा रहे हैं। वे वास्तव में आज के युग में एक विशेष स्थान रखते हैं।

ये दोनों व्यक्ति हैं, डॉ. बी.बी. रमन और श्री के.एन. राव। डॉ. रमन अपने ज्योतिषीय ज्ञान की शिक्षा अपनी पुस्तकों, लेखों, व्याख्यानों तथा (The Astrological Magazine) द्वारा दे रहे हैं। श्री राव ने अपने सहयोगियों के साथ (जिनमें मूल रूप से श्री महेन्द्र नाथ केदार, न्यायमूर्ति शंकरनाथ कपूर, डा. ललिता गुप्ता, श्री जे.एन.शर्मा आदि के साथ) अनुसंधान कार्य एवं कक्षाओं में पढ़ाने का कार्य भी शुरू किया। उन्होंने भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आइए हम इन सभी व्यक्तियों के बार में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

डॉ. बी.बी. रमन–श्री के.एन. राव ने बी.बी. रमन को ज्योतिषीय शास्त्र के सफल शिक्षक, विशेषतः व्यवहारिक ज्योतिषशास्त्र के क्षेत्र में सर्वोपरि माना है। डॉ. रमन ने अपनी पुस्तकों के माध्यम से अंग्रेजी जानने वाले व्यक्तियों की पीढ़ियों को वैदिक ज्योतिष की शिक्षा दी है। उनकी पुस्तकें वास्तव में शिक्षक का कार्य करती हैं क्योंकि उनमें वैदिक ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन ग्रंथों का मूल पाठ उनकी सारगर्भित व्याख्या सहित बताया है, और ये ही केवल एकमात्र ऐसी पुस्तकें हैं जिनमें लिखी गई प्रत्येक बात का उस लेखक ने स्वयं परीक्षण किया है। इन्हीं दो कारणों से इनकी पुस्तकें अंतर्राष्ट्रीय जगत में प्रसिद्ध हैं और इनसे प्रेरणा व शिक्षा संबंधी निर्देश प्राप्त होते हैं। इन पुस्तकों के पुनः प्रकाशन एवं उनकी बढ़ती हुई मांग से उनकी उपयोगिता का पता लगता है। श्री के.एन. राव ने इन पुस्तकों को 3 भागों में बाँटा है–

(1) अनिवार्य पठन

(2) ऐच्छिक पठन

(3) उच्च पठन।

श्री के.एन. राव ने स्वयं इन पुस्तकों के बारे में यह कहा है–

(1) अनिवार्य पठन–(1) हिन्दू प्रेडिक्टिव एस्ट्रोलोजी (Hindu Predictive Astrology) उनकी यह पुस्तक अंग्रेजी में ही सर्वोत्तम नहीं हैं, वरन् हिन्दी में भी उपलब्ध सभी सर्वोत्तम पुस्तकों में से सबसे अच्छी पुस्तक है क्योंकि इसमें ज्योतिषशास्त्र की सभी शाखाओं का वर्णन एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो स्वयं उनसे भली-भाँति परिचित है, जो उनका प्रयोग स्वयं करता है और अपने लेखों में उनका उपयोग दर्शाता रहता है। इस पुस्तक में सारी बातें संक्षेप में व स्पष्टता से दी गई हैं। यद्यपि यह पुस्तक उन्होंने अपने जीवन में बहुत कम उम्र में लिखी थी, पर फिर भी यह पुस्तक सर्वोच्च कोटि के ग्रंथ की श्रेणी में आती हैं।

(2) ए मैनुअल ऑफ हिन्दू एस्ट्रोलोजी–Manual of Hindu Astrology यह पुस्तक भी संक्षेप में है, पर है बिल्कुल स्पष्ट। कुछ स्थानों पर यह अति संक्षेप हो जाती है। परन्तु यह पुस्तक कुछ विद्यार्थियों के लिए दुर्बोध हो जाती है क्योंकि यह जो ज्योतिषशास्त्र के गणित के रूप में इससे शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए है।

(3) ग्रह और भाव बल–गणितीय ज्योतिषशास्त्र के बारे में एक श्रेष्ठ पुस्तक, कुछ स्थानों पर सारगर्भित।

(4) तीन सौ आवश्यक योग–निःसन्देह यह वैदिक ज्योतिषशास्त्र के महान लक्षणों पर आधारित सबसे अच्छी पुस्तक है, क्योंकि इसमें यह बताया गया है कि योग कुण्डलियों में कैसे बनते हैं और उनका क्या महत्त्व होता है। साथ ही इसमें वैदिक ज्योतिषशास्त्र में योग का महत्त्व, उसकी तुलना पश्चिमी देशों के ज्योतिषियों के मूल सिद्धांतों से करके, बताया गया है।

इस पुस्तक में तीन बड़ी कमियाँ हैं। नाभस योग का बहुत सरसरी तौर पर वर्णन किया गया है, जबकि उत्तरी भारत में ज्योतिषी किसी कुण्डली

की जाँच करने के लिए इन योगों का विशिष्ट रूप से प्रयोग करते हैं। काल सर्प योग के बारे में भी और गहरे अनुसंधान की आवश्यकता थी, क्योंकि इस क्षेत्र में भी भारतीय ज्योतिषी सबसे अधिक भ्रमात्मक विश्वास रखते हैं, और यह एक आश्चर्यजनक बात है कि डॉ. रमन ने इस बारे में अपने अनुभवों से पाठकों को लाभान्वित नहीं किया। तीसरे, आजकल के संदर्भ में इन योगों का क्या अर्थ है, यह बात भी उदाहरण देकर समझाई जानी चाहिए थी।

(5) A Catechism of Astrology (ज्योतिषशास्त्र-प्रश्नोत्तरी)–यह पुस्तक बहुत छोटी है और 2 भागों में है। यह बहुत ही सुन्दर पुस्तक है।

(6) कुण्डली का निर्णय कैसे करें–How to Judge a Horoscope (2 भागों में)। इन पुस्तकों के पढ़ने से पता लगेगा कि डॉ. रमन कितनी ऊँचाई तक जा सकते हैं। *इस समय गुरु-शिष्य परम्परा के अभाव में, गुरु का ज्ञान शिक्षार्थी को सीधे ही प्राप्त न हो सकने की दशा में ज्योतिषियों को ऐसी पुस्तक की नितांत आवश्यकता थी।* उन्होंने अपनी पुस्तक का पहला भाग अकेले ही बहुत पहले ही लिखा था और दूसरा भाग अपनी प्रख्यात सुपुत्री गायत्री देवी के साथ मिलकर, अनेक वर्षों बाद लिखा था। **इन पुस्तकों के कारण डॉ. रमन को ज्योतिषशास्त्र के संसार में सबसे बड़े शिक्षक के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा। इसी पुस्तक को पढ़ने के बाद मैंने श्री के.एन. राव, डॉ. रमन को पिछले चार सौ साल का सबसे अच्छा ज्योतिषी माना है। ऐसा कार्य केवल एक महान् ज्योतिषी ही कर सकता है जो पाँच सौ से भी अधिक कुण्डलियों के अध्ययन के पश्चात् सभी 12 स्थानों के बारे में अपनी सम्मति बताए और यह बताए कि किसी कुण्डली की गहराई से जाँच कैसे की जाती है, और ठोस आधार पर अपना तकनीकी निर्णय कैसे दिया जा सकता है। श्री के.एन. राव की माताजी डा. रमन को अपना गुरु मानती थी। डॉ. रमन भी कहते थे कि पत्राचार से भी उस महिला ने संबंध बनाए रखा था।**

श्री श्री के.एन. राव का कथन है कि डॉ. रमन की अयनांश एवं नवमांश का सिद्धान्त समझने और मानने में बहुत कठिनाई हुई, फिर भी मैं इस पुस्तक के दोनों भागों को सारे संसार में **ज्योतिषशास्त्र पर लिखा गया तीसरा महान ग्रंथ मानता हूँ।** पहला ग्रंथ है—बृहत पाराशर होरा शास्त्र (केवल हिन्दी संस्करण) और दूसरा ग्रंथ है, बृहत जातक; तीसरा ग्रंथ है डॉ. रमन की पुस्तक How to Judge a Horoscope.

प्रत्येक व्यक्ति को जो ज्योतिषशास्त्र ठीक तरह से जानना चाहता है, डॉ. रमन की इन छहों पुस्तकों को बार-बार पढ़ना चाहिए।

ऐच्छिक पठन—डॉ. रमन की अन्य पुस्तकें जो ऐच्छिक पठन के रूप पढ़ी जा सकती है; वे ये हैं—

(1) भावार्थ रत्नाकर

(2) मुहुर्त अथवा Electional Astrology

(3) वर्षफल अथवा Hindu progrossed Horoscope

(4) प्रश्न तंत्र

उच्च पठन—बहुत कम ज्योतिषी ही इस शास्त्र की अन्य शाखाओं के बारे में गहराई से जानना चाहते हैं। जो व्यक्ति ज्योतिषशास्त्र में स्नातकोत्तर बनना चाहते है; रमन की निम्न चार-चार पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए, नहीं तो उनका ज्ञान अधूरा ही रहेगा।

(1) भविष्यवाणी करने का अष्टवर्गीय सिद्धांत (Ashtakvarga System of Prediction)

(2) Studies in Jamini Astrology जैमिनी ज्योतिषशास्त्र के सिद्धांत।

(3) प्रश्न मार्ग

(4) My early experiences मेरे प्रारंभिक काल के ज्योतिषीय अनुभव।

इन चौदह पुस्तकों के महत्त्व के कारण ही डॉ. रमन को सारे संसार में सर्वदा महान ज्योतिषी के रूप में याद किया जाता रहेगा। डॉ. रमन में यह गुण है कि वे प्रत्येक बात का संक्षेप में स्पष्टतः बता सकते हैं। उन्होंने

स्वयं बहुत सी कुण्डलियों की आपस में तुलना करके उनका परीक्षण किया और उनके बारे में सही स्थिति बताने का गहरा परिश्रम किया। अन्य ज्योतिषी–लेखक ऐसा नहीं कर पाते हैं। "जैमिनी ज्योतिषशास्त्र के सिद्धांत" नामक पुस्तक में उन्होंने राशि और ग्रह–बल की गणना करने के तरीके भी निकाले हैं। इसी प्रकार दि एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन के एक सम्पादकीय लेख में उन्होंने वक्री ग्रहों (Retrograde Planets) की शक्ति की गणना करने का तरीका भी बताया है। इस प्रकार के कल्पनाशील उन्नति करने की क्षमता एवं गहराई तक जाकर नई–नई पद्धतियाँ–तरीके निकालने की क्षमता किसी ऐसे महान ज्योतिषी में ही हो सकती है जिसे अपनी क्षमता पर पूर्व विश्वास एवं अधिकार हो।" यह सब कार्य डा. रमन ने स्वयं बिना किसी सहयोगी के किया।

श्री के.एन. राव–श्री के.एन. राव अपना ज्योतिषीय ज्ञान कक्षाओं में पढ़ाकर देते हैं। इस कार्य में उनके दिल्ली में सर्वप्रथम शिष्य श्री एम. एन.केदार, न्यायमूर्ति शंकरनाथ कपूर, डॉ. ललिता गुप्ता, श्री जे.एन. शर्मा, श्री आर.एन. वशिष्ठ (IAAS), डॉ. आर.के. विश्वकर्मा, आइ.इ.एस. श्री ए.बी. शुक्ल आदि अनेक साथी श्रेय के पात्र हैं। ज्योतिषशास्त्र के इतिहास की संगणना में उनका स्थान उनके इस अद्वितीय प्रयास से हजारों बुद्धिजीवियों को इस शास्त्र को सीखने के लिए आकर्षित करने और इसके अध्ययन से लाभ उठाने की प्रेरणा प्राप्त करने के कारण ही बना है। वे स्वयं एक समर्पित, बिल्कुल निःस्वार्थ भाव से शिक्षण देने वाले, एवं अपने क्षेत्र में पूर्ण ज्ञानी व्यक्ति हैं। क्योंकि वे स्वयं इस क्षेत्र का पूरा ज्ञान रखते थे और अपने ज्ञान का लाभ अन्य व्यक्तियों को भी पहुँचाना चाहते थे, क्योंकि वे सम्पूर्णतः एक आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। 1985 में भारतीय ज्योतिष परिषद (मद्रास), जिसके संस्थापक प्रधान डॉ. बी.वी. रमन थे और उपप्रधान श्री के.एन. राव, की दिल्ली शाखा की स्थापना हुई, जिसके तत्वधान में श्री महेन्द्र नाथ केदार ने जसटिस शंकर नाथ कपूर के साथ विधिवत् कक्षाओं में पढ़ाने का कार्य अगस्त 1987 में आरम्भ हुआ जबकि 10 विद्यार्थियों ने भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली की ज्योतिष प्रवीण की कक्षाओं में अपना नाम लिखाया। तभी से ये कक्षाएँ लगातार चल रही हैं और इतनी लोकप्रिय

हो गई हैं कि जून 1993 में 100 स्थानों के लिए लगभग 300 आवेदक आए थे, और वहाँ बैठने के स्थान को ध्यान में रखते हुए 225 विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जा सका। ये कक्षाएँ सारे संसार में ज्योतिशास्त्र सिखाने के बारे में लगाई गई प्रथम कक्षायें थीं।

भारत के ही अन्य भागों में, यदि 1 दर्जन व्यक्ति भी किसी एक वर्ष में इसकी शिक्षा पान के लिए तैयार किए जा सकें तो उसे एक पराक्रम का कार्य माना जाता था। दिल्ली में भी अन्य कोई व्यक्ति ऐसी कक्षाएँ आयोजित नहीं कर सका। यह कक्षाएँ दिसम्बर 1994 तक बिना किसी व्यवधान के चलती रही, तत्पश्चात कुछ अवांछनीय कारणों से भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद (चेन्नई) के दिल्ली चैप्टर को अपनी कक्षाएँ अलग लगानी पड़ीं जो कि जनवरी 1985 से पूषा रोड, रूप नगर, मधु विहार (यमुनापुर) एवं हरिनगर, साकेत, फरीदाबाद, नोएडा तथा गुड़गाँव आदि स्थानों पर चल रही हैं। भारतवर्ष में 35 स्थानों पर आज कक्षाएँ चल रही हैं।

श्री के.एन. राव अपने स्वयं के जीवन में एक अपूर्व एवं असाधारण व्यक्ति बन गए हैं। इसके कारण हैं, उनकी बुद्धि-चातुरी, नम्रता, अपने ज्ञान की गहराई और उनकी आध्यात्मिक शक्ति, जिसके कारण वह निःस्वार्थ भाव से सारी बातें स्पष्ट कहने की क्षमता रखते हैं। ये ऐसे शिक्षक है जो बड़े से बड़े ग्रंथ की महत्त्वपूर्ण बातों को कल्पित कथाओं द्वारा ऐसे समझा देते हैं जो उनके विद्यार्थियों के स्तर के अनुकूल रहे, वे विद्यार्थी चाहे नौसिखिया प्रवीण कक्षा के हों, चाहे उच्च ज्ञान प्राप्त करने वाले विशारद, कक्षा के हों और चाहे इस शास्त्र के गहन अनुसंधानकर्ता अथवा इस विषय के अनुभवी विद्वान। उनके द्वारा की गई अपीलें, अनुरोध ठोस तर्क पर आधारित होती हैं, इसी कारण से सैकड़ों डॉक्टर, इंजीनियर विद्वत परिषद् के सदस्य, अफसर, पत्रकार, वकील, बैंक अधिकारी आदि इन कक्षाओं में प्रवेश पाने को आतुर रहते हैं और इनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। ज्योतिषशास्त्र के इतिहास में श्री के.एन. राव का अभूतपूर्व एवं असाधारण व्यक्तित्व ही उन्हें इस श्रेणी में ला सका है।

आइए, महान यज्ञ में समर्पित अन्य प्रसिद्ध महानुभावों के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त कर लें।

स्व. श्री आर.एन. वशिष्ठ (IAAS, M.Sc Physics)–'सिद्धांत' विषय में विशेषज्ञ और कक्षाओं के निदेशक। **श्री महेन्द्र नाथ केदार**, अध्यक्ष दिल्ली शाखा, जिनके लेख इस पुस्तक में लिए गए हैं। एक विशिष्ट अध्यापक और विवाह संबंधी मामलों, बच्चों की शिक्षा तथा व्यवसाय के विषयों में फलित करने की, शोधकर्ता में दक्षता प्राप्त। इनकी फलित पर अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हैं जो बहुत लोकप्रिय हुई हैं। **डॉ. (श्रीमती) ललिता गुप्ता**, एक एम.बी.बी.एस. डॉक्टर, आयुर्विज्ञान ज्योतिषशास्त्र (Medical Astrology) की शिक्षक हैं। वे एक विद्वान ज्योतिषी तथा अत्यंत नम्र स्वभाव एवं बहुत प्रतिष्ठित महिला हैं। **श्री जे.एन. शर्मा**, एक विशिष्ट अध्यापक, धार्मिक प्रवृत्ति वाले, समर्पित एवं प्रश्न ज्योतिषशास्त्र में निपुण तथा विशेषज्ञ हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ विलक्षण होती हैं और सही उतरती हैं। वे सीधे-सादे, विनम्र प्रचार से दूर भागने वाले व्यक्ति हैं और ये ही इनके विशिष्ट गुण हैं। ये पाँच विद्वान अपनी योग्यता में श्रेष्ठ प्रमाणित हो चुके हैं और भारतीय विद्या भवन की कक्षाओं के केन्द्र बिन्दु आज ICAS की कक्षाएँ देशभर में चला रहे हैं। अब इनके साथ और भी अनेक बुद्धिमान ज्योतिषी सम्मिलित हो गए हैं। आज सन् 2002 में शिक्षकों की संख्या केवल दिल्ली में 60 हो चुकी है। इस क्षेत्र में संलग्न एक प्रतिष्ठित अभ्यागत शिक्षक (Visiting Teacher) जसटिस श्री एस.एन. कपूर भी हैं जो इस विज्ञान के वास्तव में पंडित हैं और विद्वान भी है। उनके लिखे दो अध्याय भी इसी पुस्तक में दिए गए हैं। इस उपर्युक्त टीम ने भारतीय विद्या भवन में ज्योतिषशास्त्र की कक्षाओं को इतना आकर्षक एवं लोकप्रिय बनाया है कि अब किसी भी समय इसमें विद्यार्थियों की संख्या 500 से भी अधिक होती है। आइ. कास. के दिल्ली केन्द्रों की संख्या जो आज एक हजार विद्यार्थियों की है जोड़ी जाए तो उन वैज्ञानिकों को जो ज्योतिष की शिक्षा दिये जाने का विरोध सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल किये हैं सिर शर्म से झुक जाना चाहिए।

वे विभिन्न ज्योतिषीय पत्रिकाओं में उत्तेजनापूर्ण लेख लिखने वाले सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। वे एक असाधारण वक्ता हैं जो सूक्ष्म रूप से विवेचना एवं आलोचना वाले व्यक्तियों को एक दम अपने विचारों से सहमत कराते हैं और अंत में ऐसे व्यक्ति उनके तर्कों को सुनकर उनकी प्रशंसा करते हैं। ज्योतिषियों के इस अहंकारी युग में केवल ये ही ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने सारे जीवन में किए अनुसंधान कार्य को निःसंकोच दूसरे व्यक्तियों को बताते हैं, उन्हें अपने लेखों व पुस्तकों में उनके परिणामों का प्रयोग करने की छूट देते हैं। वे एक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं क्योंकि वे, ज्योतिषशास्त्र के इतिहास में पहली बार, प्रतिकृति तकनीक Replicable Techniques बता रहे हैं जो कठोर संगठना एवं वैज्ञानिक परीक्षण में सही उतरे हैं। श्री के.एन. राव ने अनेकों पुस्तकें ज्योतिषशास्त्र पर लिखी हैं।

अन्य लेखकों का परिचय

ए टैक्स्ट बुक ओन वर्षफल–डॉ. के एस. चरक–ताज़िक पद्धति के अनुसार, वर्षफल बनाने के बारे में यह पहली पुस्तक है, इसमें उदाहरण देकर पूरी तरह से समझाया गया हैं।

सोलह ताजिक योगों के समझने में जो शंकाएँ पैदा हो जाती हैं, उन्हें दो नई पद्धतियाँ बताकर स्पष्ट किया गया है ताकि किसी प्रकार की कोई शंका न रहें।

एक वर्ष में स्पष्ट तौर से वर्षफल देखने से यह पता लग जाता है कि कौन–सा समय आपके लिए अच्छा आ रहा है और कौन–सा बुरा समय आ रहा है। आप अपने कार्यकलापों में उसी प्रकार या तो तेजी ला सकते हैं अथवा उन्हें आगे के लिए स्थगित कर सकते हैं या टाल सकते हैं।

प्रोफेशन, इन्कलीनेशन, फ्रक्टीफिकेशन एंड कैरियर प्रोफाइल–कर्नल ए.के. गौड।

इस पुस्तक के बारे में श्री के.एन. राव ने कहा है–यह पुस्तक व्यवसाय के क्षेत्र में अभी तक किसी पुस्तक के अभाव में, बहुत महत्त्वपूर्ण एवं लाभदायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में व्यवहार में लाने योग्य भविष्यवाणी करने की तकनीकें समझाई गई हैं इन तकनीकों को प्रतिरूपेण पद्धति द्वारा सही आंका जा सकता है। विभिन्न व्यवसायों के बारे में ये तकनीक पद्धति कैसे कार्य करती है, इसे 41 उदाहरणों द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया है।

इस पुस्तक से आपको पता लगेगा कि धीरे-धीरे, एक-एक सीढ़ी चढ़कर आप प्रसन्नतादायक भविष्यवाणी कैसे कर सकते हैं। इससे आप किसी कुण्डली का विश्लेषण करके यह पता लगा सकते हैं कि–

– उस व्यक्ति की रूचि किस व्यवसाय की ओर जाने की है।
– उसकी उन्नति का समय कौन-सा है, और किस स्तर तक उसकी उन्नति होगी।
– उसमें लेख लिखने की क्षमता कितनी है।

इसमें आपको अपनी भविष्यवाणी करने की कला को तेज़ करने के लिए अष्टक वर्ग एवं जैमिनी सूत्रों की विभिन्न प्रणालियों को एक समान बनाने के साधारण तरीकों की जानकारी मिलेगी।

टाइमिंग ऑफ मैरिज–एक अनूठा एवं सर्वश्रेष्ठ शोध है। श्री महेन्द्रनाथ केदार, डॉ. (श्रीमती) ललिता गुप्ता, न्यायमूर्ति एस.एन. कपूर, श्री जे.एन. शर्मा द्वारा किया गया।

इसमें विंशोत्तरी दशा तथा ग्रहों के भ्रमण की गति से शादी का अनुमानित समय निकालने की विधि बताई गई है। शादी का समय निश्चित करने में ताजिक योग का लाभ कैसे उठाया जाता है, यह भी इसमें स्पष्ट किया गया है। इसमें सप्तांश का प्रयोग शादी का समय निश्चित करने में कैसे किया जाता है, इसकी अनूठी तकनीक डॉ. ललिता गुप्ता द्वारा बनाई गई है। इसमें श्री के. रंगाचारी द्वारा जैमिनी पद्धति से विवाह समय निर्धारण का भी अध्याय जोड़ा गया है।

हम सभी के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना कार्य समर्पित होकर, मेहनत से तथा नम्रता से करें। हम सभी उस इतिहास के अंग है जो अभी बन रहा है।

(i) जन्मपत्री का चित्रण एवं गतिशील संरूपण।

(ii) नवग्रह एवं द्वादश भाव।

(iii) भावनिर्णय एवं दशा व गोचर द्वारा समय निर्धारण।

(iv) फलित ज्योतिष।

(v) वर्षफल एवं भविष्य।

(vi) वर्षफल।

(vii) वास्तु शास्त्र।

(viii) संहिता ज्योतिष।

उपरोक्त पुस्तकों में श्री महेन्द्रनाथ केदार ने अपने ज्योतिषीय अनुभवों के भण्डार को पाठकों को समर्पित किया है।

1987 से आज 2014 तक कितने विद्वान लेखक शिक्षक देश में हो गए हैं यह सब 'आइ कास' के देशभर में 35-40 केन्द्रों का कार्य फल है। आज देश-विदेश में ज्योतिष शास्त्र को पुन: एक सम्मानित स्थान प्राप्त हो चुका है। अधिकतर व्यक्ति चाहे डाक्टर हों, इंजीनियर हो, व्यापारी हो, यहाँ तक कि राज नेता भी खुल कर ज्योतिष शास्त्र से मार्गदर्शन ले रहे हैं। शिक्षा प्रतिष्ठानों में भी इसकी शिक्षा अनिवार्य हो गई है। परन्तु भारत सरकार ने अभी इसके शोध के लिए कदम नहीं उठाये हैं।

□□□

अध्याय 8

अवताराण्यनेकानि अजस्य परमात्मनः।
जीवानां कर्मफलदो ग्रहरूपो जनार्दनः।।

(भगवान के असंख्य अवतार हुए हैं जिसमें जनार्दन नामक भी एक अवतार है अर्थात् ग्रह भी भगवत् रूप है जो जीव को उसके कर्मों का फल प्रदान करते हैं।)

भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प

कर्म विचार

"कोई भी व्यक्ति जो संकल्प करता है, उसे पूरा कर सकता है, पर वह व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं का संकल्प नहीं कर सकता।"

—शोपेन हॉवर

प्रत्येक व्यक्ति सदा से भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प के आपसी संबंध के बारे में विचार करता आया है। प्रश्न यह है कि क्या प्रत्येक व्यक्ति केवल एक असहाय दर्शक की भाँति मनुष्य है जो उसके सामने होने वाली घटनाओं को बस देखता रहता है और उसकी प्रतिक्रिया केवल पूर्व निर्धारित व्यवहार के रूप में होती है। क्या वह केवल एक कठपुतली की तरह भाग्य की डोरी के सहारे जैसे वह नचाए, नाचता रहता है। अथवा क्या वह अपने भाग्य का ढांचा बदल सकता है? यह एक मनोरंजक और अनन्त काल

तक चलने वाला वाद-विवाद का विषय है। आइए, हम इन दोनों पक्षों पर गूढ़ता से विचार करें। पहले भाग्य को लेते हैं–

भाग्य–क्या भाग्य नाम की कोई चीज होती है? अथवा यह केवल एक पर्दा-बहाना है, जिसके सहारे चतुर व्यक्ति, छली-कपटी व्यक्ति अथवा निर्बल संकल्प-शक्ति वाले मनुष्य अपने बुरे कारनामों को छुपाते हैं और अपनी त्रुटियों के लिए ईश्वर अथवा कर्म को दोषी ठहराते हैं कि हमारे भाग्य में यही लिखा था। क्या हम भाग्य को दोषी ठहराकर अपनी जिम्मेवारियों से मुक्त हो जाते हैं और अपनी गलतियों का निराकरण केवल यह स्पष्टीकरण देकर कर लेते हैं कि उन्होंने जो किया, वह भाग्य अथवा प्रकृति ने करवाया? इस तर्क का परीक्षण निम्न बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है।

(क) नियत कार्य तथा जीवन–यह ब्रह्मांड अदृश्य रूप से, उलझाने वाले ढंग से, पर बहुत सावधानी से चलाया जा रहा चक्र है। यह चक्र बहुत सरलता से चलता है क्योंकि इसके प्रत्येक मौलिक अंश को एक विशिष्ट कार्य सौंपा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म, उसके कार्यों के अनुसार निर्धारित किसी विशिष्ट कार्य को सम्पन्न करने के लिए ही होता है। उसी कार्य निर्धारण को भाग्य कहते हैं।

(ख) जन्म–प्रत्येक मनुष्य का जन्म जिन परिस्थितियों में एवं वातावरण में होता है, वे सब पहले से निश्चित होते हैं। यही भाग्य है कि किसी व्यक्ति का जन्म ऐसे घर में होता है कि उसे सब लोग जन्म से ही भाग्यवान मानते हैं, और इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे गरीब घर में जन्म लेते हैं, जहाँ दो जून की रोटी के लाले पड़े रहते हैं।

(ग) घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी–यदि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में होने वाली घटनाएँ पहले से निश्चित न हों तो कोई भी ज्योतिषी उनके बारे में भविष्यवाणी नहीं कर सकता। यही तथ्य कि कुछ बातों अथवा घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। यह ही इस बात की पुष्टि करता है कि 'भाग्य' भी कोई चीज़ है।

अब आइए, निम्न श्लोक को देखिए जो कि एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन के सबसे ऊपर छपा होता है–

फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।
को वक्ता तार तम्यस्य तमेकम वेधसम बिना।।

अर्थात् जिन व्यक्तियों को ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान होता है, वे भविष्य में क्या होने वाला है, इस बात की ओर केवल इशारा कर सकते हैं। परंतु सिवाय ब्रह्मा के, कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि अवश्यमेव रूप से क्या होगा।'' इस व्याख्या में भाग्य को यथोचित स्थान दिया गया है।

आपको मानना होगा कि कोई शक्ति ऐसी है जो मनुष्यों के जीवन को राह बताती है और मनुष्य को उस राह पर चलना ही होता है। वैदिक ज्योतिषशास्त्र में इसके बारे में एक बड़ा बुद्धिमत्ता पूर्ण कदम उठाकर यह कहा जाता है कि यह शक्ति है कर्म। हमारा वर्तमान हमारे भूतकाल के कर्मों पर आधारित होता है और हमारा भविष्य उन कर्मों पर आधारित होगा जो हम वर्तमान में कर रहे हैं।

आइए अब हम **स्वतंत्र संकल्प अथवा इच्छा शक्ति** के बारे में विचार करें। इस बारे में आधारभूत सिद्धांत यह है कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो कर्म करने से बच नहीं सकता; उसे हर समय कुछ न कुछ कर्म करना ही पड़ता है। यदि उसे जीवित रहना है तो कुछ ने कुछ कर्म करना ही पड़ेगा, पर कोई मनुष्य क्या कर्म करे, यह बात निश्चित करने के लिए प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्र है। वास्तव में स्वतंत्र संकल्प अथवा इच्छा शक्ति कहना गलत है। क्योंकि यहाँ प्रत्येक मनुष्य कर्म करने के बारं में स्वतंत्र रहता हुआ भी किसी न किसी सीमा में बंधा हुआ रहता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, यह ब्रह्मांड बहुत पेचीदा ढंग से पर बहुत सावधानी से चलाया जा रहा चक्र है और प्रत्येक मनुष्य को विशिष्ट कार्य सौंपा गया है। इस प्रकार हमारे क्रियाकलाप, अन्य व्यक्तियों के कार्यकलापों की सीमा से बंधे रहते हैं। यह संसार शांति के साथ एक-दूसरे से मिलकर रहने का स्थान है और इसी प्रकार शांति के साथ एक-दूसरे से मिलकर रहने के लिए

हमें किसी न किसी सीमा में बंधा रहना पड़ता है। इन परिस्थितियों में ज्योतिषशास्त्र की आवश्यकता अनुभव होती है और यह शास्त्र भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प के उस पेचीले संबंध के बारे में स्थिति स्पष्ट करता है और मनुष्य को जागरूक बनाता है। देखिए, यदि प्रत्येक चीज़ भाग्य में लिखे अनुसार होती है अथवा पहले से निश्चित कर दी गई है, तो फिर ज्योतिषशास्त्र की आवश्यकता ही क्या रह जाती है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम केवल यह देखते रहें कि एक के बाद एक कौन सी घटना होती है। दूसरी ओर यदि हमारी स्वतंत्र संकल्प-शक्ति किसी भी सीमा से बंधी हुई नहीं है तो प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छानुसार सभी चीज़ें प्राप्त क्यों नहीं कर लेता है। तब तो, उसे केवल कर्म करते रहना चाहिए, जब तक कि उसे मनोवांछित वस्तुएँ प्राप्त न हो जाएँ। वास्तव में हमारे जीवन में उपर्युक्त दोनों बातों में से कोई भी एक बात सही नहीं होती है। ज्योतिषशास्त्र इस प्रश्न का उत्तर देता है कि ऐसा क्यों हैं। इस शास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की सीमाओं का अध्ययन किया जा सकता है, ताकि किसी भी व्यक्ति का किसी एक कार्य-विशेष को करने के लिए कौन-सा समय सबसे अच्छा है, इस बात का पता लगाया जा सके।

ज्योतिषशास्त्र यह भी बता सकता है कि कौन व्यक्ति विशेष को उसके जीवन में कौन-सा विशिष्ट कार्य उसके भाग्य द्वारा निर्धारित किया गया है और उस कार्य को उच्च सीमा तक पूरा करने का सबसे अच्छा समय कौन-सा होगा। इस प्रकार वह व्यक्ति उसे सौंपे गए कार्य को उस समय के दौरान तेजी से करके, शांतिपूर्ण तरीके से आनन्द उठा सकता है।

इसी बात को एक उदाहरण द्वारा स्पष्टतः समझाया जा सकता है। मान लीजिए, एक गाय को एक रस्सी द्वारा खूंटे से बांध दिया गया है। यहाँ पर वह खूंटा भाग्य के रूप में है। गाय इस खूंटे का कुछ भी नहीं कर सकती है। यहाँ रस्सी, स्वतंत्र संकल्प-इच्छा शक्ति का प्रतीक है। यह रस्सा कितना लचीला और लम्बा है, यह बात किसी मनुष्य के भूतकाल में किए गए और वर्तमान काल में किए जा रहे कर्मों से निश्चित की जाती है। वह गाय जहाँ तक उसका रस्सा लम्बा जाता है, वहाँ तक कहीं भी

घूमने के लिए स्वतंत्र है। यदि उसके पास कोई गड्ढा हैं, तो वह उसमें गिर भी सकती है और चाहे तो सावधानीपूर्वक उस गड्ढे से बची भी रह सकती है। यही हाल प्रत्येक मनुष्य के जीवन का है।

हमने ऊपर देखा कि सभी प्राणियों के लिए कोई न कोई चीज़ पहले से निर्धारित है। हमने यह भी देखा कि प्रत्येक मनुष्य की स्वतंत्र संकल्प-इच्छा शक्ति होती है, पर वह हमारे कर्मों के अनुसार सीमा से बंधी रहती है। यहाँ पर समझने योग्य बात यह है कि हमारी प्रकृति, प्रवृत्तियाँ, दृष्टिकोण उस सीमा से बंधी रहती हैं जो हमारे पिछले कर्मों के अनुसार हमें प्राप्त हुई है। हमारी स्वतंत्र संकल्पशक्ति ही वह साधन है जिससे हम अपने कार्यकलाप एवं कर्म की ओर अग्रसर होते हैं और इसके साथ ही हम अपने भविष्य के कर्मों को सीमा से बांधते चलते हैं। ये दोनों बाते एक-दूसरे पर आश्रित हैं। मनुष्य न तो प्रकृति का दास ही है और न ही अपना भविष्य बनाने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र है।

यह भाग्य एवं स्वतंत्र कल्पना शक्ति के बारे में सिद्धांत का स्पष्टीकरण है। विद्यार्थियों के लाभ के लिए श्री के.एन. राव ने सबसे पहली बार इस विषय को ज्योतिष के साथ सम्मिलित किया है। विद्यार्थियों को इस विषय पर और आगे गहनता से विचार करने के लिए श्री के.एन.राव के "भाग्य पर विश्वास क्यों?" अध्याय 11 का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

अनुलेख—मुझे यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री नानी.ए. पालकीवाला ने, जो सबसे तीव्र समालोचक, बुद्धिमान, विधि के क्षेत्र में असाधारण योग्यता रखते हैं, सारे संसार में अर्थशास्त्र के आदरणीय ज्ञाता, एवं हमारे भारत के अमेरिका में पूर्व राजदूत हैं, अपनी पुस्तक वी दि नेशन में **We the Nation** में इस बारे में भी कुछ कहा है। यह पुस्तक सन् 1994 ई. में प्रकाशित हुई है। उस पुस्तक की प्रस्तावना का शीर्षक है "क्या हम अपने भाग्य के संचालक हैं। इसमें विलक्षण रूप से अनेक स्थानों पर ऐसे वक्तव्य दिए गए हैं जो यहाँ सारांश के रूप में बिल्कुल सही बैठते हैं। मैं उन्हें यहाँ मूल रूप में, अपनी कोई टिप्पणी दिए बिना, उद्धृत कर रहा हूँ।

"I believe that the basic pattern of an individuals or of a nation's life is predtermined... There is existence of free will but that is again within the preordained parameters. The case is similar to that of a dog on a long leash-the dog has the freedom to move about as far as the leash permits, anything which science cannot prove, I admit that sceptisism is healthy... However there are incontrovertible examples of authentic happenings and phenomena which science is wholly unable to explain."

..........unable to eplain

इसका शब्दार्थ इस प्रकार हो सकता है–

''मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ कि किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र का मूलभूत ढांचा पहले ही निर्धारित किया गया होता है......इसके साथ ही स्वतंत्र-इच्छाशक्ति भी कार्य करती है, पर वह शक्ति भी उस पहले से निर्धारित सीमा के अन्दर रहते हुए कार्य करती है। यह बात उसी तरह से है, जैसे किसी कुत्ते को एक लम्बी जंजीर से बांध कर रखा गया हो। वह कुत्ता उसी दायरे में जा सकता है, घूम सकता है जितनी लंबी उसकी जंजीर है। पर उससे आगे वह नहीं जा सकता है। ....आजकल यह एक फैशन हो गया है आप किसी भी ऐसी चीज़ पर विश्वास नहीं करते जो विज्ञान द्वारा सिद्ध न कर दी गई हो। मैं यह मानता हूँ कि ऐसा अविश्वास करना भी एक स्वस्थ विचार का लक्षण है।....... पर दूसरी ओर ऐसे निर्विवाद उदाहरण हैं, जहाँ पर ऐसी सटीक घटनाएँ तथा देखी गई वस्तुएँ हैं, जिनके बारे में विज्ञान में कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता है।''

यह अनुलेख उसी पुस्तक के पृष्ठ 243 से एक ओर उदाहरण देकर समाप्त करते हैं।

The sense of the mysterious is the hallmark of perfectly educated man who has earned to strike his spiritwide awake.

अर्थात् यह गुप्त सत्ता पूर्ण रूप से उन विद्वान मनुष्यों का अपना अनुभव है, जो पवित्र आत्मा से अपनी बुद्धि के अनुसार ही कोई बात कहते हैं।

कर्म-मीमांसा

एक बार हिमालय पर्वत पर विराजमान भगवान शंकर से पार्वती जी ने पूछा—भगवन्! आपने बताया कि मनुष्यों की जो भली-बुरी अवस्था है, वह सब उनकी अपनी ही करनी का फल है. किन्तु लोक में यह देखा जाता है कि लोग समस्त शुभाशुभ कर्मों को ग्रहजनित मानकर प्राय: उन ग्रहों-नक्षत्रों की ही आराधना करते रहते हैं।

श्री महादेव जी बोले—

"स्थाने संशयितं देवि श्रुणु तत्त्वविनिश्यम्"
नक्षत्राणि ग्रहाश्चैव शुभाशुभनिवेदकाः।
मानवानां महाभागे न तु कर्मकराः स्वयम्॥
प्रजानां तु हितार्थाय शुभाशुभविधिं प्रति।
अनागतमतिक्रान्तं ज्योतिश्चक्रेण बोध्यते॥
किंतु तत्र शुभं कर्म सुग्रहैस्तु निवेद्यते।
दुष्कृतस्याशुभैरेव समवायो भवेदिति॥
केवलं ग्रहनक्षत्रं न करोति शुभाशुभम्।
सर्वमात्मकृतं कर्म लोकवादो गृह्य इति॥

देवि! तुमने उचित सन्देह उपस्थित किया है। इस विषय में जो सिद्धांत मत है, उसे सुनो ! महाभागे। ग्रह और नक्षत्र मनुष्यों के शुभाशुभ सूचनामात्र देने वाले हैं। वे स्वयं कोई काम नहीं करते। प्रजा के हित के लिए ज्योतिष चक्र के द्वारा भूत और भविष्य के शुभाशुभ फल का बोध कराया जाता है किन्तु वहाँ शुभ कर्मफल की सूचना उत्तम (शुभ) ग्रहों द्वारा प्राप्त होती है और दुष्कर्म के फल की सूचनां अशुभ ग्रहों द्वारा। केवल ग्रह और नक्षत्र ही शुभाशुभ कर्मफल को उपस्थित नहीं करते। सारा अपना ही किया हुआ कर्म शुभाशुभ फल का उत्पादक होता है। ग्रहों ने कुछ किया है—यह कथन लोगों का प्रवाद मात्र है।

(महा. अनु. अ. 145)

□□□

अध्याय 9

कर्म-सिद्धांत

वैदिक ज्योतिषशास्त्र भ्रम में फंसे, दबे हुए, कमजोर एवं निस्सार व्यक्तियों को निडर बनने की प्रेरणा देता है। वेदों की शिक्षा है 'निडर बनो।' हमारे सभी देवी-देवता अभय होने का आशीर्वाद देते हुए अभय मुद्रा में दिखाई देते हैं। उपनिषदों की शिक्षा है। ''डरपोक लोग मोक्ष के अधिकारी नहीं बन सकते।'' हम मृत्यु से डरते हैं, हम अपने दुर्भाग्य से डरते हैं। हम किसी अनजान वस्तु से भी डरते हैं, इस प्रकार हम सभी चीजों से डरते हैं, सदैव डरे हुए रहते हैं। कर्म सिद्धांत प्रत्यक्ष रूप से यह विश्वास दिलाता है कि यह संसार-चक्र ईश्वर के द्वारा बिल्कुल ठीक तरीके से, बहुत सोच-विचार के बाद बनाया गया है। इसके बाद हम यह अनुभव करने लगते हैं कि यह सारा संसार ईश्वर द्वारा बहुत योजनाबद्ध रूप से बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से रचा गया है। हम उस परमशक्ति परमात्मा के द्वारा चलाए जा रहे नाटक में एक पात्र की भाँति उसी की इच्छा के अनुसार कार्य कर रहे हैं।

कर्म-सिद्धांत के तीन स्तम्भ हैं, वे यह हैं-

(i) पुनर्जन्म

(ii) कर्मयोनि मनुष्य कर्म करने से बच नहीं सकता। यह सम्भव ही नहीं है कि कोई मनुष्य कर्म न करें।

(iii) **कर्म का प्रतिफल**-अपने कर्मों का फल (अच्छा या बुरा) अवश्य मिलता है। केवल इसी प्रकार से कर्म-चक्र चलता रहता है एवं उसका परिणाम मिलता रहता है। स्मृति में कहा गया है-

अवश्यमनु भोक्तव्यसं कृतं कर्म शुभाशुभम।
ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि॥

''प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों का अच्छा या बुरा फल अवश्य भोगता है; किसी भी परिस्थिति में बिना भोगे अच्छा या बुरा फल कम नहीं हो सकता।''

उपर्युक्त तीनों स्तम्भ बहुत संक्षेप में, पर स्पष्ट रूप से मनुष्यों को किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तथा किसी भी प्रकार के डर को निकाल-फेंककर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी बना देते है। सारा ज्योतिषशास्त्र पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर आधारित है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार किसी व्यक्ति की कुण्डली देखकर उसके भूतकाल के बारे में बताया जा सकता है और भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। ऐसा किसी व्यक्ति के कर्मों की गति को देखकर बताया जाता है।

यह कर्मों की गति बड़ी चतुरता से प्रत्येक कुण्डली में गूंथी गई है जो स्पष्ट दिखाई दे जाती है। इसी प्रकार कुण्डली से यह पता लगता है कि उस व्यक्ति के भोग्य कर्मफल की शेष राशि जो वह प्रारब्ध में लाया है तथा उसके वर्तमान जीवन का ध्येय या अभिलाषा। यह कैसे होता है आइए देखें। -

हम सब इस ब्रह्मांड के प्रतिरूपक हैं। यह ब्रह्मांड पंचतत्त्व अर्थात् अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश से मिलकर बना है। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य का शरीर भी इन्हीं पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है। इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने हमारा ढांचा, स्वरूप ऐसा बनाया है जो बड़े स्वरूप का छोटा प्रतिबिंब है, ताकि हम अपना योगदान उसके अनुकूल कर सकें। प्रत्येक मानव की अपनी इच्छाएँ होती हैं, और वह उन्हें पूरा करने का प्रयत्न करता है।

यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे हम में से प्रत्येक व्यक्ति के विचार, इच्छाएँ अलग-अलग होती हैं और प्रत्येक वस्तु या घटना के प्रति हमारी प्रतिक्रिया भी अलग-अलग होती है। हमारे कार्मिक ढांचे का बाहरी रूप (है तथा

जो हमारी) आन्तरिक प्रवृत्तियों को भी दर्शाता है जिसके कारण हम पूर्व जन्मों के फल भोगते हैं तथा कर्म करके मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होते हैं। प्रत्येक कुण्डली को हम चार भागों में बाँटते हैं–

(1) धर्म

(2) अर्थ

(3) काम

(4) मोक्ष।

प्रत्येक कुण्डली में पहला, पाँचवा और नवां स्थान धर्म का (धर्म त्रिकोण 1, 5, 9) होता है, दूसरा, छठा और दसवां अर्थ का (अर्थ त्रिकोण 2, 6, 10); तीसरा, सातवां और ग्यारहवां स्थान काम का (काम त्रिकोण 3, 7, 11); और चौथा, आठवां एवं बारहवां स्थान मोक्ष का (मोक्ष त्रिकोण 4, 8, 12) होता है। इन स्थानों पर जो ग्रह तथा नक्षत्र होंगे, वे उस व्यक्ति के कर्मों की गति स्पष्ट करते हैं। यदि किसी व्यक्ति के अधिकतर ग्रह व नक्षत्र अर्थ व काम स्थानों में बैठे हैं तो उस व्यक्ति की इच्छाएँ व प्रवृत्ति उसी तरफ अधिक होगी और उसकी इच्छाएँ व अर्थ रूपए-पैसे संबंधी कार्य उसी समय पूरे होंगे जबकि उस कुण्डली की गणना के अनुसार ठीक समय आएगा। उस अच्छे समय के दौरान वह अपनी इच्छाएँ अच्छी तरह से पूरी करेगा। इस प्रकार किसी भी कुण्डली से उस व्यक्ति की प्रवृत्ति व उस प्रवृत्ति के लिए सबसे अच्छा समय कौन-सा है, यह पता चल जाता है। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति धर्म व मोक्ष प्राप्ति चाहता है, तो उसकी कुण्डली के अच्छे ग्रह धर्म व मोक्ष वाले स्थानों पर अवश्य बैठे होंगे। इसके अतिरिक्त और भी अन्य प्रकार से ग्रहों को स्थिति हो सकती है।

फिर भी, प्रत्येक कुण्डली में पांचवा एवं नवां स्थान जो धर्म का होता है, बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं।

पांचवा स्थान–इस धर्म स्थान से हमारे पिछले कर्मों के संबंध का भी पता लगता है। क्योंकि इसी स्थान से यह पता लगता है किसी मनुष्य की अभिलाषा अथवा लक्ष्य क्या है। अतः इसे पूर्व जन्म के पुण्य का स्थान भी कहा जाता है।

नवां स्थान–यह धर्म स्थान पांचवे स्थान से पांचवा होता है। इससे यह पता लगता है कि किसी व्यक्ति का वर्तमान जीवन में किस तरफ झुकाव रहेगा। इस प्रकार इससे हमारे भविष्य के जीवन का भी पता लगता है कि वह कैसा होगा।

हमारे कर्मों का तीन भागों में वर्गीकरण किया जाता है। ये हैं–**प्रारब्ध, संचित एवं आगामी (क्रियमान)**। संचति कर्म वे हैं जो हम पहले ही कर चुके हैं और वर्तमान में हम उनके फलों को प्राप्त करने का इंतजार ही कर रहे हैं। चूँकि ये कर्म पहले ही किए जा चुके हैं अतः अब हम इन कर्मों के बारे में कुछ नहीं कर सकते हैं। गीता में भी कहा गया है कि हमारा कार्य केवल कर्म करने का है, हम उनकी गुणवत्ता, अधिकता व क्रम संख्या अथवा उनके परिणाम के समय के बारे में कुछ नहीं कर सकते हैं। संचित कर्म वे होते हैं जो कि हमें अपने भाग्य से संबंध बताते हैं। यदि हम पिछले अध्याय "भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प" पर दृष्टिपात करें तो हमें याद होगा कि संचित कर्म वे कर्म हैं जिनसे हमारा भाग्य बना है।

प्रारब्ध कर्म वे होते हैं जिनको करने के लिए हम वर्तमान जीवन में प्रेरित रहते हैं, अर्थात् इन्हें करने की इच्छा रखते हैं। इस क्षेत्र में हमें स्वतंत्रता रहती है कि हम अपने कर्म अच्छे करें या बुरे करें। यहाँ पर किसी भी व्यक्ति को यह स्वतंत्रता रहती है कि वह अपनी कुण्डली में दिखाए कर्मों के ढांचे को ऊपर उठाकर अपने कर्मों से अपनी उन्नति कर शिखर पर भी पहुँच सकता है। इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति अपनी स्वतंत्र संकल्पशक्ति को दृढ़ करके बुद्धिमत्तापूर्ण महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकता है। इस संकल्पशक्ति का उपयोग करते हुए अथवा उसके परिणामों को सहन करते हुए और इस प्रकार पिछले कर्मों को समाप्त कर सकता है। *यहीं पर किसी भी व्यक्ति को अपना भाग्य स्वयं बनाने का अवसर मिलता है।* इन्हीं प्रारब्ध कर्मों से कोई भी व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार अपने भाग्य को निश्चित कर सकता है एवं उसे बना भी सकता है। परन्तु इसके साथ ही साथ हमको याद रखना है पिछले "भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प" की डोरी भाग्य के खूंटे के साथ कसकर बंधी है। आगामी कर्म वे होते हैं जो अभी विचार किए जा रहे हैं और भविष्य में किए जायेंगे।

देखें, यह विचारधारा कितनी आसान है फिर भी कितनी गहरी और गहन एवं गंभीर है। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में अपने कर्मों का कुछ बाकी हिस्सा (प्रारब्ध) साथ लेकर आता है। उसी के अनुसार उसे समाज में स्थान, गौरव एवं वातावरण प्राप्त होता है। जिस घर एवं वातावरण में यह जन्म लेता है, वहाँ उसके प्रारब्ध कर्म, उसके वर्तमान प्रारब्ध कर्मों के साथ मिल जाते हैं। तभी उसे सबसे पहले अपने संचित कर्मों के अनुसार कर्म करना व फल भोगना होता है, प्रथम वह संचित कर्मों के फल भोगकर भूतकाल से नाता जोड़ता है। उसके बाद वह वर्तमान के लिए आबंटित अपने कर्मों को समाप्त करता है और अंत में वह अपने भविष्य के बारे में सोचता है और उसके अनुसार कार्य करता है ताकि उसके भविष्य के लिए बाकी बचे अच्छे कर्मों की संख्या अधिक रहे।

इन कर्मों को दृढ़, अदृढ़ एवं दृढ़-अदृढ़ भी कहा जाता है। दृढ़कर्म वे होते हैं जिनके परिणाम अपरिवर्तनीय होते हैं। अदृढ़ कर्म वे होते हैं जिनके परिणाम ठीक समय पर उचित कर्मों से सहनीय बनाए जा सकते हैं। दृढ़-अदृढ़ कर्म वे होते हैं जिनके परिणाम ग्रहों की आराधना-पूजा एवं शांति पाठ कराने से बदले जा सकते हैं।

अंत में, संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि कर्म हमारे जीवन के अंग हैं। सभी कर्मों के फल प्राप्त होते हैं। यह फल प्राप्त करने का सिद्धांत सारे ब्रह्मांड में व्याप्त कारण और उसका असर सिद्धांत पर आधारित होता है। वैदिक ज्योतिषशास्त्र में यह कारण और उसका असरवाला सिद्धांत केवल स्थूल रूप से ही नहीं, बल्कि उससे ऊपर उठकर कार्य करता है। स्थूल रूप से प्रत्येक कारण का असर, उसकी प्रतिक्रिया, तत्काल उत्पन्न होती है। जैसे एक कार को आप धक्का दीजिए, वह तत्काल चलेगी। ज्योतिषशास्त्र में यह प्रतिक्रिया तत्काल भी हो सकती है अथवा कुछ समय बाद भी तथा प्रत्येक कार्य की क्या प्रतिक्रिया होगी, यह भी परमात्मा पर तथा उसकी इच्छा पर निर्भर होता है।

एक विद्वान 'साइरस डी.एफ. अबैयकून' ने दि एस्ट्रोलोजिकल मैगजीन में कर्म की गति के बार में समालोचन करते हुए यह कहा है–

"कर्म की गति ऐसी नहीं है कि जैसा किसी मनुष्य ने बोया, वैसा ही वह काटेगा।" मानव जीवन में यह सिद्धांत और गहराई तक जाता है कि किसी मनुष्य को बीज बोने से पहले बीज इकट्ठा करना होगा, तभी तो वह कोई फसल काटेगा। अतः मानव को वह बीज भी उसके पिछले कर्मों के अनुसार फल के रूप में प्राप्त होगा। किसी मनुष्य की कुण्डली देखकर यह पता लगाया जा सकता है कि किस व्यक्ति ने कैसा बीज इकट्ठा कर रखा है और उसका क्या फल उसे मिलने वाला है।"

कर्म का सिद्धांत मानव जीवन में तभी ठीक तरह से लागू होगा है, जब हम यह समझें कि मानव जीवन के स्थूल शरीर में उसकी अर्न्तात्मा भी निवास करती है। अतः प्रत्येक मनुष्य की मनोवृत्ति का भेद उस बीज के फल के रूप में भिन्नता पैदा कर देती है। अतः इस अन्तःकरण की प्रतिक्रिया भी शारीरिक प्रतिक्रिया से जुड़ी होती है, और अन्ततः यहाँ पर दैवीय इच्छा शक्ति काम करती है जो प्रत्येक मानव के जीवन में रहन-सहन, क्रमानुसार विकास एवं गति पर अपनी छाप बनाए रखती है।

प्रारब्ध और पुरुषार्थ

सबसे पहले कर्म के तीन भेदों के विषय में जान लें–

1. **क्रियमाण कर्म**–जातक के समझदार होने से (युवावस्था से) जीवन पर "मैं कर्म करता हूँ" यह मान कर जो कर्म करता है वह ही क्रियमाण कर्म है। अतएव वर्तमान काल (जन्म में) में होने वाला कर्म।

2. **संचित कर्म**–क्रियमाण कर्म जो प्रतिदिन हो रहे हैं, उनमें से कुछ का फल तो भोग लिया जाता है और शेष एकत्रित होते रहते हैं और चित्तरूपी भण्डार में जमा हो जाते हैं। उन कर्मों को 'संचित कर्म' कहते हैं। 'सम' उपसर्गपूर्वक 'चि' (चयन यानी इकट्ठा करना) धातु से भूत-कृन्दन्त में बनता है। इसका अर्थ हुआ 'व्यवस्थापूर्वक इकट्ठा हुआ' रहता है। उदाहरण–यदि हम एक रुपया प्रतिदिन पेटी में डाले और साल भर के बाद पेटी खोलें तब जो रुपया निकलेगा वह सब वर्ष का संचित धन होगा।

3. **प्रारब्ध कर्म**–चित्त में जन्म जन्मांतर के संचित कर्म पड़े रहते हैं। सृष्टि के आरंभ से प्रलय तक भोगने पर भी समाप्त नहीं होते। जातक

की मृत्यु के समय जो-जो कर्मफल देने के लिए परिपक्व हो जाते हैं उनका फल भोगने के लिए जीव को तदनुकूल देह धारण करना पड़ता है। इसका अर्थ हुआ भूतकाल में हुए कर्म, जिनको इस जन्म में भोगना है।

मानव अपने जीवन यात्रा में कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र

चित्त के ऊपर पड़े हुए संस्कार उसको तदनुरूप कर्म करने के लिए ललचाते हैं। अशुभ संस्कार हों तो अशुभ कर्म करने की प्रेरणा होती है। यदि शुभ संस्कार हो तो प्रलोभनों में न फँसकर शुभ कर्म करता है।

उदाहरण—आज के राजनेता जो 'स्कॉम' में पकड़े गए हैं, उनके अशुभ संस्कार जाग रहे हैं और देश में ऐसे लोग घोर जुल्म कर रहे हैं। संभी प्रलोभन में फँसे हैं।

इसलिए यह स्पष्ट है कि इस जीवन में मनुष्य कर्म करने में सब प्रकार से स्वतंत्र है। शुभ पुरुषार्थ करके स्वर्ग प्राप्त करना है तो वह उसके हाथ में है।

अशुभ कर्म करके नरक में जाना हो तो इसके लिए भी वह स्वतंत्र है। ईश्वर भजन करके ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाना हो तो इसके लिए भी वह स्वतंत्र है। **क्या करें और क्या न करें**—यह मानव के हाथ की बात है। अपना मार्ग निश्चित करने में वह शतप्रतिशत स्वतंत्र है। प्रारब्ध या दूसरी कोई और सत्ता उसके मार्ग को नहीं रोक सकती।

प्रारब्ध कर्म का स्वभाव देखें। जिन-जिन कर्मों का फल भोगने के लिए जीव ने उनके उपयुक्त शरीर धारण किया है, उन-उन कर्मों का फल उसे उस शरीर से भोगना ही पड़ता है। उनके बचने का कोई मार्ग नहीं है। प्रारब्ध का नाश भोगने से ही होता है।

इस देह का अर्थसूचक नाम 'भोगयतन' भी है। अर्थात् गत जन्मों के शुभाशुभ कर्मफल भोगने का स्थान। जीवन का वर्तमान देह से जिस-जिस सुख-दुख का भोग निर्मित हो चुका है उसे उसको इस देह से भोगे बिना छुटकारा नहीं है।

भावी जीवन का निर्माण तो जीव अपनी इच्छा के अनुसार कर सकता है परन्तु निर्माण हो चुके भोग में रंचमात्र भी परित्रर्तन नहीं हो सकता परन्तु

दुख आ पड़ने पर यदि विवेक उत्पन्न हो जाए तो भविष्य का निर्माण करने के लिए स्वतंत्र होने के कारण वह सुखमय भविष्य का निर्माण कर सकता है। अर्थात् आम बोना चाहे तो आम बो सकता है और बबूल बोना चाहे तो भी उसको कोई नहीं रोक सकेगा।

मनुष्य को जब यह पक्का निश्चय हो जाता है कि मुझे जिस दुख का भोग प्राप्त होता है वह मेरे ही अपने विचार पूर्वक किए गए कर्म का फल है तो फिर उन कर्मों को भोगने में घबराना क्यों। जैसे सुख भोग मेरे ही कर्मों का फल है वैसे ही दुख भोग भी मेरे ही कर्मों का फल है फिर सुख आने पर क्यों फूल जायें (अभिमान करें) और दुख आने पर क्यों मुरझायें?

एक-दूसरे से राग द्वेष किसलिए? इस प्रकार विचार करते-करते सुख-दुख में समता आ जाती है। यदि ऐसा होता है तो मोक्ष द्वार खुल जाता है।

संचित कर्म–कर्मों का अक्षय भण्डार है। सर्वमान्य नियम है–

"न भुक्तं क्षीयते कर्म कोटिकल्पशतैरपि"

अर्थात् कोई भी कर्म करोड़ों कल्प बीतने पर भी बिना भोगे नाश को प्राप्त नहीं होते। श्री भगवान कहते हैं कि जीव को निराश होने की आवश्यकता नहीं–इसका भी रास्ता है–

"ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा"

जैसे लौकिक अग्नि लकड़ी के ढेर को क्षण भर में जलाकर भस्म कर देती है उसी प्रकार ज्ञान रूपी अग्नि भी कर्म के महान से महान भण्डार को क्षण भर में जलाकर भस्म कर देती है। फिर जीव को दूसरा देह धरण करने का कोई कारण हीं नहीं रहता।

कर्म का बलाबल

1. वर्तमान जन्म में जीव पुरुषार्थ करने में सब प्रकार से स्वतंत्र है उसको कोई नहीं रोक सकता।

2. जिस कर्मफल को भोगने के लिए यह शरीर धारण किया है उन-उन निर्माण हो चुके हुए सुख-दुख को वर्तमान शरीर से भोगना ही पड़ेगा। भविष्य

का निर्माण तो वह अपनी इच्छा के अनुसार कर सकता है परन्तु भूतकाल के निर्माण को वह बदल नहीं सकता।

3. संचित कर्म का भण्डार अक्षय है, वह भोग के द्वारा समाप्त होने वाला नहीं। इसलिए यदि जन्म-मरण के जंजाल से छूटना है तो जिस प्रकार हो सके तत्त्वज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिससे ज्ञान रूपी अग्नि से सारे संचित कर्म जलकर भस्म हो जायें।

1. "मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु॥"
श्री आदि शंकराचार्य ने माता से प्रार्थना की।

2. भगवान भोले नाथ से भी प्रार्थना है–
वहन करो तुम शीलावश, निज जन को सब भार।
गनौ न अध-जाति कछु, सब विधि करौ संभार॥
दीन हीन अतिमलिनमति, मैं अध-अधि अपार।
कृपा अनल प्रगटौ तुरत, करौ पाप सब क्षार॥
कृपा सुधा बरसाय पुनि, शीतल करौ पवित्र।
राखो पदममलनि सदा, हे कुपात्र के मित्र॥

□□□

अध्याय 10

जातस्यहि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।

(गीता 2/26)

(ज्रन्म लेने वाले की निश्चित मृत्यु और मरने वाले का निश्चित जन्म होना है इससे भी तू इस बिना उपाय वाले विषय में शोक न कर।)

ज्योतिष एवं कर्म विधान

ज्योतिषशास्त्र में तीन बातें मूल रूप से मान ली गई हैं–

1. ग्रहों का प्रभाव एवं तदनुसार उनकी प्रतिक्रिया।
2. कर्म का प्रभाव डालने की शक्ति और उसके फलस्वरूप आपसी संबंधों में पराधीन होना (ऋणानुबंधन) और
3. मृत्यु से पहले एवं बाद में जीवन जारी रहने का अर्थात् पुनर्जन्म का सिद्धांत।

उपर्युक्त तीनों बातें भविष्यवाणी करने में एवं उनके परिणाम देखने में ठीक एवं सही सिद्ध हुई हैं।

एक ही परिवार में जन्में भाइयों में असमानता, भेद तथा स्पष्ट रूप से दृश्य श्रेष्ठता, अथवा उसी स्थान पर तथा उसी सामाजिक स्थिति के किसी अन्य परिवार में ये असमानताएं पाए जाने से हमें यह विश्वास करना ही पड़ता है कि मनुष्यों की दशा में पुनर्जन्म का सिद्धांत अर्थात् जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म ठीक प्रकार से लागू होता है। इससे यह भी सिद्ध होता है

हमारे कर्म पुनर्जन्म में भी जारी रहते है। क्या इस जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म के चक्र का कोई आरम्भ माना जाए? यदि जन्म को ही प्रारंभ माना जाय तो उस व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति के आधार पर हम केवल उस मनुष्य के भविष्य में होने वाली घटनाओं की जानकारी का कारण नहीं बता सकते। कैसे होगी? यहां हम उस व्यक्ति के जीवन में आने वाली घटनाओं की पूरी जानकारी दे सकते हैं, वह घटना होगी, कैसे होगी, किस व्यक्ति के साथ मिलकर होगी, आदि। लेकिन यदि हम यह माने कि पुनर्जन्म का सिद्धांत ठीक है, तो हमें यह मानना होगा कि किसी व्यक्ति का जन्म उसकी पिछली मृत्यु से संबंधित है और उसी से आगे चक्र में उसने अपना जन्म लिया है। अर्थात उस जीव, लिंग दोह÷आत्मा का कार्य पिछले जीवन से संबंधित था और है और आगे भी रहेगा। हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने इस संसार के आरम्भ से ही जो अनुभव प्राप्त किए, उन्ही के आधार पर ज्योतिषी लोग जो भविष्वाणियों करते हैं और वे ठीक बैठती है, इसका हमें गर्व है। ज्योतिषशास्त्र का यही जीवन ध्येय तथा आदर्श है कि उन ऋषि-मुनियों के विचार ठीक सिद्ध हुए हैं। उसके बाद उन विचारों को जीवित रखा गया, उनका विकास किया गया और उनकी पीढ़ी दर पीढ़ियों के व्यक्तियों ने उनका विकास करके उन्हें आधुनिक बनाया, और जिस शक्ल में यह शास्त्र है, उसे हम महा विज्ञान कह सकते हैं।

पुनर्जन्म के चक्र के जन्म-मरण के मूल सत्य को समझे व माने बिना, और कर्म की प्रभावकारी शक्ति ऋणानुबंधन को समझे बिना, कर्म की विधि को ठीक प्रकार से समझना और उसकी महत्ता को जानना असंभव है।

जैसे कि आधुनिक वैज्ञानिक करते हैं, किसी वैज्ञानिक तथ्य को बार-बार दुहरा कर यदि एक जैसा ही परिणाम आता है, तो उसे वैज्ञानिक आविष्कार मान लिया जाता है। उसी प्रकार कारण और उसकी प्रतिक्रिया के संबंध के आधार पर जो बातें ज्योतिषशास्त्र में बताई गई हैं, उनका परिणाम एक जैसा ही आता है। इसी बात को ध्यान में रखकर जो भविष्यवाणियां की जाती हैं, वे सही निकलती हैं। इससे सिद्ध होता है कि ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान है।

विभिन्न शक्तियां-दैव एवं पुरूषार्थ–हम यह विश्वास करते है कि प्रत्येक मनुष्य पर विभिन्न शक्तियां आपस में मिलकर एक प्रकार का समझौता करके अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार असर करती हैं। ज्योतिषशास्त्र में यह अध्ययन किया जाता है कि किसी मनुष्य पर ग्रह कैसे असर करते हैं और उनका हमारे कर्मो पर क्या प्रभाव पड़ता है। हमारे पूर्व जन्मों के कर्मो का प्रभाव दैव कहलाता है और वर्तमान जीवन में हमारे कर्मों के रूप में उनका जो असर पड़ता है, वह पुरूषार्थ कहलाता है। इस प्रकार एक ओर हम आधुनिक वैज्ञानिकों की तरह कोई कार्य करते है। तो उसका अवश्यंभावी परिणाम उसके अपने कर्मो के रूप में प्रकट होता है, अर्थात् उन कर्मो का फल, चाहे अच्छा हो या बुरा, हमें भोगना अवश्य पड़ेगा। यह अच्छा या बुरा फल, कभी कम या अधिक नहीं होता। यह कर्म विधि का दूसरा गुण है।

'अवश्यमनु भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम
ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।"

कर्मों के विभिन्न रूप-यहां हमे थोड़ा सोचना पड़ेगा कि कर्मो के विभिन्न रूप कैसे होते हैं। कर्मो का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है-

1. पहल वर्गीकरण

(1) कायक - शारीरिक कर्म

(2) वाचक - वाणी के द्वार किए गए कर्म

(3) मानसिक - मन पर असर डालने वाले कर्म। (मन से किए गए कर्म)

इस वर्ग के कर्मों को जानना अति आवश्यक है क्योंकि किसी भी व्यक्ति के कर्म उसके संस्कारों पर निर्भर रहते हैं। संस्कार हमारे पिछले जन्मों एवं वर्तमान जन्म में बार-बार किए जा रहे कर्मों की आत्मिक भावना से जुड़ी प्रकृति को कहते हैं।

संस्कार क्या हैं? वास्तव में संस्कार क्या हैं, क्या यह कोई छाप है अथवा छोड़ा हुआ प्रभाव है, अथवा कोई शब्द है, या कोई सांचा है

जिसके अनुसार कर्म किए जाते हैं, अथवा कोई ऐसी शक्ति है जो एक विशिष्ट स्थिति में कार्य करने को प्रेरित करती है, या जो हमारे पिछले जन्म या जन्मान्तरों के पिछले कर्मों के प्रभावों एवं शक्तियों के अनुसार किसी विशिष्ट गति के साथ कार्य करने को प्रेरित करती हैं।

कर्मों के इस सिद्धांत का सारांश इस प्रकार हो सकता है, "एक विचार को बोना, किसी कार्य को काटना, किसी कार्य को बोना, किसी आदत को काटना, किसी आदत को बोना, किसी चरित्र को काटना, किसी चरित्र को बोकर अपना भाग्य बनाना।"

II. कर्मों का दूसरा वर्गीकरण (कर्मफल)–(कर्मों के फल) तीन प्रकार के कर्मों से मिलकर बनता है।

(क) संचित (ख) प्रारब्ध (ग) आगामी।

संचित कर्म वे कर्म हैं जो पिछले दिनों में हमने किए हैं, पर उनका फल अभी हमें मिला नहीं हैं। यह उसी प्रकार है जैसे, किसी नर्सरी में बीज उगाकर उनमें अंकुर निकल आते हैं। इनमें फल अभी हमारे भविष्य के मानव जीवन में मिलने हैं। **प्रारब्ध कर्म** व कर्म फल हैं जो हमें इस जन्म में, हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप, मिल रहे हैं। ऐसे कर्मों के अंकुर पहले ही निकल चुके थे और उन पौधों में फूल हमारे वर्तमान जीवन में मिल रहे हैं। कोई व्यक्ति इसे भाग्य अथवा प्रारब्ध भी कहते है। **आगामी कर्मफल** वे कर्म होते हैं जो हम भविष्य में करने का विचार रखते हैं। ऐसे कर्मों के करने की प्रेरणा हमारे पिछले जीवन में किए गए कर्मों की शक्ति के अनुसार मिलती है, और इसके साथ ही हमारे संस्कारों का प्रभाव उन पर पड़ता है। ये कर्म हम वर्तमान जीवन में करते हैं पर इन का फल हमें भविष्य में आगामी जन्मों में मिलेगा।

III. कर्मों का तीसरा वर्गीकरण–प्रसंगवश, इस समय यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या हम प्रारब्ध को अपने किन्हीं कार्यों द्वारा बदल सकते हैं? यदि हम इसे नहीं बदल सकते तो इस प्रश्न के बारे में ज्योतिषशास्त्र का कोई महत्व अथवा उपयोग नहीं रह जाता है। हम प्रारब्ध अथवा कर्मफल को तीन विभिन्न वर्गों में बांट सकते हैं, अर्थात् दृढ़, अदृढ़, दृढ़ादृढ़।

दृढ़ कर्मफल वे हैं जो हस्तान्तरित नहीं किए जा सकते, अर्थात् यहां दैवीय शक्ति अथवा भाग्य के अनुसार फल मिलना आवश्यक हैं। यदि ऐसे कर्मफल बुरे होते हैं तो उन्हें अरिष्ट कहा जाता है। इसी प्रकार **अदृढ़** कर्मफल वे है जहां मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छाशक्ति का प्रयोग कर सकता है। ये कर्मफल सदैव बुरे होते हैं पर उन्हें किन्हीं प्रतिबन्धित कार्यों के द्वारा अथवा किन्हीं उपायों द्वारा टाला जा सकता है, या उनका परिहार किया जा सकता है। तीसरा वर्ग **दृढ़ादृढ़ कर्मफल** मिश्रित वर्ग होता है, जहां यह कहना कठिन होता है कि इस जीवन में दैवीय शक्ति का प्रभाव अधिक है अथवा पुरूषार्थ का अधिक है। जो बुरे परिणाम इस तीसरे वर्ग के कर्मफल से प्राप्त होते हैं उन्हें गंड कहते हैं और उन पर विजय उनकी शांति कराने या उचित प्रकार से आराधना करने से पाई जा सकती है। इस प्रकार प्रारब्ध अथवा पूर्व लिखित कर्मों पर रोक लगाकर उन्हें सीमित किया जा सकता है। यह किसी भी प्रकार से निंरकुश नहीं होते हैं और इसी से वैदिक ज्योतिषशास्त्र अथवा ज्योतिष विज्ञान की उपयोगिता सिद्ध होती है।

IV. कर्मों का चौथा वर्गीकरण–यह कर्मों के लक्षण पर आधारित होता है, **श्रेयस कर्म** तथा **प्रेयस कर्म**। श्रेयस् के वे कर्म होते हैं जो हम अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए करते हैं। प्रेयस कर्मों से हमें कुछ समय के लिए आनन्द अनुभव होता है और हमारी इन्द्रियां या कर्मेन्द्रियाँ सुख का अनुभव करती हैं। इस प्रकार ये दोनों कर्म हमें क्रमशः या तो **निवृत्ति मार्ग** अथवा **प्रवृत्ति मार्ग** की ओर ले जाती हैं। किसी भी मनुष्य को यह नही भूलना चाहिए कि इच्छाओं की पूर्ति कभी संभव नहीं है चाहे हम कितना भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति की ओर कार्य करें। सदैव बढ़ती ही रहती हैं जैसे आग में लकड़ी डालने से आग बढ़ती रहती है। यह **प्रवृत्ति मार्ग** कहलाता है।

"इन्द्रिय सुख महान है, उससे भी बढ़कर हमारा मन है, मन से भी बढ़कर हमारी बुद्धि है, और बुद्धि से बढ़कर ईश्वर है। जो मनुष्य अपने कर्मों को मन से बुद्धि से अथवा परमात्मा की इच्छा शक्ति से नियंत्रित रखता है, यह **निवृत्ति मार्ग** की ओर प्रवत्त रहता है और यही मानव जीवन का ध्येय अथवा मोक्ष प्राप्त करता है। (श्रीमद्भागवत गीता अध्याय 3)".

प्रत्येक आत्मा चार ध्येय सामने रखकर जन्म लेती है, अर्थात् **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष**। इनमें धर्म सबसे बड़ा ध्येय माना गया है। शरीर के बिना धर्म कोई कार्य नहीं कर सकता। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने कहा कि सदैव शरीर को धर्म के कार्यों में लगाएं रखों। इसके लिए शरीर सदैव सुगठित रखो, ताकि पवित्रता से धर्म का निर्वाह हो सके। हमारे पूर्वज कहते थे कि हमारे पिछले जन्मों में किए गए पापों के कारण हम बीमार पड़ते हैं। अतः सभी मनुष्यों को औषधि, दान, जप, होम एवं प्रार्थना से अपना शरीर स्वस्थ रखना चाहिए। राजा **वीरसिंह** ने एक छोटा ग्रंथ संकलित किया था। उसका नाम था **वीर सिंहावलोकन**। इसमें कर्म विपाक का वर्णन किया गया है। इस शास्त्र में यह बताया गया है कि हमारे पिछले जन्मों के कर्म पकते हैं, और इस जन्म में उनका उपाय जप, होम, दान, नग आदि पहनकर, और अंत में आयुर्वेद इलाज करके उन बिमारियों को नष्ट करके किया जा सकता है।

वैज्ञानिक प्रमाण—कर्मों का वर्गीकरण समझ लेने के उपरांत, आइए अब हम जन्म, मृत्यु एवं पुनर्जन्म के चक्र के बारे में प्रमाणों पर दृष्टि डालें। इसके बाद हम कुछ ज्योतिषीय संदर्भों के सहारे पिछले और आगामी जीवन के बारे में ज्योतिषीय ग्रंथों के बारे में चर्चा करेंगे। रूसी भौतिक विज्ञान के प्रौ. जार्ज लखोवास्की (Prof. George Lakhovsky) और उनका अनात्मवाद एवं पृथक्कीकरण का सिद्धांत (Doctrine of Materialisation and dematerialisation), रचना की प्रक्रिया एवं द्रव्य की अस्तित्वहीनता का सिद्धांत धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। "कोई भी पदार्थ गाढ़ा होकर सूर्य की किरणों के साथ कौस्मिक किरणें बनता है, फिर इलैक्ट्रोन, एटम, और मोलेक्यूल्स बनते है, और उल्टी तरह से हम देखते हैं कि प्रत्येक पदार्थ किरणें फेंकता हैं।" उन्होंने यह भी बताया कि बीज (फसल की आवश्यकता), बीज और क्षेत्र ये तीनों चीजें आवश्यक हैं। बीज और क्षेत्र के साथ-साथ कौस्मिक किरणों का प्रभाव भी आवश्यक है, तभी उसमें जीव प्राण प्रवेश करता है।"

लखोवास्की ने कहा है—हम सभी यह जानते हैं कि अनेक पदार्थ में कई माह तक अथवा कई वर्षों तक फल नहीं आते हैं। इस प्रकार गर्भाधारण

की प्रक्रिया में फल देरी से आने की प्रक्रिया, जो सदैव पदार्थीकरण के लिए उपयुक्त नहीं होती है। पहले सैल बनता है, फिर उसका विकास होता है, फिर जीव तैयार होता है। इस प्रक्रिया में ग्रहों का प्रभाव पड़ता है और उसी जीव प्रभाव से उसमें जान पड़कर जीव तैयार होता है। वे अपनी किरणों से उस पर लगातार प्रभाव डालते रहते हैं। यह प्रभाव आगे भी जारी रहता है और निरन्तर रूप से जारी रहता है।"

इससे यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार ग्रह अपना निरन्तर प्रभाव डालते रहते हैं। चाहे वह सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव हो, अथवा पौधा हो, जानवर हो, चाहे मनुष्य हो, अन्य ग्रहों पर अनन्त रूप से पुनः उत्पत्ति करता हैं वहां उसे प्रकाश की पेचीदगियां प्रतिध्वनि की सहायक परिस्थितियां मिलती हैं, जहां वे ब्रह्मांड के विभिन्न भागों में अपने आप को प्राकृतिक रूप में पाते हैं। इस प्रकार वे एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर बदलते रहते हैं और लगातार यह परिवर्तन चक्र चलता रहता है, उन्हें समय अथवा स्थान का काई असर नहीं पड़ता क्योंकि वे अनन्त हैं। सभी ग्रहों पर मानव सहित सभी प्राणियों का जीवन, केवल लगातार और अनन्त प्रतिध्वनि से प्रभावित होता रहता है।

अतः इस प्रकार यह दिखाई देता है कि वास्तव में जो प्राणी एक स्थान पर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, वे वास्तव में मरते नहीं हैं, बल्कि इसी ब्रह्मांड के किसी अन्य भाग में किसी अन्य रूप में विद्यमान रहते हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान बना रहता है। पृथ्वी पर उनका पुनर्जन्म भी हो सकता है और उनके पुनर्जन्म पर उनका वही शरीर, वही व्यक्तित्व भी बना रह सकता है।

मानव जाति का अन्य नक्षत्रों पर इस प्रकार पुनर्जन्म कई अन्य बातों को स्पष्ट करता है। ऐसी बातें अन्यथा स्पष्ट नहीं होती हैं। इस प्रकार यदि हम देखें कि किसी सामान्य सदासीन व्यक्ति के घर किसी असाधारण बुद्धि वाले बच्चे का जन्म कैसे संभव होता है? यहां पर वंश परम्परागत गुण कहां चले गए और उस असाधारण बुद्धि वाले बच्चे में इतनी योग्यता कहां से आ गई। दूसरी ओर यदि हम देखें तो यह सब हो सकता है क्योंकि गर्भाधारण के समय आकाश में मानव प्रकृति की जटिल वायु तरंगे घूमती रहती हैं।

लेखावास्की अंत में कहते है–"इसके अतिरिक्त एक अन्य कारण और भी है, जिसकी वजह से गर्भाधारण के समय और किसी मानव के जन्म के समय स्वर्ग में नक्षत्रों की स्थिति में मनुष्यों के भाग्य पर विशिष्ट प्रभाव पड़ता है और इन सिद्धांतो को विशेष प्रमुखता दी जाती है, इसलिए इन पर गहराई से विचार करना और भी आवश्यक है। मैंने अपनी अन्य पुस्तकों में जैसे–The Secret of Life and Eternity, Life and Death में नक्षत्रों की स्थिति और उनके प्रभाव विषय पर गहनता से प्रकाश डाला है।"

इस संबंध में कृपया डॉ. बी. वी. रमन की पुस्तक Planetary Influence on Human Affairs में Astrology and Karma वाले पाठ को भी देखें। *भारतीय विद्या भवन मे श्री के. एन. राव ने Astrology and Karma पर एक व्याख्यान में वर्जीनिया, चार्लोटेसविल्ले विश्वविद्यालय के डॉ. इयान स्टीवेन्सन, एम. डी. के अनुसंधानों पर ध्यानं आकर्षित किया था। इन्होंने 600 से अधिक मामलों में गहनता से अध्ययन किया, जिसमें लगभग सारे संसार के व्यक्ति सम्मिलित थे और सभी धर्मों के व्यक्ति थे। इससे किसी भी व्यक्ति को इन अनुसंधानों के बारे में तथा पुनर्जन्म के बारे में कोई संदेह नहीं रहना चाहिए।*

राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. चटर्जी ने भी पुनर्जन्म के मामलों पर गहन अध्ययन किया और ऐसे मामले पाए, जहां व्यक्तियों ने अपने पुनर्जन्म के बाद पिछले जन्म का सारा हाल भी बताया और अपने पिछले रिश्तेदारों को पहचान भी लिया, अपने घर को, आस-पास के वातावरण को जहां वे रहते थे, बिना किसी बाहरी सहायता के पहचान लिया और उसके बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली में श्री के. एन. राव ने भी ऐसे चार मामलों के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की।

पुनर्जन्म के बारे में हमारी भारतीय परम्परा कर्मफल या पिछले जन्म के कर्मों के फल से भी पुष्टि होती है। हमारे कर्म और संस्कार हमारे पिछले जन्म के कर्मों पर आधारित रहते हैं। किसी व्यक्ति की कुण्डली देखकर यह बताया जा सकता है कि नवजात शिशु के शरीर पर कहां और कैसा

निशान है, जन्म के समय कौन सी घटना घटी थी, जन्म के समय कौन सा रिश्तेदार वहां मौजूद था अथवा मौजूद नहीं था, आदि।

हिन्दुओं की धर्मपुस्तकों में तो पुनर्जन्म की अनेक कथाएं दी गई हैं।

इस प्रकार यह विचार करना भी असंगत है कि किसी व्यक्ति का धर्म क्या है और उसका धर्म पुनर्जन्म के सिद्धांतों को मानता हैं अथवा नहीं।

तीन प्रकार के शरीर एक डॉक्टर के अनुभव

हिन्दुओं के धर्मग्रंथों में तीन प्रकार के शरीर का उल्लेख मिलता है। 1. स्थूल शरीर 2. लधु पिंड-सूक्ष्म शरीर 3. कर्म शरीर। आत्मा का दूसरे शरीर में पुनर्जन्म का सीधा संबंध लघु पिंड सूक्ष्म शरीर से होता है।

श्री के. एन. राव ने डॉ. रेमन्ड एम. डी. द्वारा अपनी पुस्तक में दिए गए ऐसे उदाहरणों की चर्चा की है जिसमें उन्होंने उन व्यक्तियों के कथन बताएं हैं जिन्हें दिल का दौरा पड़ने के बाद स्वयं यह अनुभव हुआ कि सूक्ष्म आत्मा उनके शरीर से निकलकर किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर रही है। डॉ. रेमन्ड ने बताया है कि अनेक व्यक्ति जो हृदय गति रूक जाने के कारण अचानक मृत्यु शय्या पर आ जाते हैं। वे डॉ. और नर्सो की बातें भी सुनते रहते है और उन्हें यह चेतना भी रहती है कि वे क्या कर रहे है। एक उदाहरण में डॉ. रेमन्ड ने बताया है कि एक व्यक्ति भीषण कार दुर्घटना में घायल हो गया था, उसने स्वयं देखा कि उसकी सूक्ष्म आत्मा उसके शरीर से निकल रही हैं। एक दिन जब वह बिल्कुल ठीक हो गया तब अमेरिका के किसी ऐसे स्थान पर पहुंच गया जहां बहुत गुंडे-बदमाश लोग रहते थे। वहां पर एक गुंडे ने उसकी छाती पर पिस्तौल रखकर उसे डराना चाहा, पर वह मौत के डर से भी नहीं डरा। इस पर गुंडे ने उससे पूछा कि वह डरा क्यों नहीं, तो उसने बताया कि चूंकि उसे स्वयं यह अनुभव हो चुका है कि मृत्यु के पश्चात् भी जीवन है और जीवन के पश्चात मृत्यु है,. इसीलिए उसे कोई डर नहीं लगा।

प्रयोगशालाओं के अनुभव एवं अनुमान (तर्क) के अनुभव

निस्संदेह प्रयोगशालाओं के प्रयोग के माध्यम से यह सिद्ध करना संभव नहीं है कि पुनर्जन्म होता है और प्रत्येक व्यक्ति में संचित कर्मफल, प्रारब्ध

तथा आगामी कर्म होते हैं। लेकिन दक्षिणी भारत में नाड़ी एवं भृगु संहिता में पिछले जन्मों के हजारों उदाहरण दिए गए हैं। श्री के. एन. राव ने कर्म विपाक संहिता का जिक्र करते हुए यह उल्लेख किया है कि जिस व्यक्ति का जिस नक्षत्र के जिस चरण में जन्म होता है, उससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि उस नक्षत्र के उस चरण से पहले चरण वह व्यक्ति अपने पिछले जन्मों में भोग चुका है।

दैव अथवा कर्मफल से तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति ने अपने पिछले जन्म में अपने कर्मों के द्वारा क्या-क्या गलतियां की हैं और क्या क्या अच्छे कार्य किए हैं। कर्मफल उन्हीं कर्मों का परिणाम होता है। परंतु यहीं पर इस विवेचना का अंत नहीं होता है, क्योंकि आप जैसे बुद्धिमान पाठकों में से कोई भी व्यक्ति जैसे महाभारत युग में युधिष्ठिर ने प्रश्न किया था, ये पूछ सकता है कि "मैने इस जीवन में कोई पापकर्म नहीं किया है, फिर मुझे इतना दुख, पीड़ा सहन करनी पड़ी और नीचा देखना पड़ा; और दूसरी ओर दुर्योधन एवं दुस्शासन जैसे लोगों को कोई दुख नहीं सहन करना पड़ रहा है, ऐसा क्यों हैं। इसका सही उत्तर वही है जो भीष्म पितामह ने तीरों की शय्या पर लेटे-लेटे दिया था-

पापं कर्म कृतं किंचित यदि तस्मिन न दृश्यते।
नृपते तस्य पुत्रेषु पौत्रेष्वपि च तपतुषु॥

"औ धर्मराज! यदि हम अपने पाप कर्मों के फल इस जीवन में नहीं भोग पाते हैं तो हमें अपने अगले जीवन में उनका फल अवश्य भोगना पड़ेगा और यहां तक कि यदि कोई मनुष्य अपने जीवन में उनका फल नहीं भोगता है तो उसके पुरूष वंशजों को उनका फल अवश्य भोगना पड़ेगा।"

कर्म-फल के लक्षण—कर्नाटक (बेलगाम) के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री एच. एन. कटवे ने अपनी पुस्तक दैव विचार में यह उल्लेख किया है कि प्रत्येक व्यक्ति जाने या अजाने में, अपने पापों के फल अवश्य भोगता है और यह बात उसकी कुण्डलीं से पता लग सकती है अर्थात् शनि की दशा होगी तो वे पाप उस व्यक्ति के स्वयं के द्वारा किए गए थे और यदि

सूर्य की दशा खराब है, तो वे पाप उसके पिता द्वारा किए गए थे, और यदि चन्द्र की दशा खराब है तो वे पाप उसकी माता द्वारा किए गए थे। राहु की दशा में वे पाप उसके पूर्वजों द्वारा किए गए थे शुक्र की दशा में वे पाप उसकी पत्नी द्वारा, और बृहस्पति की दशा में वे पाप उसकी संतान के द्वारा किए गए थे, बुध की दशा में वे पाप उसके मित्र-साथियों द्वारा अर्थात् उसके परिवार से बाहर अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए थे, और मंगल की दशा में वे पाप किसी अचल संपत्ति से संबंधित होते हैं।

कर्मफल का स्पष्ट दिग्दर्शन–उपयुक्त लक्षण एवं नीचे दिए गए राशि तथा चार्ट यह दर्शाते हैं कि ग्रह, राशि तथा उनकी स्थिति में कर्मफल का क्या संबंध होता है। बारह स्थानों से हमें 12 खंड, 12 प्रकार के जीवन के संबंध, और 12 प्रकार के कार्यकलापों का पता लगता है। राशियां तथा स्थान अनेक प्रकार से विभाजित किए जाते हैं–

अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष
1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12

उपर्युक्त चार तत्त्वों के अतिरिक्त, एक तत्त्व और होता है आकाश तत्त्व। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, ये पांच तत्त्व सभी जीवों में तथा जड़ पदार्थों में पाए जाते हैं, पर उनकी मात्रा-अनुपात कम अधिक होती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि इन विभिन्न तत्त्वों से मिलकर ही प्रत्येक जीव अथवा जड़ पदार्थ जन्म लेता है, विकसित होता है और इन्हीं तत्त्वों में से किसी तत्त्व की मात्रा-अनुपात कम या अधिक हो जाने से उसकी मृत्यु हो जाती है या उसमें परिवर्तन आ जाता है। इन 5 तत्त्वों को हमारे शरीर के विभिन्न अंगों में बांट दिया गया है। जिस तत्त्व का अनुपात कम या अधिक हो जाता है, वह शरीर के उसी भाग को प्रभावित करता है, और उक्त चार्ट में दर्शाई स्थिति के अनुसार उस व्यक्ति के उन्हीं रिश्तेदारों की ओर से परेशानी उत्पन्न होती है, अथवा उनसे सहायता मिलती है, जैसी भी स्थिति हो। जैसे 5वें स्थान में अग्नि और धर्म बताया गया

है, और 5वां भाव भी यही दर्शाता है। इस प्रकार जब उग्र ग्रह (मंगल/केतु/सूर्य) 5वें स्थान पर बैठते हैं तो उससे यह आभास होता है कि व्यक्ति बुद्धिमान, धार्मिक प्रवृत्ति का, आत्मिक भावनाओं वाला होगा, दूसरी ओर उसे पेट की बीमारियां और कब्ज आदि की शिकायत रहेगी, तीसरे उसे अपने पुत्र (विशेषतः पहले पुत्र) से परेशानी पैदा हो सकती हैं।

पिछले जन्म का स्थान–महर्षि पाराशर ने अपनी पुस्तक वृहत पाराशर होरा शास्त्र के अध्याय 44 में यह कहा है, "यदि बलवान सूर्य अथवा चन्द्रमा, बृहस्पति के तीसरे द्रेष्काण में बैठा है तो उससे पता लगता है कि उस व्यक्ति का पिछला जन्म स्थान देवलोक में था। यदि वह शुक्र अथवा चन्द्रमा के तीसरे द्रेष्काण में बैठा है तो उसका पिछला जन्म स्थान पितृ लोक में था; यदि वह सूर्य अथवा मंगल के तीसरे द्रेष्काण में बैठा है तो उसका पिछला जन्म स्थान मृत्युलोक में था और यदि वह बुध या शनि के तीसरे द्रेष्काण में बैठा है तो उसका पिछला जन्म स्थान नरक लोक में था।

कुछ उदाहरण–यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली से यह ज्ञात हो कि उसके जन्म के समय उसके पिता की हैसियत अच्छी है और उसे पिता की ओर से खुशियां प्राप्त होंगी, तो इससे यह सिद्ध होता है कि उसके पिता के साथ उसका ऋणानुबंधन बहुत काल तक चलने वाला है और अपने पिता से लाभ या हानि उस समय प्राप्त होगी, जब उसके पिता एक विशेष स्तर तक पहुंच जाएंगे। बच्चे के जन्म से चार–पांच वर्ष तक उसकी ओर से कोई विशेष कर्म जान–बूझकर नहीं किया जाता है। इसलिए उसे अपने मां–बाप के कर्मों पर निर्भर रहना पड़ता है। फलदीपिका के अनुसार कोई भी बच्चा चार वर्ष की आयु तक अपनी माता के पाप कर्मों का फल भोगता है, 4 से 8 वर्ष तक उसके अपने द्वारा किए गए असामान्य पाप कर्मों के फल भोगता है।

यदि किसी व्यक्ति का चन्द्रमा खराब हो तो उसकी माता अधिक जीवित नहीं रहेगी। यद्यपि माता के जीवन को प्रभावित करने वाली अन्य बातें भी होती हैं, पर हम यहां केवल चन्द्रमा की स्थिति से खराब होने वाले उदाहरण लेते हैं, और उसी से अपनी बात सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं।

निम्नलिखित कुण्डलियां डॉ. बी. वी. रमन की पुस्तक Notable Horoscopes में से ली गई हैं–

1. भगवान श्री कृष्ण जेल में पैदा हुए, फिर अपनी माता से अलग रहे, और उनकी कुण्डली में चन्द्रमा शनि से प्रभावित था, इसी कारण उनका अपनी माता से बिछोह हुआ।

2. डॉ. बी. वी. रमन की कुण्डली में शनि व चन्द्रमा एक साथ बैठे हैं, तो उनकी माता की मृत्यु उनकी आरम्भ की जवानी की अवस्था में ही हो गई।

3. सिद्ध पुरूष प्रोफेट मोहम्मद सा. की कुण्डली में भी चन्द्रमा शनि से प्रभावित था, अतः उनकी माता की मृत्यु उनकी 7 साल;की अवस्था में ही हो गई।

4. श्री अरविन्द घोष इंगलैंड गए और वहां 14 साल तक रहे। इस प्रकार वे अपनी माता से अलग रहे। उनकी कुण्डली में छठे घर में शनि व चन्द्रमा एक साथ बैठे हैं।

5. श्री अब्राहम लिंकन की माता की मृत्यु उनकी 1 साल की उम्र में ही हो गई, वहां भी चन्द्रमा शनि से प्रभान्वित था और 12वें स्थान पर बैठा है।

6. इंदिरा गांधी के मामले में भी चन्द्रमा शनि से प्रभावित था, शनि लग्न में था और चन्द्रमा 7वें घर में था।

पिता के मामले में, जब सूर्य के दोनों ओर अच्छे ग्रह हों, तो पता लगता है कि उसके पिता एक ऊंची हैसियत के व्यक्ति हैं। इसके उदाहरण हैं, अलेक्जेंडर महान और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।-इसके दूसरी ओर, यदि सूर्य के दोनों ओर खराब ग्रह होंगे तो पिता की उम्र कम रहेगी। आदि शंकराचार्य जी को देखिए, उनके पिता की मृत्यु उनकी 6 वर्ष की अवस्था में ही हो गई। इसी प्रकार यदि सूर्य शनि से प्रभावित हो तो पिता की मृत्यु उसकी जवानी में हो जाएगी, जैसे रमण महर्षि, एफ. डी. रूजवेल्ट, वीर सावरकर, कस्तूरी श्री निवासन, अडोल्फ हिटलर आदि।

ऊपर, हमने यहा देखा कि किसी बच्चे की कुण्डली देखकर उसके माता-पिता की मृत्यु के समय के बारे में अनुमान लगाया जा सकता हैं। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति का बृहस्पति खराब हो तो उसे अपनी संतान की ओर से कष्ट या परेशानी आ सकती है। उदाहरण के लिए डॉ. बी. वी. रमन को लीजिए, उनकी कुण्डली में बृहस्पति 10वें स्थान पर था, उनके सबसे बड़ें पुत्र की जो बहुत होनहार तथा जवान था, उसकी मृत्यु हो गई। सुभाषचन्द्र बोस के कोई पुत्र नहीं था। इन दोनों मामलों में बृहस्पति की दशा मंगल व शनि से प्रभावित थी। श्रीमती गांधी के दूसरे पुत्र की मृत्यु जवानी की अवस्था में ही हो गई। इसका अर्थ केवल यह है कि ऐसे मामलों में संतान की ओर से परेशानी आ सकती है, या तो उसकी मृत्यु से या विछोह से अथवा सामाजिक वातावरण से दूर रहकर। इस प्रकार यह सिद्ध हो गया है कि सूर्य से पिता की ओर से ऋणानुबंधन का पता लगता है और चन्द्रमा से माता का, और बृहस्पति से संतान का।

उच्च शिक्षा-यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में बृहस्पति और बुध लग्न में हो अथवा चन्द्रमा के साथ बैठे हो तो वह व्यक्ति बहुत पढ़ा लिखा होगा। श्री मिर्जा इस्माइल. जो मैसूर के दीवान थे, उनकी कुण्डली में लग्न में बृहस्पति था। श्री मोहन कुमार मंगलम के पिता श्री डॉ. सुब्बाराव और मोती लाल नेहरू की कुण्डली में लग्न में बृहस्पति था। इससे संतान की ओर से खुशी, उच्च शिक्षा, सफलता मिलती है।

न देव दंडमादाय रक्षन्ति पशुपालवत।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्धया संविभवन्ति तम।।

यदि आप प्रसन्न रहना चाहते हैं तो आपको पहले अपने मन को बदलना होगा ओर सद संकल्प या अच्छे विचार पैदा करने होंगे, इससे आप अच्छे कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगें। अच्छे कर्मों से आपका चरित्र अच्छा बनेगा और अच्छे चरित्र से आपके जीवन में अच्छे भाग्य की नींव रखी जा सकेगी जो इस जीवन में व अगले जीवनों में भी अच्छा फल देगी और किसी भी व्यक्ति को यह नहीं भूलना चाहिए कि-

अहिंसकस्य दांतस्य धर्मार्जित धनस्य च
सर्वदा नियमस्तस्य सदा सानुग्रहाग्रहा:।।

प्रश्न

1. ज्योतिषशास्त्र की तीन स्वीकृत बातें कौन-कौन सी हैं?
2. कर्मों के विभिन्न रूप क्या-क्या हैं?
3. दृढ़, अदृढ़ तथा दृढ़ादृढ़ कर्म से आप क्या समझते हैं।
4. भाग्य और स्वतंत्र संकल्प इच्छा शक्ति में कर्म का क्या महत्त्व है।
5. कर्म के लक्षण क्या हैं मनुष्य दूसरे व्यक्तियों के कर्मों से कैसे प्रभावित होता है और उन्हें कैसे भोगना पड़ता है।
6. यह कोई भाग्यवाद नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। इसमें स्वेच्छानुसार कार्य करने की कुछ स्वतंत्रता दी गई है। क्योंकि कर्मों के फल ग्रहों के प्रभाव अथवा उनकी प्रतिक्रिया पर भी आधारित होते हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डली में दशा, तथा भुक्ति (अर्थात् कितना समय भोग चुका है, और कितना और भोगना बाकी है) पर भी निर्भर रहना पड़ता हैं। यहां पर वे आत्मा या जीवन द्वारा परिश्रम की अवहेलना भी नहीं कर रहे हैं।" इसकी व्याख्या कीजिए।
7. "महर्षियों ने मनुष्यों को कठिनाइयों का सामना करने तथा उन पर विजय प्राप्त करने के लिए वेदांत, योग, तंत्र और वेदशास्त्र का विकास किया है।" इसकी व्याख्या कीजिए।

□□□

अध्याय 11

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

(जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने आपको रचता हूँ)

भाग्य पर विश्वास क्यों

ज्योतिषशास्त्र और कर्म-ज्योतिषीय विषयों के लेखकों ने सदैव अपने लेखों में ज्योतिषशास्त्र एवं कर्म के संबंध में चर्चा की है। परंतु किसी भी लेखक ने इस महत्त्पूर्ण प्रश्न पर विचार नहीं किया है कि महर्षि पाराशर एवं वाराह मिहिर ने जो इस शास्त्र के सबसे बड़े विद्वान माने जाते हैं, कर्म का सीधा संबंध ज्योतिष से बताया है अथवा नहीं बताया है। इसके अतिरिक्त एक प्रश्न और है जिस पर विद्वान लेखकों को अपने विचार प्रकट करने चाहिए थे, अर्थात् क्या ज्योतिषशास्त्र का पुनर्जन्म के सिद्धांत के साथ सीधा संबंध है?

वृहत पाराशर होरा शास्त्र का आरम्भ क्रम के संसार संदर्भ में होता है, जिसमें हिन्दुओं के इस विश्वास का समर्थन किया गया है इस पृथ्वी पर जब-जब आसुरी प्रवृत्तियों का ज़ोर हो जाता है और धर्म की हानि होने लगती है, तब परमात्मा किसी न किसी रूप में अवतार लेते हैं। इस प्रकार ग्रहों की शुभ प्रभावशाली स्थिति में नव अवतारों ने जन्म लिया।

रामोऽवतारः सूर्यस्य चंद्रस्य यदुनायकः।
नृसिंहो भूमिपुत्रस्य बुधः सोमसुतस्य च।
वामनो विबुधेज्यस्य भार्गवो भागर्वास्य च।

कर्मो भास्करपुत्रस्य सैहिकेयस्य सूकरः।।
केतोर्मीनावतारश्च ये चान्ये तेऽपि खेटजाः।
परात्मांशोऽधिकौः येषु ते सर्वे खेचरिभिधाः।।

श्री राम ने सूर्य से, श्री कृष्ण ने चन्द्र, श्री नरसिंह ने मंगल, भगवान बुद्ध ने बुध ग्रह से श्री वामन ने बृहस्पति से, श्री परशुराम ने शुक्र, कूर्मा अवतार में शनि, सूकर अवतार ने राहू और मत्स्य अवतार ने केतू के प्रभाव में जन्म लिया। यह याद रहे कि वृहत पाराशर होरा शास्त्र का आरम्भ ही भगवान के द्वारा बार-बार अवतार लेने के प्रसंग से होता है।

परंतु प्रश्न यह उठता है कि पाराशर ने मानव जीवन के बार-बार जन्म लेने का प्रसंग कहाँ उठाया है। वास्तव में ऐसे प्रसंग उनके अनेक ग्रंथों में अनेक स्थानों पर दिए गए हैं। आइए, हम उनमें से कुछ पर विचार करें। आठवें स्थान या भाव को पूर्वापारा जनुरवृत्तम कहा गया है—जिसका अर्थ होता है, पिछले जन्म का व्यवसास, अथवा जीवन-वृत्ति। इसके अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ वहाँ आता है जहाँ पाराशर मारक अर्थात् मृत्यु के समय की चर्चा करते हैं। किसी माता के पाप कर्मों के कारण उस बच्चे की मृत्यु उससे अगले चार वर्ष अर्थात् उसकी आठ वर्ष की आयु तक हो सकती है; और उस बच्चे के अपने पाप कर्मों के कारण उसकी मृत्यु उससे आगे चार वर्ष अर्थात् उसकी बारह वर्ष की आयु तक हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु किस प्रकार होगी, यह भी उस व्यक्ति के पिछले जन्म के कर्मों पर आधारित होता है। यह मृत्यु किसी भी प्रकार से हो सकती है, अर्थात् राज की सजा से, अग्नि से, या ऊँचाई से गिरकर, असाध्य बीमारी से, किसी हथियार से ज़हर खाने से, पानी में डूबने से, आदि-आदि। पाराशर और वाराह मिहिर दोनों ने बताया है कि इन सब बातों का पता कुण्डली से लग सकता है और यह भी कि क्या वह व्यक्ति मृत्यु के समय होश हवाश में रहेगा या बेहोश होगा, उसकी मृत्यु घर में होगी या बाहर, रास्ते चलते होगी या किसी विदेश में आदि। इन दोनों ऋषियों ने पिछले, वर्तमान एवं भविष्य के जीवन के बारे में स्पष्ट रूप से बताया है।

पिछला जन्म-स्थान यह जानने के लिए कि किसी व्यक्ति का पिछला जन्म किस योनि में था, हमें सूर्य अथवा चन्द्रमा के द्रेष्कोण देखना होगा। यदि ये ग्रह बृहस्पति के द्रेष्कोण में बैठे हैं तो इसका अर्थ है, उस व्यक्ति का पिछला जन्म स्थान देवलोक में था इसे स्वर्गलोक या सबसे ऊँचा क्षेत्र भी कहते हैं। यदि ये ग्रह शुक्र अथवा चन्द्रमा के साथ बैठे हों तो उसका पिछला जन्म स्थान चन्द्रलोक में था, इसे पितृलोक भी कहा गया है। यदि ये ग्रह सूर्य अथवा मंगल के द्रेष्कोण में हों तो उसका पिछला जन्म स्थान मृत्युलोक में था, और यदि ये ग्रह शनि या बुध के साथ बैठे हैं, तो उसका पिछला जन्म स्थान नरक लोक में था।

भविष्य का जन्मस्थान-पाराशर ने कहा है कि यदि बृहस्पति छठे, सातवें या आठवें स्थान (भाव) में हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद (सर्वोच्च जाति) अर्थात् उसे देवलोक में जन्म मिलता है। वाराहमिहिर ने कहा है कि यदि बृहस्पति दसवें भाग में हो तो वह भी बहुत अच्छा होता है। यदि छठे, सातवें और आठवें घर में कोई ग्रह न हो तो छठे व आठवें घर के मालिक और भाव के द्रेष्कोण देखे जाते हैं।

वर्तमान जन्म स्थान-जब पाराशर ने पिछला जन्म स्थान व भविष्य के जन्म स्थान के बारे में जिक्र किया है जो प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान जन्म स्थान के बारे में उन्होंने कहाँ वर्णन किया है?

वास्तव में उन्होंने सीधे संदर्भ के रूप में ही इसका अनेक स्थानों पर वर्णन किया है, पर सबसे महत्त्वपूर्ण संदर्भ उन्होंने वहाँ दिया है जहाँ पिछले जन्म के शापों के बारे में बताया गया है। जैसे उन्होंने बताया है कि पिछले शापों के कारण किसी व्यक्ति के इस जन्म में संतान पैदा ही न हो, ऐसा हो सकता है। यहाँ पर पांचवां घर और मांदी एवं अन्य ग्रहों की स्थिति देखी जाती है और पिछले जन्म के पाप कैसे थे, उसकी व्याख्या की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि इस पापकर्म में सूर्य का सहयोग था, तो वह शाप पिता की ओर से था; और यदि चन्द्रमा का सहयोग था तो वह शाप माता की ओर से था; और यदि राहू मंदी के साथ बैठा है, तो इसे पिछले जन्म का सर्प दोष कहते हैं। पाराशर ने प्रत्येक प्रकार के शाप के गृहशांति या अराधना-पूजा करने के तरीके भी बताएं हैं।

अतः हमारे ज्योतिषशास्त्र के बारे में इस प्रश्न पर कोई संदेह नहीं रहना चाहिए कि हमारे ज्योतिषशास्त्र का सीधा संबंध पिछले जन्म, वर्तमान जन्म एवं भविष्य में आने वाले जन्म से पूरा-पूरा है। इसी से पुनर्जन्म के सिद्धांत को पूरी तरह से समर्थन मिलता है।

यदि ज्योतिषशास्त्र पुनर्जन्म के सिद्धांत का समर्थन करता है, और प्रत्येक हिन्दू धर्म ग्रन्थों में इसका वर्णन पाया जाता है, और गीता में भी अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख आया है, तो दो प्रश्न उपस्थित होते हैं–

1. उनके बारे में क्या कहा जाए, जो पुनर्जन्म के सिद्धांत को नहीं मानते हैं।

2. आजकल की भाषा में पुनर्जन्म का क्या वैज्ञानिक सबूत है।

इस प्रश्न का उत्तर दो प्रकार से दिया जा सकता है–

पहला तो यह है कि हिन्दुओं के धर्म ग्रंथों में अनेक स्थानों पर पुनर्जन्म की सैकड़ों घटनाएँ बताई गई हैं। स्वाभाविक रूप से यहाँ यह प्रश्न आता है कि अभारतीय तथा गैर हिन्दू व्यक्ति भी इस पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानते हैं अथवा नहीं। इस संबंध में डॉ. इयान स्टीवेन्सन' के अनुसंधान के मामलों को ध्यान में रखते हुए, सिद्धांत के बारे में कोई संदेह बाकी नहीं रह जाना चाहिए।

पुनर्जन्म के सिद्धांत से जुड़ी भारतीय परम्परा में तीन मान्यताएँ और हैं। पहली है, कर्मफल अर्थात् पिछले जन्म के कर्मों का फल। दूसरा है, कर्म संस्कार, या पिछले जन्म की मानसिक भावनात्मक प्रवृत्तियाँ और तीसरी मान्यता है, जन्म के समय शारीरिक चिन्ह। डॉ. इयान स्टीवेंसन ने सारे संसार के लगभग 600 मामलों की गहराई से छानबीन की, इसमें सभी धर्मों के व्यक्तियों के मामले थे, और सभी महाद्वीपों के थे। इससे किसी भी व्यक्ति को कोई संदेह नहीं रहना चाहिए, और इसके बाद पुनर्जन्म के मामले प्रमाणित करने के लिए किसी वैज्ञानिक सबूत की अपेक्षा नहीं रहनी चाहिए। इन मामलों में से कुछ का वर्णन नीचे किया जाता है–

श्रीमती शांती देवी माथुर–डॉ. इयान स्टीवेंसन को गली (चीराखाना) हरदयाल माथुर, देहली (जहाँ केदार जी रहते थे। उन्होंने उनके दर्शन किए हैं) की श्रीमती शांती देवी के मामले का परीक्षण करने का

मौका नहीं मिला। श्रीमती शांती देवी वर्तमान जीवन में देहली में रहती है। उनका पिछला जन्म मथुरा में हुआ था। वे अपने पिछले जन्म में जन्में बच्चों से मिलीं, जो उनसे भी ज्यादा आयु के थे। यह मामला सारे संसार के सामने तब उजागर हुआ जब महात्मा गाँधी ने इस मामले की पूरी तरह से छानबीन करने के लिए देहली के ही श्री देशबंधु गुप्ता की अध्यक्षता में एक समिति बनाई। दसियों वर्ष तक यह घटना सारे संसार के प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित होती रही। श्रीमती शांति देवी की मुत्यु सन् 1987 या 1988 में हुई थी।

श्री गोपाल गुप्ता—हमारी पीढ़ी से सबसे प्रसिद्ध घटना देहली के गोपाल गुप्ता की है जो अपने पिछले जन्म में मथुरा के मेयर रहे थे और सन् 1948 में गोली से मारे गए थे। पिछले जन्म में उनकी पत्नी अपनी जीजा के साथ षड्यंत्र रचकर अपने पति को मरवाया था। श्री गोपाल गुप्ता का जन्म देहली में सन् 1956 में हुआ था। पिछले जन्म में उनका नाम शक्ति पाल शर्मा था, और उनका जन्म 30 दिसम्बर, 1913 को हुआ था। (अगले पृष्ठों पर देखें)।

उन सभी मामलों में जो व्यक्ति अपने पिछले जन्म की घटनाओं को याद रखते हैं, यह देखा गया है कि पिछले जन्म में उनकी मृत्यु हिंसात्मक तरीके से हुई थी। पिछले जन्म के संस्कार वर्तमान जन्म में कैसे पुनः उभर जाते हैं, यह श्री गोपाल गुप्ता के मामले से स्पष्ट हो जाता है। ऐसे और भी अनेक उदाहरण हैं। जब श्री गोपाल एक बालक था, तब उसके पिता ने किसी अन्य व्यक्ति का झूठा प्याला उठाने को कहा, तो उसने यह उत्तर दिया कि वह तो ब्राह्मण है और वह प्याला उच्चिष्ट अर्थात् दूषित है, अतः वहं उसे नहीं उठा सकता। इसी बात को लेकर उसके पिछले जीवन की जाँच पड़ताल शुरु की गई थी।

श्री गोपाल की माता, श्रीमती ओमवती गुप्ता को जब वह गर्भवती थी और श्री गोपाल उनके पेट में था फलों का रस विशेषतः संतरे का रस पीने की बहुत इच्छा करती थी। (पृष्ठ) डॉ. स्टीवेंसन ने इस बात की छानबीन की और यह पाया कि शक्ति पाल शर्मा को भी फलों के रस का और विशेषतः संतरे का रस का बहुत शौक था।

कुमकुम शर्मा—बिहार के दरभंगा जिले में सुन्दरी नाम की एक महिला रहती थी जिसे सन् 1950 में उसकी बहू ने जहर देकर मार दिया था। श्रीमती सुन्दरी ने एक सर्प पाल रखा था, उसे वह खिलाती-पिलाती थी और अपने कमरे में सुलाती थी। उसकी मृत्यु के पाँच वर्ष बाद, उसने डॉ. बी. के. वर्मा के घर में दूसरी पुत्री के रूप में तीसरी संतान के रूप में दरभंगा के पास ही बेहड़ास नामक स्थान पर जन्म लिया। जब कुमकुम वर्मा 21/22 वर्ष की आयु की थी, तभी वह दरभंगा के उर्दू बाजार में अपने पिछले जीवन के बारे में पूछने लगी थी। एक और आश्चर्यजनक बात यह थी कि कुमकुम वर्मा के कानों के लटकते हुए भाग पर जन्म के समय से ही ही बालियों के छेद के निशान थे। जो उसने अपने पिछले जन्म में कानों में बालियाँ पहनने को करवाए थे। जब कुमकुम चार वर्ष की आयु की थी, तभी से वह सर्पों में असाधारण रूप से रूचि दिखाती थी। एक दिन जब वह स्कूल में थी, एक पेड़ से एक साँप आ गिरा। उसे देखकर अन्य बच्चें तो भाग गए, लेकिन कुमकुम उस साँप के पास गई, उसके सिर पर हाथ रखकर उसे पुचकारा और उसका आलिंगन किया। वह सर्प जो ऊँचाई से गिरने से स्तब्ध हो गया था, ठीक हो गया और चुपचाप रेंगकर चला गया। यह कुमकुम वर्मा के पिछले जन्म के संस्कार का ही परिणाम था।

ज्योतिषशास्त्र में हम महादशा प्रणाली से कर्मफल का पता आसानी से लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए, चार्ट 1 देखिए।

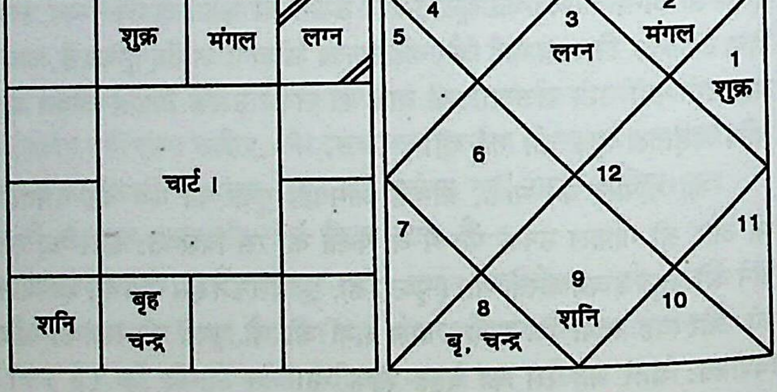

सन् 1990 में इस महिला की दशा चन्द्र-शुक्र की थी। इससे यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि–

(क) लग्न से 7वें घर का मालिक बृहस्पति छठे घर में बैठा है और मंगल उसे देख रहा है।

(ख) सातवें घर में शनि बैठा है, उसे भी मंगल देख रहा है।

(ग) चन्द्रमा से 7वें स्थान का मालिक शुक्र छठे घर में चला गया है। जबकि छठे स्थान का मालिक मंगल 7वें घर में चला गया है।

(घ) चन्द्रमा की महादशा के अधिकतर समय में (यहाँ पर चन्द्रमा लग्न से छठे घर में बैठा है और बृहस्पति के साथ बैठा है; बृहस्पति 7वें घर का मालिक है) और शुक्र की अन्तर्दशा में (शुक्र 7वें स्थान का मालिक होता है, वह चन्द्रमा से छठे घर में चला गया है), इस महिला का अपने पति से गहरा मतभेद रहना आवश्यक है।

अंततः इस महिला को अपने पति से तलाक लेना पड़ा। इस प्रकार ज्योतिषी प्रत्येक कुण्डली में ग्रहों की स्थिति देखकर अनिवार्य रूप से घटित होने वाली घटनाओं के बारे में भविष्यावणी कर सकते हैं।

इसी प्रकार एक व्यक्ति (देखें चार्ट II) का जन्म बुध की महादशा में, सूर्य की अन्तर्दशा तथा मंगल की प्रत्यंतर दशा में हुआ। उसके घर में एक बड़ी चोरी हुई, जिसमें उसकी स्त्री के 40,000 ₹ के गहने चोरी चले गए। ज्योतिषीय सिद्धांतों को लागू करके ही ऐसी घटनाओं का स्पष्टीकरण किया जा सकता है। यह व्यक्ति बार-बार हानि सह रहा है और उसके घर चोरियाँ होती रहती हैं।

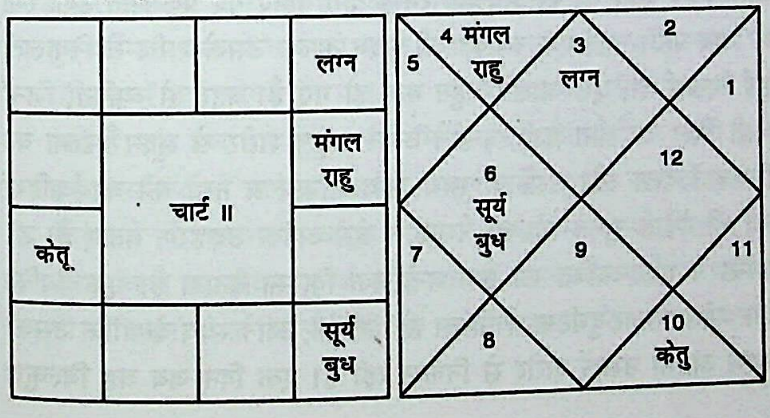

स्थूल शरीर और हेतुक (कारण बतलाने वाला) शरीर–

अर्जुन, जिसके मार्गदर्शक एवं गुरु भगवान श्री कृष्ण थे, फिर मोक्ष क्या है? यहाँ हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि तीन प्रकार के शरीर होते हैं। (1) स्थूल शरीर (2) अन्तर्चेतना (सूक्ष्म शरीर) और (3) कर्म शरीर। एक शरीर से दूसरे शरीर में आत्मा का प्रवेश स्थूल शरीर के माध्यम से ही होता है। अतः जब तक स्थूल शरीर अर्थात् लिंग देह समाप्त नहीं हो जाता, तब तक जन्म-प्रुनर्जन्म का चक्र चलता रहता है। इस संबंध में महाभारत में एक मनोरंजक गाथा है और उनसे कुरुक्षेत्र की लड़ाई के मैदान में भगवद्गीता का प्रवचन सुनकर सर्वोच्च आत्मिक बुद्धिज्ञान प्राप्त किया था। परंतु कुछ समय बाद वह उस सब ज्ञान को भूल गया और एक बार फिर श्री कृष्ण से अनुरोध किया वे उस ज्ञान को फिर ये याद दिलाने में मदद करें। श्री कृष्ण ने अर्जुन को बहुत फटकारा और उसे फिर दुबारा से गीता का सार बताया, जिसे ब्राह्मण गीता कहते हैं। अर्जुन फिर इसे भूल गया लेकिन श्री कृष्ण के मृत्युलोक से चले जाने के बाद अर्जुन गहरे आत्मिक ध्यान में लीन हो गया। श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि इस समय अर्जुन का स्थूल शरीर नष्ट हो गया था और उसे गीता का प्रत्येक पाठ याद हो आया था। इस प्रकार स्थूल शरीर नष्ट हो जाने पर शरीर को मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

इस पर भी कुछ आक्षेप उठाए जा सकते हैं कि अहिन्दू लोग इस स्थूल शरीर की कल्पना को क्यों मानें? आज से 20 वर्ष पूर्व ऐसे आक्षेप बहुत किए जाते थे, पर अब डॉ. रेमन्ड द्वारा बताए गए प्रकाशित उदाहरणों के बाद नहीं। जहाँ एक व्यक्ति की सूक्ष्म आत्मा उसके शरीर से निकलती हुई दिखाई दी, ऐसे आक्षेप बहुत कम हो गए हैं। बहुत से व्यक्ति, जिन्हें भारी दिल का दौरा पड़ा, उन्होंने अपने स्थूल शरीर से सूक्ष्म आत्मा को निकलते देखा और उसी के साथ-साथ डॉक्टर व नर्सों की कार्यवाहियों को भी देखते-सुनते रहे। डॉ. रेमन्ड ने ऐसे अनेक उदाहरण बताएं हैं। डॉ. रेमन्ड ने एक व्यक्ति का एक मनोरंजक किस्सा बताया है। एक व्यक्ति एक भीषण कार दुर्घटना में घायल हो गया था, उसने स्वयं देखा कि उसकी सूक्ष्म आत्मा उसके शरीर से निकल रही है। एक दिन जब वह बिल्कुल

ठीक हो गया तब वह अमेरिका के किसी ऐसे स्थान पर पहुँच गया जहाँ बहुत गुंडे-बदमाश लोग रहते थे। वहाँ पर एक गुंडे ने उसकी छाती पर पिस्तौल रखकर उसे डराना चाहा, पर मौत के डर से भी वह नहीं डरा। इस पर गुंडे ने उससे पूछा कि वह डरा क्यों नहीं, तो उसे बताया कि चूंकि उसे स्वयं यह अनुभव हो चुका है कि मृत्यु के पश्चात् भी जीवन है, और जीवन के पश्चात् मृत्यु है, इसलिए उसे कोई डर नहीं लगा।

यद्यपि उत्तरी भारत में प्रचलित भृगु संहिता और दक्षिण भारत में प्रचलित नाड़ी में पिछले जन्म के बारे में संदर्भ दिए गए हैं, फिर भी किसी भी ज्योतिषी के लिए यह संभव नहीं है कि वह किसी व्यक्ति को विश्वास के साथ यह बात बता सके कि वह व्यक्ति पिछले जन्म में क्या था।

एक उच्चकोटि के **ज्योतिषीय-ग्रंथ-कर्म विपाक संहिता** में यह बताया गया है कि किसी भी व्यक्ति के पिछले जन्म का आभास उस व्यक्ति के जन्म नक्षत्र (चन्द्रमा जिस नक्षत्र में है) उसके चरण से लग सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ज्योतिषशास्त्र सम्पूर्ण रूप से मनुष्य के पिछले, वर्तमान एवं भविष्य के जीवन से संबंधित है। यह बात इसी कारण से है कि ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी लोगों ने तीन प्रकार के कर्म बताएं हैं। एक तो संचित कर्म जो हमारे सभी पिछले जन्मों के कर्मों के इकट्ठा बाकी बचे हैं। दूसरे प्रारब्ध कर्म, अर्थात् वे कर्म जो संचित कर्मों में से इस जन्म में अच्छे या बुरे रूप में भोगने के लिए गए हैं और तीसरे आगामी कर्म, जो हम अपने पिछले जन्मों के कर्मों के फल भोगते हुए वर्तमान जन्म में कर्म को करते हैं तथा जिनका फल इस जन्म में अथवा भविष्य में हमें भोगने हैं। जब तक ये सभी कर्म पूर्णतः समाप्त नहीं हो जाते हैं, तब तक हमें मुक्ति नहीं मिल सकती है। यहाँ पर सभी कर्मों के पूर्णतः समाप्त हो जाने का अर्थ है, स्थूल शरीर पूर्णतः नष्ट हो जाना। इसी कारण से ही, पाराशर व वाराह मिहिर ने प्रत्येक मनुष्य के पिछले, वर्तमान एवं भविष्य के जीवन-पुनर्जन्म के बारे में बताया है। यहाँ पर यह जानना भी रूचिकर होगा कि **जैमिनी के ज्योतिषशास्त्र** में यह बताया गया है

कि किसी भी मनुष्य की कुण्डली में कारकांश एवं अमात्य कारक का परीक्षण करने से यह पता लग सकता है कि उस व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त होगा या नहीं।

यहाँ हमारे लिए यह बताना आवश्यक है कि ज्योतिष का सिद्धांत 100 प्रतिशत कर्म के सिद्धांत एवं पुर्नजीवन के सिद्धांत पर आधारित है। अब पुनर्जन्म के बारे में पश्चिमी देशों में और भी वैज्ञानिक प्रमाण आने लगे हैं, जबकि भारतीयों के लिए तो यह एक परम्परागत विश्वास की बात हो गई है।

महाभारत में पिछले जन्म के कर्मों का संदर्भ दिया गया है, और बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में यह कहा गया है कि कोई व्यक्ति अपने पिछले जन्म के और वर्तमान जीवन के कर्मों के फल से बच नहीं सकता है। कर्म एक प्रकार की गाय का बछड़ा है जो गायों के झुंड में से भी अपनी माँ–गाय को पहचान सकता है। प्रत्येक कर्म उसके करने वाले व्यक्ति के पीछे सदैव लगा रहता है। इसी कारण से यह कहा गया है कि–

अवश्यमेव भुक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभ
न भुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटि शतैरपि।।

कर्मों का फल चाहे अच्छा हो या बुरा, उसे भोगना, सहन करना ही पड़ेगा। वे अन्यथा समाप्त नहीं होते हैं।

इसी प्रकार, महाभारत में अन्यत्र यह कहा गया है, जिसमें ज्योतिषशास्त्र और कर्म का संबंध, ग्रह एवं नक्षत्रों से बताया गया है–

केवलं ग्रहनक्षत्रम न करोति शुभशुभम्।
सर्वम्आत्मकृत कर्म लोकवादो ग्रहा इति।।

इसका अर्थ यह है कि केवल ग्रह या नक्षत्र ही शुभ या अशुभ परिणाम नहीं देते है, बल्कि यह बात प्रत्येक व्यक्ति के कर्म पर भी निर्भर रहती है, यद्यपि प्रचलित यही है कि केवल नक्षत्र और ग्रह ही प्रत्येक व्यक्ति को कोई सही या गलत कार्य करने की प्रेरणा देते हैं और उसे ऐसा करने को बाध्य कर देते हैं।

ज्योतिषशास्त्रः भाग्य और संकल्प शक्ति/स्वतंत्र इच्छा शक्ति

जो व्यक्ति ज्योतिषी नहीं है; उनके लिए इस प्रश्न पर विचार करना कि भाग्य और स्वतंत्र इच्छा शक्ति क्या है; केवल एक तर्क शास्त्र की बात है। बहुत से लेखकों ने इस विषय पर अनेकों पुस्तकें लिखी हैं, और इससे उनके पाठक भी भ्रम में फंस गए हैं। परन्तु किसी ज्योतिषी के लिए इस प्रश्न पर विचार करना, केवल तर्क-वितर्क करने वाली बात नहीं है पर इस विषय पर गहनता से अध्ययन करने का अर्थ है, उसके अपने ज्ञान की क्षमता बढ़ाना, क्योंकि ज्योतिषशास्त्र एक प्रत्यक्ष शास्त्र है, और यह एक ऐसी उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करना है, जिसके विषय प्रमाणों से भरे पड़े हैं।

कोई भी ज्योतिषी ज्योतिषशास्त्र द्वारा तीन बातें देख सकता है–

(i) वह समय, जब भाग्य में जो लिखा है, उसे होना है, वह व्यक्ति उसमें कुछ नहीं कर सकता।

(ii) वह समय, जहाँ पर कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से यदि वह समय अच्छा है, तो उसका भरपूर लाभ उठा कर, मेहनत से जो भाग्य में लिखा है, उसकी सबसे ऊँची सीढ़ी तक पहुँच सकता है; और यदि वह समय खराब है तो उस समय को टाल कर विजय प्राप्त कर सकता है यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि क्या कोई व्यक्ति अपने दुर्भाग्य पर पूरी तरह से विजय पा सकता है या नहीं।

(iii) वह समय, जिसके बारे में ज्योतिषी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि उस समय के दौरान में भाग्य अपना काम करेगा अथवा वह व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा से कुछ भी कर सकता है।

इन सभी बातों को उदाहरण देकर स्पष्ट किया जा सकता है और अनेक पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। यहाँ पर केवल कुछ ज्योतिषियों द्वारा उदाहरण दिए जाते हैं जिनसे यह स्पष्ट हो सकेगा कि इन तीन बातों का ठीक अर्थ क्या है।

भाग्य के बारे में निश्चित धारणाएँ-भाई/बहनों में सबसे बड़ा/सबसे छोटा होना

यहाँ हम छह चार्ट देख रहे हैं, और आपको यह बताना है कि इन छहों कुण्डलियों में एक समान बात क्या है। चार्ट 1 से 6

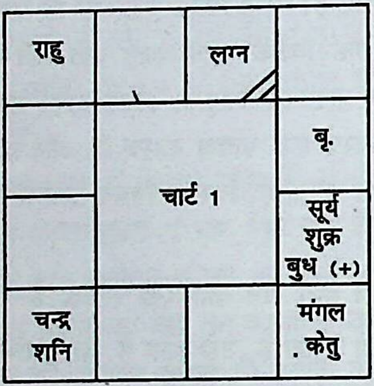

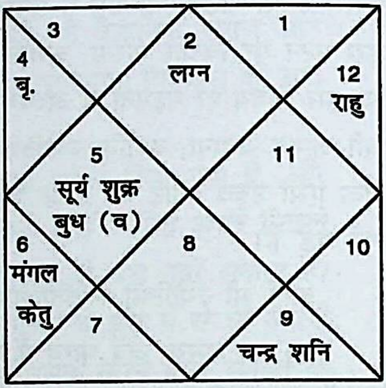

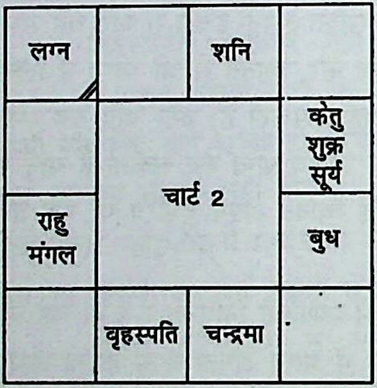

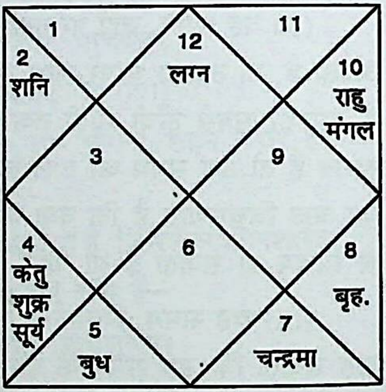

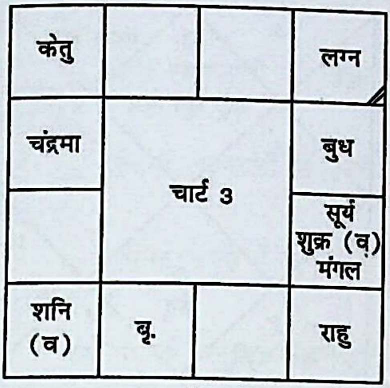
केतु
लग्न
चंद्रमा
बुध
चार्ट 3
सूर्य
शुक्र (व)
मंगल
शनि
(व)
बृ.
राहु

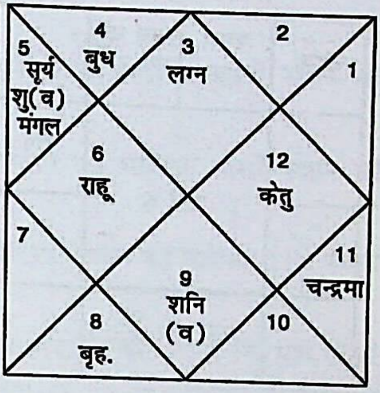
4
बुध
3
लग्न
2
1
5
सूर्य
शु(व)
मंगल
6
राहू
12
केतु
7
11
चन्द्रमा
9
शनि
(व)
8
बृह.
10

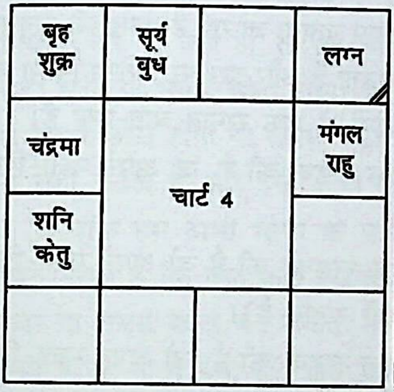
बृह
शुक्र
सूर्य
बुध
लग्न
चंद्रमा
मंगल
राहु
चार्ट 4
शनि
केतु

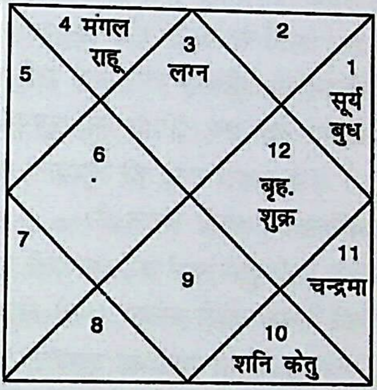
4 मंगल
राहू
3
लग्न
2
5
1
सूर्य
बुध
6
12
बृह.
शुक्र
7
11
चन्द्रमा
9
8
10
शनि केतु

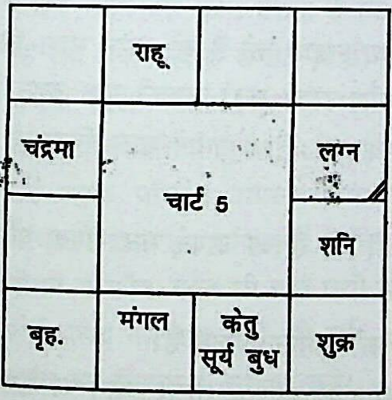
राहू
चंद्रमा
लग्न
चार्ट 5
शनि
बृह.
मंगल
केतु
सूर्य बुध
शुक्र

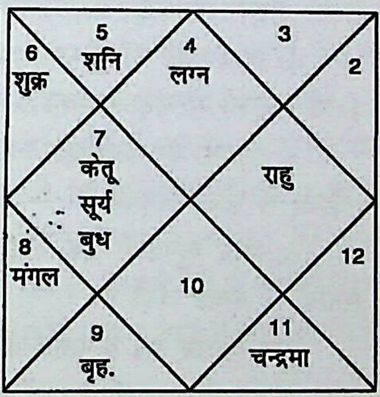
5
शनि
4
लग्न
3
2
6
शुक्र
7
केतू
सूर्य
बुध
राहु
8
मंगल
10
12
9
बृह.
11
चन्द्रमा

चंद्रमा	मंगल शुक्र	लग्न राहु सूर्य बुध	
	चार्ट 6		शनि
	केतु	बृह वक्री	

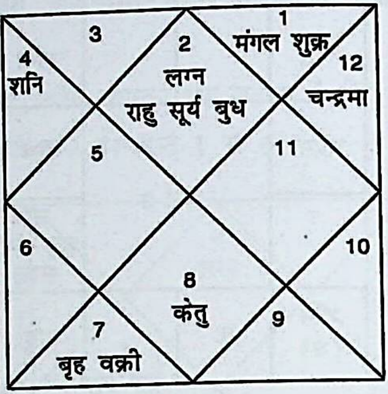

यहाँ पर केवल एक अनुभूत नियम बताया जा रहा है। कोई भी अनुभूत नियम 60 प्रतिशत मामलों में सही बैठता है और इस पर भरोसा किया जा सकता है। अब देखिए इन कुण्डलियों मे एक समान बात क्या है।

1. पहले चार्ट की कुण्डली एक लड़के की है, जो अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान है।

2. दूसरे चार्ट की कुण्डली एक लड़की की है जो अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान (वैसे सातवीं संतान है)।

3. तीसरे चार्ट की कुण्डली एक लड़के की है, जो अपने माता-पिता के दो लड़कों में बड़ा लड़का है।

4. चौथे चार्ट की कुण्डली एक लड़के की है जो अपने माता-पिता के दो लड़कों में बड़ा लड़का है और उससे बड़ी उसकी एक बहन है।

5. पांचवी कुण्डली एक लड़के की है जो अपने माता-पिता के दो लड़कों में छोटा लड़का है।

6. छठी कुण्डली एक लड़की की है जो अपने माता-पिता की 5 संतानों में सबसे बड़ी है।

अब देखिए इन कुण्डलियों की समानता क्या है।

1. पहली कुण्डली में 11वें स्थान का मालिक तीसरे स्थान पर बैठा है।

2. दूसरी कुण्डली में 11वें स्थान का मालिक तीसरे स्थान पर बैठा है।

3. तीसरी कुण्डली में 11वें स्थान का मालिक तीसरे स्थान पर बैठा है।

4. चौथी कुण्डली में तीसरे स्थान का मालिक 11वें स्थान पर बैठा है।

5. पाँचवी कुण्डली में 11वें स्थान का मालिक तीसरे स्थान पर बैठा है।

6. छठी कुण्डली में कुण्डली में तीसरे स्थान का मालिक 11वें स्थान पर बैठा है।

यहाँ पर जो अनुभूत नियम बताया गया है, वह यह है कि यदि तीसरे स्थान का मालिक 11वें स्थान पर बैठा हो, या 11वें स्थान का मालिक तीसरे स्थान पर बैठा हो, तो वह व्यक्ति अपने भाई-बहनों में या तो सबसे बड़ा होगा या सबसे छोटा होगा; या अपने भाइयों में अथवा अपनी बहनों में सबसे छोटा होगा या सबसे बड़ा होगा। यह नियम 60 प्रतिशत मामलों में सही बैठता है और इसे उल्टा लागू करके भी देखा जा सकता है।

चूंकि हम अभी भाग्य के बारे में बात कर रहे थे, अत: यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या कोई व्यक्ति अपने चाहने से भाई-बहनों में सबसे बड़ा या सबसे छोटा बन सकता है, अथवा यह भाग्य का काम है। यदि ऐसा है तो भाग्य क्या है? चाहे कोई व्यक्ति भाग्य पर विश्वास करे या न करे, यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या कोई व्यक्ति यह चाह सकता है कि वह एक विशेष समय पर ही पैदा हो, विशेष परिवार में ही पैदा हो, अथवा विशेष माता-पिता के घर में ही उसका जन्म हो, या वहाँ की विशेष परिस्थितियाँ हों आदि। ऐसा कब हो सकता है जब उसे अपने माँ-बाप, भाई-बहन, परिवार, सम्पन्नता या गरीबी की परिस्थितियों को चुनने का अधिकार प्राप्त हो। यदि कोई व्यक्ति ऐसी सूची बनाने लग जाए कि उसके जीवन में कौन-कौन सी बातें ऐसी हो रही हैं, जिनके बारे में उसकी अपनी कोई पसंद की राय नहीं ली गई, तो कोई कारण नहीं है कि वह मनुष्य भाग्य पर विश्वास क्यों न करे।

मैं इसको समझाने के लिए विद्यार्थियों से कक्षा में पूछा करता हूँ कि-

भगवान ने यह शरीर देते समय हमसे पूछा था कि कैसा शरीर दूँ। सुन्दर बनाऊँ या कुरूप? उत्तर होगा नहीं। दूसरा भाव है धन/वाणी का। उसने पूछा नहीं कि गूँगा बनाऊँ या तोतला। पुनः उत्तर नकारात्मक होगा। तृतीय भाव भाई-बहिनों का, चतुर्थ स्थान माता का, पंचम भाव बुद्धि/संतान का, षष्ठ भाव शारीरिक शक्ति/रोग आदि का, यहाँ भी हमारे से कुछ पूछा नहीं गया। सप्तम भाव पति/पत्नि का (हम अपनी ओर से जीवन साथी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वृद्ध हो जाते हैं और विवाह होने के बाद भी अपने भाग्य को कोसते हैं) अर्थ यह है कि यह हमारी इच्छा नहीं है इसके बाद अष्टम भाव आयु स्थान है-कितने वर्ष के लिए हमें मृत्युलोक में भेजा गया है। यह भी भेजने वाला जानता है। नवम भाव-पिता/धर्म भाग्य का है। क्या धर्म होगा, कौन पिता होगा व भाग्य कैसा होगा। यह भी हमारी इच्छा पर नहीं है। दशम भाव भगवान ने कहा है-कर्मण्य अधिकारस्तु ......। वह कर्म करना हमारा अधिकार है, जहाँ प्राणी स्वतंत्र है।

प्रत्येक कुण्डली में नवां घर पिता व धर्म का माना जाता है। आइए, नीचे दी गई चार कुण्डलियों में देखिए, नवें घर का मालिक किस-किस स्थान पर बैठा है। चार्ट 7 से 10

पहली कुण्डली (चार्ट 7) में नवें घर का मालिक आठवें घर में बैठा है और उसके साथ केतू है और डॉ. पी.वी. नरसिंह राव अपने बचपन में ही गोद चले गए थे, अर्थात् उनका पिता बदल गया था। इस पर उनका कोई अधिकार, या उनकी कोई इच्छा काम नहीं कर रही थी। जैसा कि ग्रह दिखाई दे रहे हैं, क्या यह भाग्य पर आधारित नहीं था?

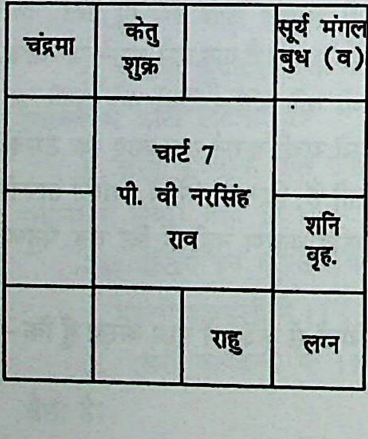

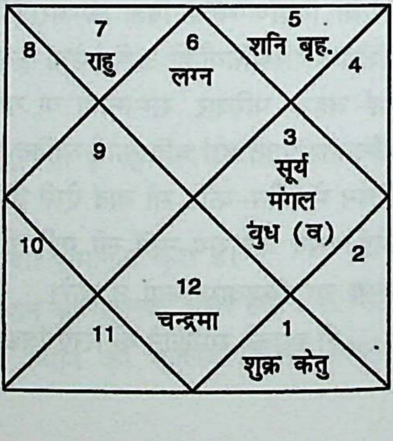

			शुक्र बुध
केतु	चार्ट 8 जे. चोकाराव		मंगल सूर्य
			राहु
लग्न		बृह.	शनि चन्द्र

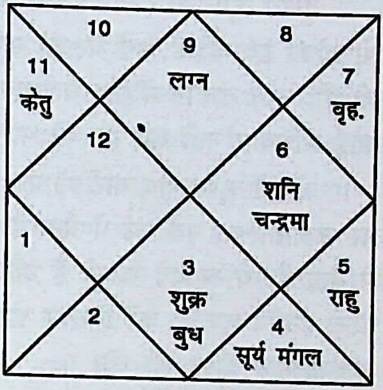

लग्न केतु	बृह (व) शनि (व)		
	चार्ट 9 एक करोड़पति व्यक्ति		
बुध सूर्य	शुक्र	चंद्रमा मंगल	राहु

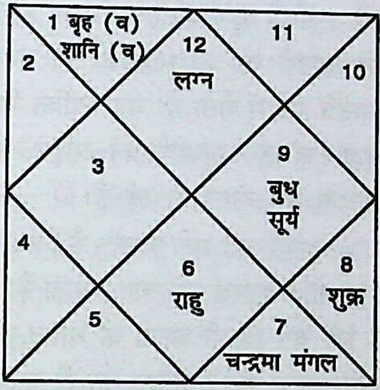

राहु		बुध मंगल	चंद्रमा सूर्य शुक्र
	चार्ट 10 एक बहुत बड़ा अफसर		
बृह (व)			
		लग्न	केतु

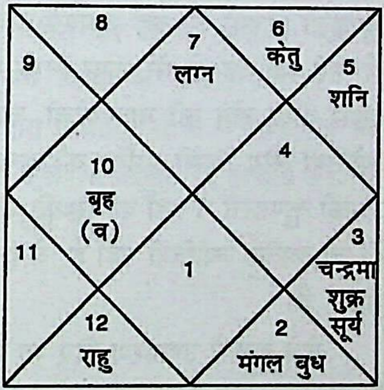

दूसरी कुण्डली (चार्ट 8) में, जो भारतीय संसद में कांग्रेस के सदस्य श्री चोका राव की है, नवें घर का मालिक आठवें घर में बैठा है। ये श्रीमान जी भी अपने बचपन में गोद चले गए थे; एक ऐसी घटना, जिस पर उनका कोई अधिकार नहीं था। यह भी भाग्य ने पहले ही निर्धारित कर रखा था।

तीसरी कुण्डली (चार्ट 9) एक करोड़पति व्यक्ति की है। इसमें आठवें घर का मालिक नवें घर में बैठा है और 9वें घर का मालिक आठवें घर में बैठा है। ये व्यक्ति पारसी हैं और जोरोस्ट्रियन धर्म को मानने वाले हैं, परन्तु इन्होंने गुजरात की गिरनार पहाड़ियों में एक गुरु से हिन्दू साधना में आध्यात्मिक दीक्षा ली थी।

चौथी कुण्डली (चार्ट 10) भी तीसरी कुण्डली के समान ही है। इसमें भी आठवें घर का मालिक नवें घर में बैठा है और नवें घर का मालिक आठवें घर में बैठा है। यह व्यक्ति हिन्दू-ब्राह्मण हैं। इन्होंने जापान के एक बुद्ध धर्म के अनुयायी को अपना गुरु बनाया है और उनसे बुद्ध धर्म की साधना की दीक्षा ले रहे हैं।

इससे यह पता चलता है कि जो भाग्य में लिखा है, वह होकर रहता है। ज्योतिषशास्त्र इसे बता सकता है। किसी ज्योतिषी की कठिनाई यह होती है कि वह किसी घटना के घटित होने का ठीक समय बता सकता है या नहीं। परन्तु यह निश्चित तौर से बताया जा सकता है कि जो घटना उसकी कुण्डली कहती है, वह अवश्य होकर रहेगी, चाहे कोई व्यक्ति कितना ही कहे कि यह तो मेरे ऊपर निर्भर था, मुझे वह गुरु अच्छा लगा तो मैंने उससे दीक्षा लेने की बात सोची, चाहे वह किसी और धर्म का गुरु था। ज्योतिषी लोग किसी व्यक्ति की अच्छी व बुरी घटनाओं को जानते हैं और उसकी कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार सही भविष्यवाणी कर सकते हैं। जो व्यक्ति ज्योतिषी नहीं है, वे इन घटनाओं का पूर्व अनुमान नहीं लगा सकते हैं।

ऐसे हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिसमें सभी वर्ग के व्यक्ति हैं, जहाँ पर यह देखा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के जीवन में ऐसी घटनाएँ होती हैं जिन पर उस व्यक्ति का कोई अधिकार नहीं होता और वे भाग्य पर आधारित होती हैं।

II

स्वतंत्र इच्छा का क्षेत्र–कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ कोई व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग कर सकता है पर वहाँ भी उसे एक सीमित दायरें में रहना होगा, जो उसके भाग्य में पहले से निश्चित है। वह व्यक्ति उस सीमा से आगे नहीं जा सकता। यह बात विभिन्न कुण्डलियों में अलग-अलग तरीके से समझाई जा सकती हैं। उदाहरण के लिए हम ज्योतिषशास्त्र के अनुसार अपना भविष्य चुनने के बारे में किसी विद्यार्थी को उसकी शिक्षा के बारे में दी जाने वाली राय को लेते हैं।

ऐसे करते समय, हमें निम्न बातों पर ध्यान देना होगा–

(1) पांचवे स्थान का मालिक लग्न से कौन से घर में बैठा है, और उस पर अन्य ग्रहों की कैसी दृष्टि पड़ रही है। उस घर के मालिक की दशा क्या है।

(2) उसके बाद देखिए कि पांचवे घर पर किस-किस ग्रह का असर पड़ रहा है और बुध से पांचवे घर के मालिक की क्या स्थिति है।

(3) इन दोनों का सामूहिक और ग्रहों के प्रभाव एवं उनकी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए, निश्चय कीजिए कि वह व्यक्ति शिक्षा के लिए किस-किस क्षेत्र में जा सकता है।

(4) इन क्षेत्रों में सबसे बलवान क्षेत्र एवं उस समय चल रही महादशा के प्रभाव को जानकर ही, उस व्यक्ति की जीवन-वृत्ति के बारे में रुचि तथा उच्च शिक्षा के बारे में चुनाव किया जा सकता है।

इस प्रकार पहले से भाग्य द्वारा निर्धारित सीमा में रहते हुए, कोई भी व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में कुछ भी निर्णय ले सकता है। यह बात यहां उदाहरण देकर समझाई जा रही है।

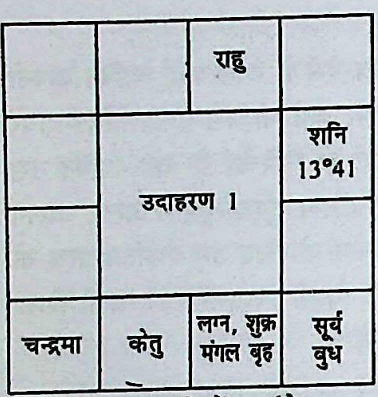

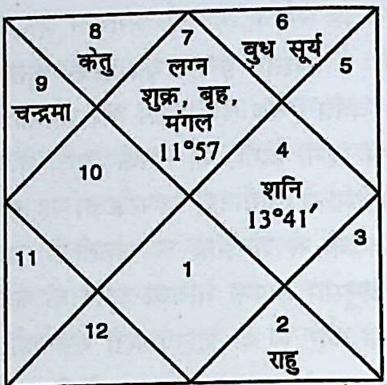

इस कुण्डली में पाचंवे घर का मालिक शनि अपने नक्षत्र में ही बैठा है और चन्द्रमा के घर में बैठा है। बुध से पांचवे स्थान पर मकर राशि है जिस पर शनि व मंगल दोनों की दृष्टि पड़ रही है और यहाँ मकर राशि का स्थान मुख्य है (जिसका मालिक शनि है) इन सब बातों को देखने से, शनि का प्रभाव तीन बार आता है, चन्द्रमा का एक बार, और मंगल का भी एक बार। अतः इस व्यक्ति की शिक्षा तकनीक प्रकार की होगी। चन्द्रमा का संबंध वाहन, मोटरगाड़ी से है, अतः इस व्यक्ति ने आटोमोबाइल इंजीनियरी में डिप्लोमा पूरा किया है।

यहां पर इस व्यक्ति की इच्छा सिंचाई अथवा इलैक्ट्रिकल इंजीनियर बनने की भी हो सकती थी। परन्तु चन्द्रमा के संचार माध्यम, तीसरे स्थान पर होने के कारण इस व्यक्ति को आटोमोबाइल इंजीनियरिंग को चुनना पड़ा।

दूसरा उदाहरण–

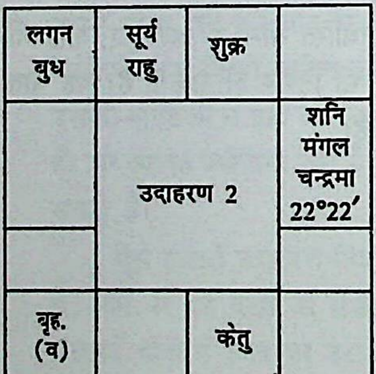

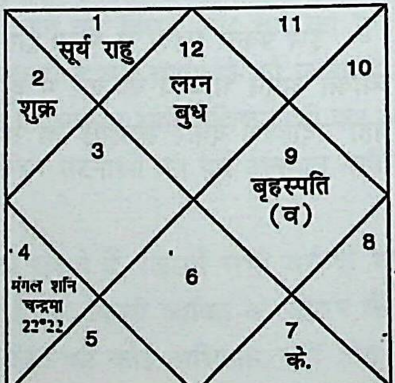

इस व्यक्ति की कुण्डली में चुनाव करने की ज्यादा गुजाइश नहीं है क्योंकि लग्न से भी और बुध से भी पांचवें घर में शनि, मंगल और चन्द्रमा बैठे हैं, ये सभी बुध के नक्षत्र में आते हैं। इस व्यक्ति ने पहले मैकेनिकल इंजीनियरिंग किया, उसके बाद पैट्रोल पंप के प्रबंधकर्ता का काम सीखा, और अंत में मकान बनाने के स्वतंत्र व्यवसाय में लग गया।

तीसरा उदाहरण–

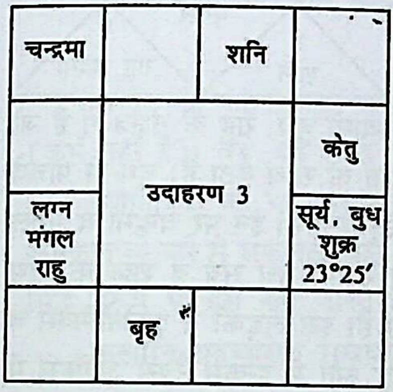

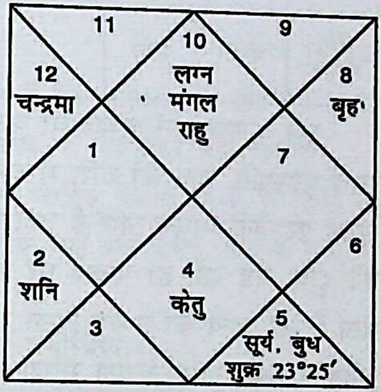

इस कुण्डली में पांचवें घर में शनि बैठा है, और उस पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। यहां पांचवा घर वृष राशि का है और इसका मालिक शुक्र है। पांचवे घर का मालिक शुक्र अपने नक्षत्र में बैठा है, पर इसके साथ सूर्य व बुध भी बैठे हैं और उन पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। कुल मिलाकर शनि, बृहस्पति एवं शुक्र के प्रभाव को देखते हुए शुक्र का प्रभाव अधिक शक्तिशाली दिखाई दे रहा है। बुध का पाचंवे घर के मालिक शुक्र के साथ संयोग दर्शाता है कि इस व्यक्ति की रूचि अकाउन्टस (हिसाब-किताब) की ओर रहेगी, या कॉमर्स या इकोनोमिक्स की ओर इस लड़की को फैशन डिजाइन का कोर्स (बी.काम. करने के बाद, कॉमर्स में रूचि) करनं की सलाह दी गई। उसने वह डिप्लोगा सफलता के साथ पूरा किया और उसने अब अपना व्यापार शुरू किया है।

चौथा उदाहरण-

		लग्न बृह	केतु
शुक्र, सूर्य बुध 16°25'	उदाहरण 4		
राहु चन्द्रमा	मंगल	शनि	

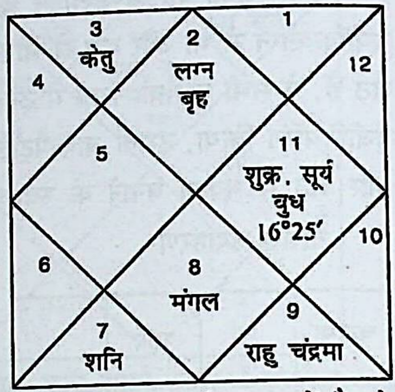

इस कुण्डली में पांचवे घर का स्वामी बुध, राहु के नक्षत्र में है जो स्वयं बृहस्पति, गुरू की राशि में चन्द्रमा के साथ बैठा है। बुध से पांचवे स्थान पर जैनी मिथुन राशि है जहां केतू बैठा है। इन पर चन्द्रमा व मंगल की दृष्टि पड़ रही है। पांचवे घर का स्वामी बुध सूर्य व शुक्र के साथ बैठा है जो अन्य का प्रभाव दिखा रहा है। इस लड़की ने इकोनोमिक्स व इतिहास पढ़ा, गाना-नाचना सीखा और अंत में इन्कम टैक्स आफिस में सरकारी ट्रेनिंग लेकर इनकम टैक्स ऑफिसर बन गई।

इन चार उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि इस प्रकार सैकड़ों कुण्डलियों का अध्ययन करने के बाद ही किसी ज्योतिषी को इस नियम की पूरी जानकारी हो सकती है और तब वह किसी व्यक्ति के बारे में यह बात कह सकता है कि उसके पास शिक्षा के किन-किन क्षेत्रों में जाने की संभावनाएं होगी और वह व्यक्ति किस-किस में जा सकता है। उपर्युक्त चौथे उदाहरण में हमने देखा कि इस महिला ने अपने व्यावसायिक क्षेत्र में भी गहरी रूचि ली, और साथ में कला की ओर भी गई, अर्थात जैसे-जैसे उसकी ग्रह-दशाओं में परिवर्तन हुआ, उसका कार्य क्षेत्र भी बदलता गया। इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के बदलते हुए व्यवसाय का भी कुण्डली से पता लगाया जा सकता है। इसके बाद ऐसे व्यक्ति को सलाह दी जा सकती है कि उसे अन्ततः किस क्षेत्र की ओर जाना चाहिए और किस क्षेत्र की

ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उस व्यक्ति के बदलते रूख के विषय में भी एक अच्छी सुविचारित योजना बनाई जा सकती है।

इन सभी उदाहरणों में आपने देखा कि चुनाव करने की सीमा पहले से ही भाग्य द्वारा निश्चित कर दी जाती हैं।

III

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः

(गीता IV 16)

अर्थात यह कहना बहुत कठिन है कि क्या कर्म है और क्या अकर्म (कर्म नहीं है)। बड़े-बड़े सिद्ध पुरूष भी यह नहीं बता सकते।

ज्योतिषियों को यह याद रखना चाहिए कि वे कभी भी कर्म और कर्मफल के बारे मे सफलतापूर्वक ठीक नहीं बता पाएंगे, क्योंकि बड़े-बड़े सिद्ध पुरूष भी इसे नहीं जानते हैं।

फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।
को वक्ता तारतम्यस्ये तमेकाम् वेधसम्बिनाः।।

हमारे पास भी ऐसे मामले आते है जहां हम मौन हो जाते हैं कि क्या भविष्यवाणी की जाए। ऐसे मामलों मे कोई नहीं कह सकता, कहां तक भाग्य रेखा है और कहां से स्वतंत्र रूप से कार्य करने का क्षेत्र (समय) आरम्भ होता है।

इस बात को सिद्धांत के रूप में बताने की बजाए, आइए हम तीन व्यक्तियों की कुण्डली देखकर इसे स्पष्ट करेंगे। यह कहानी एक असाधारण आत्मिक कहानी है।

ता. 15 जुलाई, 1993 की रात्रि को प्रख्यात भारतीय (श्री चन्द्रशेखर जो नवम्बर 1990 से मई 1991 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे) को एक स्वप्न आया। उस समय वे दक्षिण भारत में बंगलौर के एक दौरे पर गए हुए थे। उस स्वप्न में उन्हें दिखाई दिया कि उनके छोटे भाई के तीन-चार छोटे छोटे बच्चे, पोता एक भयानक दुर्घटना में ग्रस्त होने जा रहे हैं।

लगभग इसी समय, एक महत्वपूर्ण नेपाली नेता की लड़की को भी इस प्रकार का स्वप्न आया, और उसने भूतपर्व प्रधानमंत्री से सम्पर्क करने का प्रयत्न किया, पर सम्पर्क नहीं कर पाई।

बच्चे के पिता को भी ऐसा ही स्वप्न आया, जिसमें एक महात्मा उसे चेतावनी देता है।

एक छोटा बच्चा बारिश के पानी से भरे एक छोटे से टैंक में गिर जाता है। उसकी मैडिकल रिपोर्ट का एक हिस्सा यहां दिया जा रहा है।

घटना का संक्षेप वर्णन–Case History

"डेढ साल का एक बच्चा यशोवर्धन आल इंडिया इंस्स्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस के पेडिआट्रिक इन्टेंसिव केयर युनिट में ता. 18 जुलाई 1993 को 1 बजकर 20 मिनट रात्रि पर दाखिल किया गया। उसे डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल से एक पोर्टेबिल वेंटीलेटर पर लाया गया था।

17 जुलाई 1993 को पूर्वाह्न में यह बच्चा अपने घर के पार्क में बारिश के गन्दे पानी से भरे एक छोटे टैंक में अचानक गिरकर डूब गया था। इस दुर्घटना के 6–7 मिनट बाद उसे उठाया गया और उसके बाद 7–8 मिनट में उसे डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया, जहां पाया गया कि उसे सांस लेने में रूकावट हो रही थी और हृदय की धड़कन नहीं थी। उसे इ. सी. जी. मोनीटर पर Asystole (ऐसिसटोल) के साथ रखा गया। 10 मिनट के सी. पी. आर की कोशिशों के बाद उसके हृदय की धड़कन शुरू हुई, और उसे Assisted Ventilation पर रखा गया। ऐसा लगता हैं कि सांस लेने में रूकावट आने व Asysteole के साथ रखने में 20-25 मिनट लग गए थे, उसके बाद ही उसके दिल की धड़कन फिर से आरम्भ हुई। वह डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में लगभग 36 घंटे रहा और इस दौरान उसे Respiration-Metabolic Acidosis, Hyponatremia और Hypokalemia के जोर के दौरे आए।"

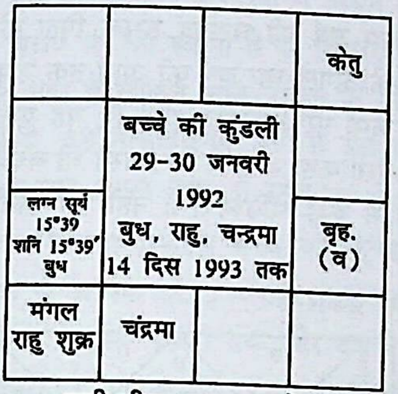

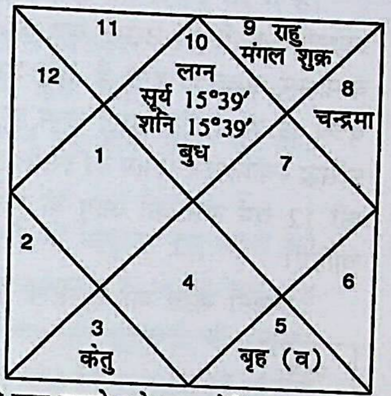

इसी बीच एक बार तो डॉक्टरों ने उस बच्चे को मृत घोषित कर दिया था। जब उस बच्चे की कुण्डली दिखाई गई तो उसके माता-पिता की कुण्डलियां भी मंगवाई गई। तीनों कुण्डलियों को एक साथ देखने के बाद कोई ठोस दृढ़ निश्चय के साथ नहीं कही जा सका, केवल साधारण तौर से भविष्यवाणी अनेक चरणों में की गई जो इस प्रकार थी-

उस बच्चे की कुण्डली-उस बच्चे की कुण्डली इस प्रकार है-

इस कुण्डली में केन्द्र के चारों स्थानों में कोई शुभ ग्रह नहीं है। लग्न में षष्ठेश बुध तथा अष्टमेश सूर्य बैठे हैं। अष्टमेश दुघर्टनाओं का स्वामी है। इसके साथ शनि अशुभ ग्रह बैठा भी है जो अच्छी स्थिति नहीं है। लग्न का मालिक शनि पूरी तरह से अस्त है। बृहस्पति अष्टम में है तथा चन्द्रमा से केन्द्र मे है, जिससे कुछ आशा की जा सकती है। यह बच्चा बुध-राहू-शुक्र की दशा में से गुजर रहा था। यहां पर छठे घर का स्वामी बुध, और 12वें घर में राहू व शुक्र होने के कारण उसं बच्चे को अस्पताल में भर्ती होना आवश्यक था। गोचर में शनि, कुंभ राशि में है और मंगल सिंह राशि में है 2/8 भावों को प्रभावित किये हुए है। अंतः ये भी कोई सहायता नहीं कर सकते हैं। केवल सिंह राशि से बृहस्पति की राहू एवं शुक्र पर दृष्टि की झलक दिखाती है।

लेकिन चन्द्रमा से, बुध आठवें घर का स्वामी हो गया, जबकि राहू दूसरे घर में बैठा है, और शुक्र सातवें घर का स्वामी भी दूसरे घर में बैठा है, तो इन्होंने इस भयानक दुर्घटना से बचने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा।

किसी भी बच्चे की कुण्डली में पहले चार वर्ष की अवस्था तक, जो घटनाएं होती है वे उस बच्चे की माता के पिछले जन्म के कर्मों पर

आधारित होती हैं। उसके बाद के चार वर्ष की घटनाएं उसके पिता के कर्मों पर आधारित होती है, और उसके अगले चार वर्ष की आयु तक उस बच्चे के स्वयं के पिछले जन्म के कर्मों पर आधारित होती हैं, यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषीय नियम है। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि किसी भी बच्चे की 12 वर्ष तक की आयू के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जानी चाहिए।

उसकी माता की कुण्डली इस प्रकार है-

शनि (व)	राहु		
	बच्चे की माता की कुंडली चन्द्रमा राहु 5 अगस्त 1993 तक		बृह.
			चन्द्रमा बुध शुक्र सूर्य
	लग्न मंगल	केतु	

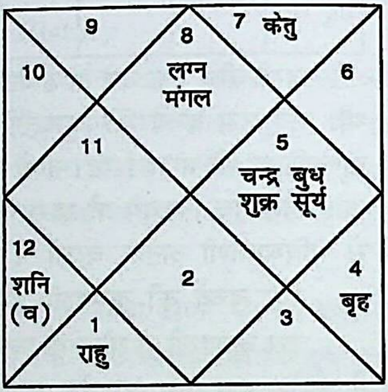

इस बच्चे की माता की कुण्डली में चन्द्रमा का सप्तांश के दूसरे और राहू का आठवें भाव में होना, ठीक नहीं हैं। लेकिन यह दशा 5 अगस्त, 1993 को समाप्त हो जाएगी। उसके बाद कुछ आशा की जा सकती है।

उस बच्चे के पिता की कुण्डली इस प्रकार है-

		बृह. राहु	लग्न
शनि मंगल बुध सूर्य	बच्चे की पिता की कुंडली राहु शुक्र चन्द्रमा 13 अगस्त 1993 तक		
चन्द्रमा शुक्र			
	केतु		

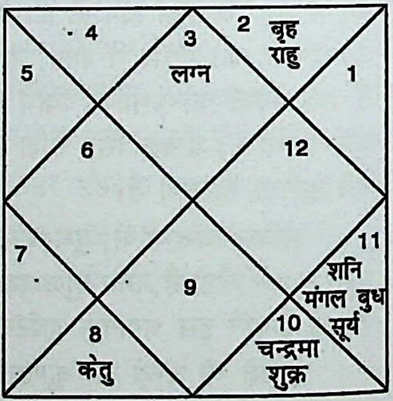

इस की सप्तांश कुण्डली में मिथुन लग्न तथा राहू सातवें घर में है। शुक्र पाचंवे घर का स्वामी है पर सिंह राशि में बिल्कुल आपत्ति-रहित है पीड़ित नहीं है लेकिन शनि, मंगल के साथ कर्क राशि में है और दूसरे घर में है, वह उत्साहजनक नहीं है उस समय राहू-शुक्र-मंगल की दशा 16 अक्टूबर 1993 तक ही रहेगा।

भविष्यवाणी—इस बच्चे की कुण्डली के अनुसार इस बच्चे को अधिक से अधिक ता. 5 अगस्त, 1993 तक खतरा है। उसके बाद यह खतरा 13 अगस्त, 1993 तक और उसके पिता की कुण्डली के अनुसार यह खतरा 13 अक्टूबर, 1993 तक है, उसकी माता की कुण्डली के अनुसार यह खतरा 5 अगस्त, 1993 तक ही रहेगा।

इस बच्चे के सभी अंग 5 अगस्त, 1993 तक काम करने लगे थे, पर उसका मस्तिष्क अगस्त के अंत में भी ठीक कार्य नहीं कर रहा था।

अब प्रश्न यह उठता है कि बच्चा एक बार तो जीवित बच गया है, पर क्या यह सामान्य स्थिति में आ जाएगा? डॉक्टरों ने उसे कोई भी दवाई देने से मना कर दिया और कहा है कि कोई दैवीय शक्ति ही इसे सामान्य स्थिति में ला सकती है। डॉक्टर कहते हैं, हम इससे अधिक इसका इलाज नहीं कर सकते हैं।

क्या कोई ज्योतिषी यह बता सकता है कि क्या यह बच्चा सामान्य स्थिति में आ जाएगा? इस बच्चे की कुण्डली को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि कोई दैवीय शक्ति भी काम करेगी।

इस कुण्डली को देखकर यह पता नहीं लगता कि वह सीमा रेखा कौन सी है, जहां भाग्य अपना काम कर चुका, और अब स्वतंत्र इच्छा से कुछ भी किया जा सकता हैं। चूंकि ऐसे अनिश्चित क्षेत्र बहुत होते हैं, अतः इस बात पर ही विश्वास किया जाता है कि प्रार्थना-पूजा करने से अद्‌भूत चमत्कार हो सकते हैं।

IV

भाग्य एवं स्वतंत्र इच्छा शक्ति में समझौता करना-

प्रकृतेः क्रियामाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

(गीता III 27)

प्रकृति के सभी स्वाभाविक गुण सात्विक, राजसिक और तामसिक प्रवृत्तियां सभी कर्मों को प्रेरित करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि वह स्वयं कोई कर्म कर रहा है, तो वह गलत है। क्योंकि उसे यह जानना चाहिए कि वह वही कर्म करता है जो उसकी सात्विक, राजसिक अथवा तामसिक प्रवृत्तियां उसे करने के लिए बाध्य करती हैं। इस प्रकार तो प्रत्येक मनुष्य केवल भाग्य के सहारे बैठ सकता है।

लेकिन भाग्य एवं स्वतंत्र इच्छा में समझौता कैसे किया जाए? इस संबंध में सबसे आसान तरीका महाभारत के इस प्रसंग को देखने का है-जहां पांडवों में सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म पितमाह ने कहा कि-

बीज-कर्म वह बीज है जिससे पौधा, पेड़, पत्ते, फूल और फल आदि पैदा होते हैं।

क्षेत्र-किसी मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा ही मानो खेत जोतना है, जिसके बिना किसी भी बीज में से पौधा नहीं निकल सकता। भाग्य बीज के रूप में है, और स्वतंत्र इच्छा (अर्थात् कर्म करना) वह क्षेत्र है, जिस पर हमारे जीवन की खेती पैदा होती है। भाग्य और प्रयास दोनों साथ-साथ चलते हैं। प्रयास को ही पुरूषार्थ कहते हैं।

कर्मों के फल-प्रत्येक मनुष्य को स्वयं ही अपने अच्छे कर्मों के अच्छे फल और बुरे कर्मों के बुरे फल भोगना आवश्यक है। यह बात अकाट्य है और सभी व्यक्तिं इसका अनुभव करते हैं।

अच्छे कर्मों के फल अच्छे होते हैं और बुरे कर्मों के फल बुरे होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के ऊपर ही निर्भर होता है कि उसे कैसे फल मिल रहे हैं।

परिश्रमी—जो व्यक्ति खूब परिश्रम करता है, उसे आदर, सम्मान अपने भाग्य के अनुसार फल मिलता है।

कड़ी मेहनत करने से, जिसमें आध्यात्मिक पूजा, पाठ आदि भी सम्मिलित है, उस व्यक्ति को आदर व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

आलसी व्यक्ति (जो कोई भी पुरूषार्थ नहीं करता) उसी बेवकूफ के समान है जो अपने दुर्भाग्य के घावों पर स्वयं नमक छिड़कता है।

इस प्रकार कड़ी मेहनत से व्यक्ति का आन्नद, ईश्वरीय आशीर्वाद, बुद्धि, तथा स्थिरता–दृढ़ता प्राप्त होती है। सुस्त व्यक्ति को जो केवल भाग्य एवं मौके पर निर्भर रहता है, कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

धन–दौलत, मित्रों का संग, शान–शौकत तथा महान सफलताएं केवल परिश्रमी व्यक्तियों के लिए आरक्षित हैं।

यदि कर्मों के फल मिलने जैसी कोई बात इस संसार में न होती तो सारे संसार के मनुष्य सुस्त ही रहते और वे केवल अपने भाग्य पर भरोसा रखते कि जो हमारे भाग्य में होगा, वह हमें अपने आप मिल जाएगा।

यदि पुरूषार्थ किया जाएगा तो उससे भाग्य भी चमकेगा और यदि पुरूषार्थ नहीं होगा तो भाग्य में भी कुछ नहीं मिलेगा।

कर्मों के साक्षी—प्रत्येक व्यक्ति के सभी कर्मों की एक मात्र साक्षी उसकी अपनी आत्मा है। वह आत्मा ही उसकी मित्र है ओर शत्रु भी।

इस प्रकार यदि निश्चित रूप से परिश्रम किए जाए, तो उससे पिछले जन्मों के पापों के फल भी शून्य हो जाते हैं अर्थात् उन कर्मों का बुरा फल नहीं मिलता, मानों वे पाप कर्म किए ही न गए हों।

सारांश—धार्मिक व्यक्ति केवल अच्छे कर्म ही करते हैं। अच्छे कर्मों से वह सभी वस्तुएं प्राप्त की जा सकती हैं जो संभव है। धार्मिक व्यक्तियों के लिए भाग्य को अपने अनुकूल बनाना आसान है। (यहां पर जो कुछ कहा गया है वह महाभारत का शाब्दिक सार उदार रूप से दिया गया है।)

2. गीता, इस संसार का आध्यात्मिक बुद्धि के बारे में सबसे महान ग्रंथ है। इसमें स्पष्ट शिक्षाएं दी गई हैं। कुशलतापूर्वक कर्म करना ही योग हैं। भगवान का सच्चा भक्त कुशल परन्तु अनासक्त होता हैं। अतः प्रत्येक

मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपना कर्म करे ओर उस के फल की इच्छा अपनी इच्छा के अनुसार न करें। उसे अपने कर्मों का फल प्रसन्न हृदय से स्वीकार करना चाहिए, लेकिन कर्मों को योग्यतापूर्वक एवं शांत चित्त से करते रहना चाहिए।

मानव को ज्ञात सभी विज्ञानों में केवल ज्योतिषशास्त्र ही एक ऐसा महाविज्ञान है जो मनुष्यों को अपने कर्मों के फलों का झुकाव किस ओर है और उसके भाग्य की दिशा क्या है, यह पता लगाने में सहायक होता है। भाग्य के बारे में गीता में इस प्रकार कहा गया है। इस संसार में एक क्षेत्र है, एक व्यक्ति उसका क्षेत्रज्ञ है, उसके कर्म हैं, और कर्मों के फल भी मिलते हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त एक चीज और है, वह अदृश्य है, और वह है भाग्य का संबंध केवल एक ज्योतिषी ही बता सकता है, कभी-कभी तो बिल्कुल ठीक बातें बताई जाती हैं और कभी-कभी बहुत गलत बातें बता दी जाती हैं।

□□□

सामान्य

अध्याय 12

ज्योतिषशास्त्र और विज्ञान

स्टैंडर्ड डिक्शनरी में विज्ञान का अर्थ इस प्रकार दिया गया है–"वह ज्ञान जो निरीक्षण एवं प्रयोगों द्वारा सुनिश्चित किया गया हो, विवेचनात्मक रूप से परिक्षित हो, क्रम बद्ध रूप से व्यवस्थित हो और सामान्य सिद्धांतो के अंदर लाया गया हो।"

ज्योतिषशास्त्र भी ऐसा ज्ञान है जो शताब्दियों से ग्रहों की गति के निरीक्षणों से सुनिश्चित, किया जा चुका है। ग्रहों की गतिविधियां और सभी जीव-जंतुओं एवं जड़ पदार्थो पर तथा मनुष्य के जीवन के सभी पक्षों पर उनके प्रभावों का अध्ययन किया जा चुका है और प्रयोगों द्वारा उनकी बातों को उन सिद्ध-मुनियों द्वारा सही प्रमाणित किया जा चुका है, जिन्होंने ज्योतिषीय नियम तथा सिद्धांत बनाए हैं। यह ज्ञान विवेचनात्मक रूप से भी परिक्षित किया जा चुका है और प्रतिदिन हजारों बार इसका प्रयोग एवं परीक्षण होता रहता हैं। जब कभी और जहां भी कोई ज्योतिषी अपनी भविष्यवाणी करता है, तो इस शास्त्र के ज्ञान का परीक्षण होता है। यदि किसी ज्योतिषी की कोई बात गलत निकलती है तो यह उस ज्योतिषी की अज्ञानता ही दर्शाती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि ज्योतिषशास्त्र ही गलत है।

यह ज्ञान पुरातन काल से होरा, सिद्धांत, संहिता, शकुन और प्रश्न आदि विषयों पर क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जा चुका है। इस विज्ञान के अनेक सुप्रसिद्ध एवं निश्चित फलदायक सिद्धांत हैं।

यदि ज्योतिषशास्त्र में विज्ञान के सभी तत्व मौजूद हैं तो फिर कुछ लोग यह प्रश्न क्यों उठाते हैं कि क्या ज्योतिषशास्त्र एक विज्ञान हैं? इसका एकमात्र उत्तर यह है कि वे अज्ञानी हैं। इसके बारे में कुछ गहराई से विचार करें तो हमें यह दिखाई देगा कि-

(क) शताब्दियों से विभिन्न मुसलमानों और अंग्रेजी शासकों के राज्य में गुलामी में रहने के कारण हम सभ्यता के क्षेत्र में पिछड़ गए और बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अज्ञानी रह गए, क्योंकि भारतीय बुद्धिमान व्यक्ति अपनी जाति संबंधी एवं सामान्य संस्कृति की जड़ों को भूल गए।

(ख) शासकों द्वारा हमारी संस्कृति को नीचा दिखाया गया और उन बुद्धिमान व्यक्तियों की प्रशंसा की गई जो उद्दंडता में अपनी प्राचीन संस्कृति को नीचा दिखाते थे तथा बाह्य संस्कृति को जो हम पर लाद दी गई थी, अच्छा बताते थे।

(ग) चारों ओर क्रमबद्ध रूप से हमारी प्राचीन पुस्तकों तथा ग्रंथों को नष्ट किया गया और हमारी 'गुरुकुल' की शिक्षा पद्धति के स्थान पर ed ky s(Macaulay) की शिक्षा पद्धति के अनुरूप केवल क्लर्क बनाने वाली शिक्षा का प्रचार किया गया।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हैं जिनसे हमारी पवित्र व शुद्ध विद्या; जैसे ज्योतिषशास्त्र को कलुषित एवं कलंकित किया गया।

हम इस महाविज्ञान के एक छोटे से गुण पर प्रकाश डालेंगे और वह हैं, पुर्नावृति करके देखने का सिद्धांत Replication (प्रत्युत्तर) क्योंकि किसी भी वैज्ञानिक सिद्धांत को परखने की यह एक बहुत महत्वपूर्ण कसौटी है।

ज्योतषशास्त्र के नियमों को अन्य जन्मपत्रियों पर प्रयोग करके भली भांति देखा जा सकता है और इसके परिणाम सभी अन्य प्रकार के विज्ञानों

के सिद्धांतो की अपेक्षा अधिक सही व प्रमाणित सिद्ध हुए है। इसके परिणाम गणित की तरह सही सिद्ध हुए हैं। यहां हम इसे प्रत्युत्तर लागू करके देखने के सिद्धांत को संतान जन्म के विषय में लागू करके दिखा रहे हैं। संतान जन्म का विषय ऐसा है जिसका सत्यापन किया जा सकता है और गणित की तरह इसका फल बिल्कुल ठीक बैठता है, एवं किसी प्रकार के किसी संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहती हैं।

ज्योतिषशास्त्र का एक नियम यह है कि यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में संक्रमण काल में शनि की दृष्टि उसके 5वें स्थान, 5वें स्वामी, 9वें स्थान एवं 9वें स्वामी पर सामुहिक रूप से अथवा अलग-अलग संक्रमण काल में हो तो उस व्यक्ति के संतान अवश्य होगी। शनि की कृपा इन स्थानों दृष्टि एवं उनसे योग के कारण होती हैं।

इस बारे में दूसरा नियम यह है कि बृहस्पति की कृपा भी इन स्थानों तथा इनके स्वामी पर होनी चाहिए। यदि ऐसा होगा तो ऐसे व्यक्तियों के संतान होने का समय आ गया है। ये नियम सारे संसार के जातकों पर लागू होते हैं। कोई भी वक्री ग्रह इतना बलवान होता है कि वह जिस स्थान पर बैठा है, उससे पहले स्थान से भी वह अपना असर दिखा सकता है।

किसी-किसी अद्भूत मामले में, ये दोनों धीरे चलने वाले तथा भारी ग्रह किसी व्यक्ति के ऐसी घटना घटित होने के कुछ माह पूर्व भी इन स्थानों और इन के स्वामी पर प्रभाव कर सकते हैं।

ये नियम किस प्रकार लागू होते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखिए-नियम यह है कि जब किसी बच्चे के जन्म के समय शनि और बृहस्पति संक्रमण काल में उनकी स्थिति, दृष्टि अथवा योग का संबंध-

(क) 5वें घर/5वें घर के स्वामी, से होगा। अथवा

(ख) 9वें घर/वे घर के स्वामी, से होगा।

आइए अब हम इस नियम को लागू करके देखें-

पिता और पुत्री-श्री जवाहरलाल नेहरू की कुण्डली इस प्रकार है-

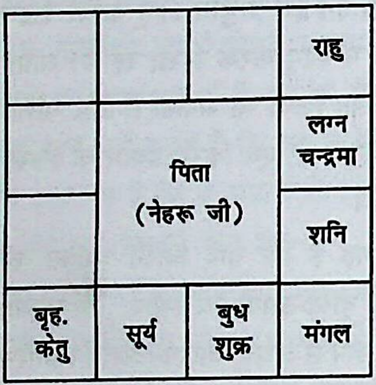

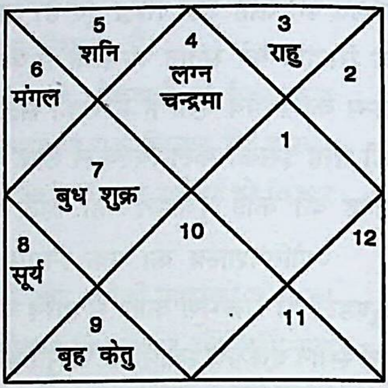

यहां पिता की कुण्डली में हम देखते है कि. पाचंवे घर में वृश्चिक राशि है जिसका स्वामी मंगल है। नवम भाव मीन राशि है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः हम यह कह सकते हैं कि-

(क) 5वां स्थान-5वां स्वामी-मंगल (वृश्चिक तथा मंगल)

(ख) 9वां स्थान-9वां स्वामी-बृहस्पति (मीन तथा बृहस्पति)

इनकी पुत्री के जन्म के समय संक्रमण काल में शनि कर्क राशि में था और बृहस्पति वृष राशि में वक्री होकर गुजर रहा था। यदि हम इसी बात को उसके पिता की कुण्डली से स्थान परिवर्तन करके देखें तो हमें यह दिखाई देगा कि-

संक्रमण काल में शनि (कर्क राशि में दिखाया गया है) की दृष्टि पिता की कुण्डली में 5वें स्थान के मालिक मंगल पर, तीसरी दृष्टि पड़ रही है। यहां यह नियम पूरा हो जाता है। बृहस्पति अपने संक्रमण काल में वृष राशि में, मंगल जो 5वें घर का स्वामी है, 5वीं दृष्टि से देख रहा है, और 5वें स्थान में वृश्चिक राशि को 7वीं दृष्टि से देख रहा है। अतः यहां यह सिद्धांत पूरी तरह से लागू हो गया।

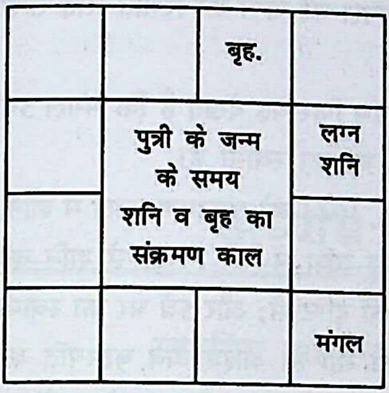

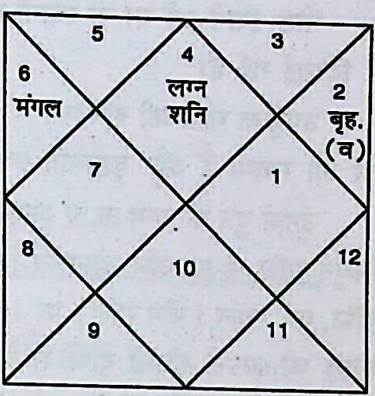

माता और पुत्र-

श्रीमती इंदिरा गांधी की कुण्डली इस प्रकार है-

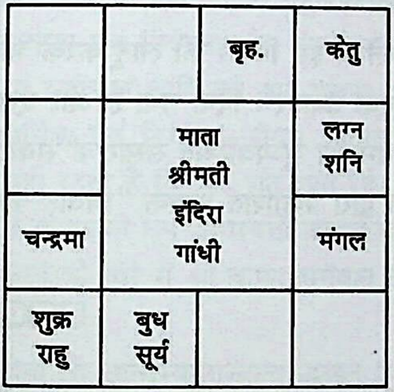

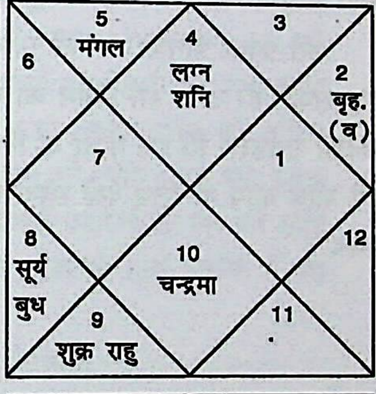

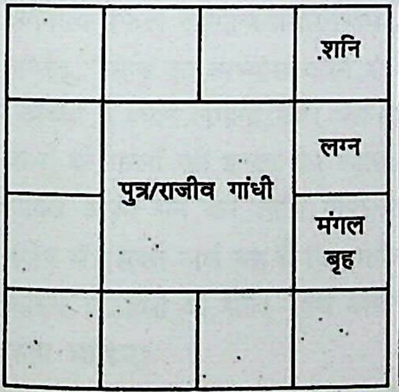

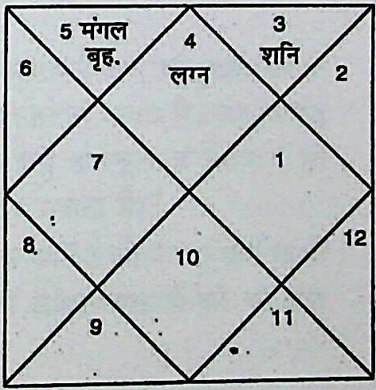

नोट–इसमें 5वें घर के स्वामी मंगल की जन्म की स्थिति सिंह राशि में दिखाई गई हैं।

उपर्युक्त माता की कुण्डली में, हम फिर यह देखते हैं कि मंगल 5वें घर का स्वामी हैं और बृहस्पति 9वें घर का स्वामी है।

उनके पुत्र के जन्म ता. 9 अगस्त, 1944 को संक्रामण काल में शनि, मिथुन राशि में था और बृहस्पति सिंह राशि में था। मिथुन से शनि की दृष्टि, 9वें स्थान (मीन राशि) पर 10वीं दृष्टि से; और 5वें घर का स्वामी मंगल को अपनी तीसरी दृष्टि से देख रहा है। आइए अब बृहस्पति को देखिए, जो सिंह राशि में विचरण कर रहा है। बृहस्पति का योग 5वें घर के स्वामी मंगल से है। चूंकि यहां पर यह नियम पूरी तरह से लागू है, अतः प्रर्त्युतर का नियम भी लागू होता है।

इस प्रकार प्रत्येक जन्म के मामले में इस नियम को लागू करके भी देख सकते हैं। ऊपर इस नियम का एक उदाहरण दिया गया है और ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। इस गोचर के नियम को सुव्यवस्थित संसार के सबसे बड़े शोध कार्य के लिए देखें संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक "विवाह का समय"।

□□□

अध्याय 13

ज्योतिष और मनोविज्ञान

ज्योतिष के विद्वानों के पास ऐसे बहुत से व्यक्ति आते हैं जो अपनी शारीरिक सुख संबंधी इच्छाओं तथा इन्द्रिया ज्ञान को संतुष्ट करने की इच्छाओं द्वारा प्रेरित होते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो अपने अशांत जीवन के वातावरण एवं निर्दयतापूर्वक व्यवहारों से निराश होकर अपने मन की शांति या आत्मिक शांति की बातें पूछना चाहतें हों। किसी भी अनुशासित तथा धार्मिक एवं नियमित जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति की अंतिम इच्छा यही रहती है कि मेरा मन शांत रहे। मन की शांति अपने इष्ट देवता की मूर्ति के सामने धूप-अगरबत्ती जलाने से नहीं आ सकती। मन की शांति प्राप्त करने के बारे में श्री कृष्ण भगवान ने गीता के 12वें श्लोक में यह कहा है-

श्रेयो हि ज्ञान्मभ्यासाज्ज्ञाना द्धयानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफल त्यागाच्छान्तिरनन्तम।।

अर्थात्, "ज्ञान का अभ्यास करने से अच्छा है ज्ञान की खेती करना। ज्ञान से अच्छा है ध्यान लगाना, और ध्यान लगाने से अच्छा है त्याग अर्थात् अपने कर्मों के फलों की इच्छा का त्याग। इसी कर्मफल के त्याग से ही कोई व्यक्ति अपने मन की शांति प्राप्त कर सकता है।"

संक्षेप में इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्म करते रहना चाहिए पर इसी के साथ-साथ अपनी आवश्यकताओं को भी कम करते रहना चाहिए।

मनोविज्ञान, अन्य विज्ञानों की अपेक्षा अभी आरम्भिक अवस्था में है। फिर भी इसे बढ़ा-चढ़ाकर महत्व दिया जाता है। कुछ व्यक्ति इसे ऐसा मानते हैं कि केवल यही एक अचूक तरीका है जिससे मस्तिष्क की परेशानियां समझी जा सकती है। यह गलत धारणा है। कोई भी ज्योतिषी किसी भी व्यक्ति की मानसिक परेशानियों को आसानी से और निश्चित तौर पर समझ सकता है। एक उदाहरण के लिए नीचे एक महिला की कुण्डली दी जा रही है।

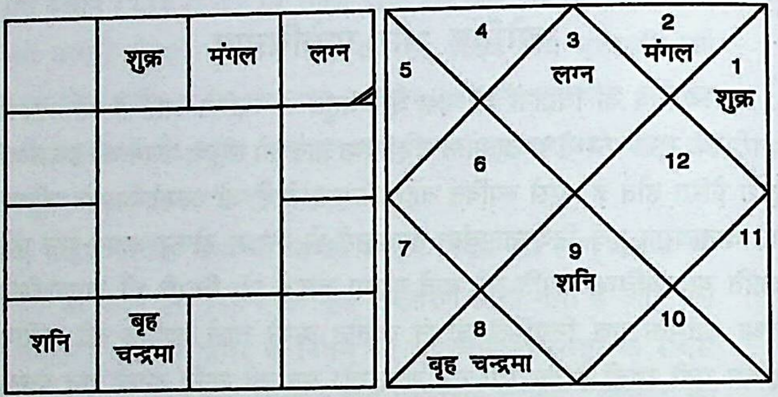

सन् 1990 में जब शुक्र की महादशा और चन्द्रमा की अन्तर्दशा चल रही थी, तब यह महिला आई। उपर्युक्त कुण्डली में देखा जा सकता है कि-

(क) शनि लग्न से सातवें घर में बैठा है और मंगल की (आठवीं) दृष्टि उस पर पड़ रही है।

(ख) बृहस्पति जो सातवें घर का स्वामी है, छठे घर में बैठा है ओर चन्द्रमा के साथ बैठा है। इस बृहस्पति पर भी मंगल की (सातवीं) दृष्टि पड़ रही है।

(ग) चन्द्रमा वृश्चिक राशि में स्थित है। चन्द्रमा से छठे घर में शुक्र बैठा है जो 7वें घर का मालिक है।

(घ) चन्द्रमा से सातवें घर में मंगल बैठा है। (चंद्रमा से सप्तमेश/षष्ठेश का स्थान परिवर्तन है।)

यदि हम शुक्र, चन्द्रमा को देखें तो पता चलता है कि चन्द्रमा लग्न से छठे घर में बैठा है और उसके साथ 7वें घर का स्वामी बृहस्पति भी बैठा है; और शुक्र जो 7वें घर का स्वामी है, वह चन्द्रमा से छठे घर में बैठा है। ये दोनों ग्रह इस महिला के जीवन में मानसिक परेशानियां पैदा कर रहे हैं। जब उस महिला से पूछा कि क्या तलाक के बारे में विचार किया जा रहा है तो वह फौरन रोने लगी। इस महिला को अंग्रेजी अच्छी तरह आती थी। कुछ दिन बाद वह महिला अपने पति को तलाक देने के बाद फिर आई और कहने लगी कि यहां ज्योतिषी लोग मूल समस्या को कैसे पकड़ लेते हैं और मानसिक तनाव होने के कारण भी बता देते हैं, "हमें यह बातें बहुत कठिन लगती है।" इस पर मैंने पूछा कि 'हमें' से आपका क्या तात्पर्य है। तब उसने मुझे बताया कि वह महिला अमेरिका में एक बड़े विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान पढ़ाती है। उसने बताया कि किसी व्यक्ति की मानसिक परेशानी को समझने में उन्हें कम से कम एक दो घंटे लगते हैं, उसके बाद ही उसकी परेशानी समझी जा सकती है और कुछ निदान बताए जाते हैं। उस बुद्धिमान महिला के साथ बातचीत से निम्न लिखित परिणाम निकाले–

(1) मनोवैज्ञानिक लोग अच्छी तरह से संगठित हैं। उन्हें अपने अनुसंधान कार्य के लिए सरकार से, विश्वविद्यालयों से तथा आम जनता से भी पूरी सहायता मिलती है। उन्हें अपने प्रयत्नों को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित किया जाता है। अतः उनकी उन्नति जल्दी-जल्दी होती है। ऐसे सेमीनार और कांफ्रेसों में न केवल वे ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि अपने ज्ञान को बढ़ाने में और तेजी लाते हैं।

(2) दूसरी ओर, ज्योतिषी लोग आपस में विचार-विमर्श करने में कतराते है। उनके ज्ञान की सीमा भी इतनी कम है कि वे मंच पर आकर किसी कुण्डली की विवेचना करने में हिचकिचाते हैं। ऐसे ज्योतिषी कभी-कभी कुछ चौंका देने वाली भविष्यवाणी कर देते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता और वे अपनी जीविका अन्य लोगों को डरा कर एवं खर्चीले उपायों के तरीके बताकर कमाते हैं।

नोट—भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद की शाखाएं निसंकोच ज्योतिष के सूत्रों का प्रचार कर रही हैं, परन्तु आज भी बहुत से ज्योतिष के परम विद्वान तथा संस्थाएं 'तेर-मेर' तथा लुकाव छुपाव कर रही हैं। यह देश की वह ही स्थिति है जो मुगलों के आक्रमण के समय में हिन्दू राजाओं की थी। यदि ज्योतिष के विद्वान नहीं जागे तो आने वाला कल एक 'काला' दिन होगा।

मनोविज्ञान में यह देखा जाता है कि किसी व्यक्ति की प्रवृत्ति किस ओर है। ऐसी जांच करना मनोविज्ञान की सीमा बांधना है, परंतु फिर भी लोग यह सोचते हैं कि प्रवृत्ति की जांच करना एक अच्छा तरीका है। दूसरी ओर एक ज्योतिषी किसी व्यक्ति की प्रवृति का पता उसका कुण्डली देखकर ही लगा लेता है।

नीचे एक विदेशी महिला की कुण्डली दी जा रही है, इसे देखिए—

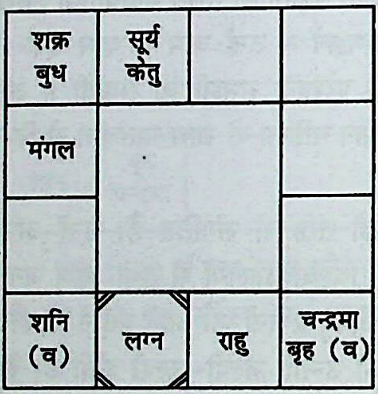

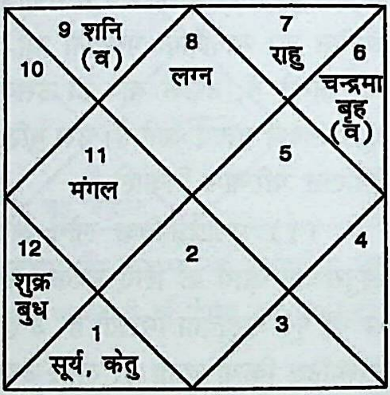

यह महिला स्पेन की हैं और श्री कृष्ण की भक्त है अर्थात् ISCON की सदस्या हैं। जब उसकी कुण्डली देखकर उससे पूछा कि क्या उसकी रूचि साहित्य एवं नृत्य में भी है, तो उसने उत्तर दिया कि वह धार्मिक ग्रंथों का खूब अध्ययन करती हैं और श्री कृष्ण की मूर्ति के सामने ऐसे नाचती है, जैसे कोई गोपी नाच रही हों लेकिन उसका नाचने का ढंग अलग ही है, क्योंकि उसने व्यावसायिक रूप से नाचना सीखा है। और, जब वह किसी मंदिर में नाचती है तो उसका सुंदर चेहरा, सांस्कृतिक रूप से श्रृगांर पूर्ण नाच लोगों को मीराबाई की याद दिला देता है और उसे अमर बना देता है—

मैं तो गिरधर आगे नाचूंगी, नाच नाच प्रिय रसिक रिझाऊं, प्रेमी जन को जांचूंगी।

नाचते-नाचते अचेत अवस्था को प्राप्त करने की इस बात को एक ओर छोड़ते हुए, उससे पूछा कि क्या उसकी व उसके पति की आयु में 8 वर्ष का अंतर है। इस पर वह महिला आश्चर्यचकित रह गई उस महिला का जन्म 1956 में हुआ था जबकि उसके पति का जन्म 1946 में हुआ था। दोनों का जन्म 1 मई को ही हुआ था। उसके पति की कुण्डली इस प्रकार है-

बुध	सूर्य चन्द्रमा	शुक्र राहु	शनि
लग्न			मंगल
	केतु		बृह (व)

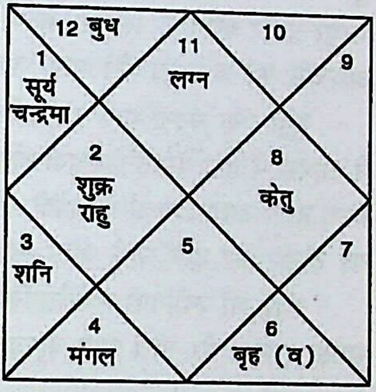

मैंने उसके पति से पूछा कि उन्होंने गाने के यंत्र बाजा आदि बजाने का कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है, तो उसने कहा कि उसने ढोल बजाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था पर अब श्री कृष्ण भक्ति के रंग में रंग जाने के कारण वे मृदंग बजाते हैं।

यदि मनोवैज्ञानिक लोग ज्योतिषशास्त्र सीख लेते, अथवा ज्योतिषी लोग मनोविज्ञान का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते तो सोने में सुहागा हो जाता और इससे सामाजिक हित के कार्यों को बहुत सहायता मिलती।

यदि कोई ज्योतिषी यह कहता है कि वह किसी भी प्रश्न का उत्तर दे सकता है तो ऐसा कहना उसका तर्कहीन अभिमान ही कहा जाएगा, क्योंकि ऐसा कभी भी संभव नहीं है। ज्योतिषियों को गर्वरहित होना चाहिए। अधिकांश ज्योतिषी तो ऐसे होते हैं जो साधारण व्यक्तियों की कुण्डली का विवेचन भी नहीं कर सकते और उनका कोई मार्गदर्शन नहीं कर सकते हैं।

एक महिला पत्रकर ने लगभग 40 व्यवसायिक ज्योतिषियों को दो कुण्डलियां दिखाई और उनसे लिखित भविष्यवाणियां मांगी। उनसे उसने पिछली मुख्य घटनाओं का विवरण भी मांगा। केवल चार ज्योतिषियों ने लिखित में भविष्यफल दिया। अन्य ज्योतिषी तो इतना साहस भी न कर सके कि अपनी बात लिखित में दे दें। उन्हें डर था कि कहीं उनकी बातें गलत साबित न हो जाएं। मैंने उसे लिखित में अपनी भविष्यवाणी दी और कहा कि प्रत्येक दस कुण्डलियों में से दो कुण्डलियां सदैव गलत बनी हुई रहती हैं। उस महिला ने मुझसे कहा कि ऐसे ज्योतिषी भी जो अपना भरपूर प्रचार करते हैं, लिखित में भविष्यवाणी देते हुए हिचकिचाते हैं, यह आश्चर्य की बात हैं। मैंने कहा, इसका उत्तर साफ है।

मुझे एक घटना याद आई और मैं सोचता हूं कि यदि ज्योतिषी लोगों ने आपस में कोई संगठन बनाया होता और अपने अनुसंधान कार्य प्रकाशित किए होते, उन पर चर्चा की होती, तो ज्योतिषशास्त्र को बहुत महानता मिल गई होती और उसे सभी अन्य विद्वानों से ऊपर का दर्जा प्राप्त होता।

कोई भी ज्योतिषी मनोवैज्ञानिक समस्याओं को आसानी से पकड़ व समझ सकता है। नीचे एक कुण्डली दी जा रही है, इसे देखिए-

बुध	सूर्य चन्द्रमा	शुक्र राहु	शनि
लग्न			मंगल
	केतु		बृह (व)

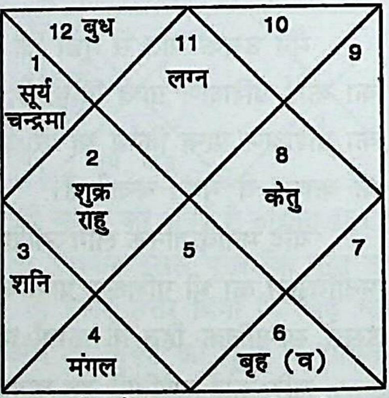

इसमें चन्द्रमा की महादशा चल रही है। मैंने इस लड़के की माता से पूछा कि क्या यह बच्चा मानसिक रूप से परेशान है, और क्या वह अपने माता-पिता से लड़ता रहता है। उसने कहा, हां, यही समस्या हैं। मैंने उसकी समस्या का कोई उत्तर नहीं दिया और उसे जाने दिया।

हमारे कर्म हमारे पुनर्जन्म के अनेक जन्मों में भी हमारे पीछे लगे रहते हैं, यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे कोई गाय का बछड़ा अपनी मां (गाय) को गायों के बड़े झुंड में ढूंढकर पहचान लेता है और अंत में उसे पाने में कोई गलती नहीं करता। हमारे कर्म भी हमारा पीछा तब तक नहीं छोड़ते जब तक हम उन्हें नष्ट कर देते हैं। यह बात महाभारत में स्पष्ट रूप से बताई गई हैं।

ज्योतिष का संबंध धर्म से भी है। धर्म की पराकाष्ठा ज्ञान है, त्याग है और भक्ति है।

ज्योतिषी केवल हमारा मार्गदर्शक ही नहीं होता, वह एक योग्य मनोवैज्ञानिक विश्लेषक भी होता है। पर अधिकांश ज्योतिषी तुच्छ ज्ञान रखते हैं और बहुत अधिक अभिमानी होते हैं, निंरकुश स्वार्थी होते हैं। कुछ राजनैतिक भविष्यवाणियां करके वे अपनी महत्ता जता देते हैं। यदि ऐसे व्यक्तियों ने इस शास्त्र का अध्ययन किया होता और उनका व्यवहार अच्छा होता तो इससे आम जनता का बहुत भला होता और इस वेदांग का बहुत आदर-सत्कार होता।

लक्ष्मी सरस्वती आवाहन मन्त्र–

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटि पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनामिस्तन भरनमिता शुभवस्त्रोत्तरिया।
या लक्ष्मीर्दिव्य रूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेम कुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।

अर्थ–

श्री (लक्ष्मी) ह्वीं (दुर्गा) और क्लीं (सस्वती)।

हे परमात्मा! ये तीनों विभूतियाँ मुझे प्राप्त हों।

मन्त्र "ओं श्रीं ह्वीं क्लीं महालक्ष्म्यै सकल सौभाग्यं मैं देहि"

पंचक विचार–

लोग इससे बहुत भ्रमित व भयभीत रहते है। इसके विषय में विस्तार से जानना आवश्यक है।

द्यनिष्ठायञ्चके त्याज्यस्तृणकाष्ठादि सङ्ग्रहः।
त्याज्या दक्षिणजदिग्यात्र गृहाणां छादनं तथा।।

(शीघ्र बोध 2/11)

(पंचक में–तृण–काष्ठादि का संचय, दक्षिण दिशा की यात्रा, गृह छाना (मकान की छत डलवाना; प्रेतदाह तथा शय्या का बुनना आदि कार्य निषेध हैं)

प्रेतं नयेत्पितृवनं न चौकसे।
न गोपनं दाकतृणौघसङ्ग्रहः।
यानं यमाशां ग्रथनं न रज्जुभि
भर्पञ्चकेऽस्मिन्विदधीत शायनम्।।

(ज्योतिर्विदाभरण 2/19)

(मृत शरीर/शव को शमशान नहीं ले जाना चाहिए। गृह का छादन, लकड़ी का संग्रह, दक्षिण दिशा में यात्रा तथा रस्सी से खाट की बुनाई आदि निषेध हैं।)

प्रेतज्वालन शय्याकावितनने स्तम्भोच्छ्यं याम्यदिक
यानं काष्ठतृणोच्चयं परिहरेत्कुम्भ द्वयस्थे विधौ।

(मुहर्तमार्तण्ड 8/4)

(चंद्रमा कुंभ और मीन में हो तो अर्थात् धनिष्ठ से रेवती तक पाँच नक्षत्रों में शव का दहन, शय्या, चटाई, पलंग आदि का बीनना, घर में स्तंभ आदि गाड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, लकड़ी, जलावन, तृण आदि संग्रह सर्वथा त्याज्य है।)

पंचक शान्ति–

इन पाँच नक्षत्रों में मृत्यु होने पर दोषनिवारणार्थ शान्ति करने का विधान है, जिसे पंचक शान्ति कहा जाता है।

निर्णयसिंधु और धर्मसिंधु के आधार पर विशेष बात यह बतायी गई है कि यदि मृत्यु पंचक के पूर्व हो गयी हो और दाह संस्कार पंचक में होना हो तो पुत्रलदाह का विधान करे, शान्तिकर्म करने की आवश्यकता नहीं रहती।

इसके विपरीत यदि पंचक में मृत्यु हो गयी हो और दाह पंचक के बाद हुआ हो तो पंचक शान्तिकर्म करना चाहिए।

(नक्षत्रोन्तरे मृतस्य पञ्चके दाह प्राप्रौ पुत्तलविधिरेव न शान्तिकम्।
पञ्चक मृतस्याश्विन्यां दाह प्राप्तौ शान्तिकमेव न पुत्तलविधिः।।)

(धर्म सिंधु उ. परि 3)

यदि मृत्यु भी पंचक में हुई हो और दाहकर्म भी पंचक में हुआ हो तो पुत्तलदाह और शान्ति दोनों कर्म करें।

पंचक शान्ति इसलिए भी आवश्यक है कि इसका प्रभाव पारिवारिक लोगों पर भी पड़ता है। **पंचक शान्ति** सूतकान्त में बारहवें दिन, तेरहवें दिन या धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्रों में करनी चाहिए।

(पंचक शान्ति की विधि 'अन्तकर्मश्राद्ध प्रकाश' में दी गयी है। पंचक में मरण होने पर पुतलदाह का विधान है जो इस प्रकार है)-

यदि कोई पंचक में मरे तो वह वंशजों को भी मार डालता है। **त्रिपुष्कर और भरणी नक्षत्र से भी यही अनर्थ प्राप्त होता है।** ऐसी स्थिति में अनिष्ट के निवारण के लिए कुशों की पाँच प्रतिमा बनाकर सूत्र से वेष्टितकर जौ के आटे की पीठी से उसका लेपन कर उन प्रतिभाओं के साथ शव का दाह करें। पुत्तलों के नाम क्रमशः (i) प्रेतवाह, (ii) प्रेतसखा, (iii) प्रेतप (iv) प्रेत भूमिप (v) प्रेतहर्ता

संकल्प अद्य......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम्.......गोत्रस्य(......गोत्राया)...... प्रेतस्य (........प्रेतया)धनिष्ठादिपञ्चकजनित वंशानिष्टपरिहारार्थ

पंचक विधि करिष्ये! ऐसा संकल्प कर पांचो पुतलों को निम्नरीति से पूजन करें-

प्रेतवाहाय नमः, प्रेतसखाय नमः, प्रेतपाय नमः, प्रेतभूमिपाय नमः, प्रेतहर्ये नमः। इमानि गन्धाक्षतषुस्य धूपदीपादीनि वस्तुनि युष्मभ्यं मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्।

ऐसा बोल कर पांचों प्रेतों को गंध, अक्षत, पुष्प, धूप तथा दीप आदि वस्तुएं प्रदान कर पूजन करें।

पूजन के बाद पहले पुतले को शव के सिर पर, दूसरा नेत्रों पर, तीसरे को बायीं कोख पर, चौथे को नाभि पर, पांचवे को पैरों पर रख कर ऊपर लिखें मंत्रों से क्रमपूर्वक पाँचों पर आहूति दे (मंत्र बोलते जाऐं) इसके बाद शव का दाह करे।

आत्मसार

प्रश्न एवं उत्तर-निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें-

(i) चार वेदों के नाम-

ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

(ii) स्कन्धत्रय

(क) गणित ज्योतिष (सिद्धांत)

(ख) संहितां (मुंडेन)

(ग) होरा (फलित)

(iii) होरा

यह ज्योतिष शास्त्र का वह स्कन्ध है जिसमें व्यक्तियों के/अपने जीवन के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। उनके जीवन में प्रारब्ध में प्राप्त कर्मों का शुभ या अशुभ फल मिलता है। उसका ज्ञान समय से पूर्व प्राप्त हो सकता है।

(iv) प्रारब्ध कर्म

प्रारब्ध कर्म वे कर्म फल हैं जो हमे वर्तमान जन्म में, पिछले जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप मिलते हैं। ऐसे कर्मों के अंकुर पहले से ही निकल चुके होते हैं और उन पौधों में फूल वर्तमान जीवन में मिल रहे हैं।

(v) वराहमिहिर काल

(57 BC से 1900 AD)

राजा विक्रमादित्य के नव रत्नों में वराहमिहिर का नाम आता है। इनके पिता का नाम आदित्य दास था और उन्हीं से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। यह अवन्ती राजधानी के निवासी थे। कापित्थक नामक ग्राम

में जन्म हुआ। वह सूर्यदेव के भक्त थे। पञ्चसिद्धान्तिका ही उनका प्रथम ग्रन्थ है। विवाह विषयक ग्रन्थ का नाम 'वृहदिवाहपटल' था। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम हैं-पंच सिद्धांतिका, वृहत जातक, लघुजातक, योग यात्रा, वृहत संहिता, विवाह पटल, वृहज्जातक तथा लघु जातक का इस समय भी ज्योतिषियों में पर्याप्त प्रचार है। बम्बई, पूना, काशी आदि स्थानों में उपलब्ध है। डा. केर्न ने मूल मात्र वृहत्संहिता का इंग्लिश में अनुवाद करके उसे रायल एशियाटिक सोसायटी की पांचवी पुस्तक में छपाया। भटोत्पल ने वराहमिहिर के साहित्य की टीकायें लिखी। वराहमिहिर ही एक ऐसे विद्वान हुए हैं जिन्होंने ज्योतिष के तीनों स्कन्धों पर काव्य रचना की।

(vi) श्रुति और स्मृति

ज्योतिष शास्त्र को गुरूमुख विद्या कहा जाता है। जिस काल में कागज और छपाई संभव नहीं था। ताम्रपत्रों पर लिखना आरंभ भी नहीं हुआ था, उस समय ज्योतिष सूत्रों को श्रवण करके स्मरण रखना होता था। उस समय का सारा ज्ञान स्मरण शक्ति पर आधारित था, इसलिए उसे स्मृति कहते हैं। विद्वान अपने आप ज्ञान के आधार पर प्रत्येक घटना का विवरण देते रहते थे और इस प्रकार के प्रयोगात्मक ढंग से उन्हें याद रखना संभव था। अपने शिष्यों को वह ज्ञान बोलकर बताते थे। इस प्रकार सुनकर ज्ञानोर्जन करने का नाम श्रुति पड़ गये। सुनकर ज्ञानार्जन करना तथा उसकी स्मृति बनाए रखने के ढंग से शास्त्र का जाग्रत रखने का ही विधान था जिसके कारण कुछ भ्रांतियों का भी जन्म हुआ।

(vii) नवग्रहों से संबन्धित नव अवतारों के बारे में अवतार

ग्रह	अवतार	ग्रह	अवतार
सूर्य	रामावतार	वृहस्पति	वामनावतार
चंद्रमा	कृष्णावतार	शुक्र	परशुरामावतार
मंगल	नरसिंहावतार	शनि	कूर्मावतार
बुध	बुद्धावतार	राहू	वराहावतार
		केतु	मत्स्यावतार

उपरोक्त अवतार प्राणियों का कर्मफल देने वाले ग्रहरूप अवतार हैं। दैत्य प्रवृतियों का नाश एवं देव प्रवृतियों में वृद्धि साथ ही धर्म की संस्थापनार्थ यह मुख्य अवतार हुए हैं।

जिस प्रकार सूर्यादि ग्रहों के अधिकांश से रामकृष्णादि अवतार हुए हैं उसी तरह से ग्रहों के अल्पांश से मनुष्यादि प्राणियों की उत्पत्ति हुई। जीव या परमात्मभूत सभी अन्ततोगत्वा अपना कार्य समाप्त कर पुनः उन्हीं ग्रहेन्द्रों में समा जाते हैं। प्रलय काल में समस्त ग्रहादि भी अव्यक्त में लीन हो जाते हैं।

(viii) समय निर्धारण की दो पद्धतियों के बारे में बताइए।

ज्योतिष शास्त्र मानव के जीवन में होने वाली घटनाओं के विषय में, जन्म कुण्डली में अवस्थित ग्रहों के योगों का अध्ययन करने के उपरांत बताता है। वह घटनाऐं भविष्य में कब-कब होंगी जानने के लिए भी कुछ पद्धतियों दी गई है। दो विशेष पद्धतियों की चर्चा करते हैं।

(क) दशाऐं–चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है उसके स्वामी की दशा जन्म के समय मिलती है। इसके बाद क्रम से अन्य ग्रहों की दशा आती है। यह दशाऐं/अंतदशाऐं/प्रत्यतंर दशायें कुछ महीनों के समय को जिसमें कोई विशेष घटना हो सकती है बताती है।

(ख) दूसरी विधि गोचर के आधार पर–मन्द गति वाले ग्रह शनि (समय-काल) एवं गुरू (आज्ञा/आशीर्वाद देने वाला) दोनों का सामूहिक प्रभाव जिस भाव पर पड़े उससे सम्बन्धित घटना उस समय हो सकती है।

(ix) ज्योतिषी के लिए निर्धारित कुछ गुणों की चर्चा अध्याय 4 में पढ़ें।

(x) शकुन की व्याख्या कीजिए।

शकुन का मानव जीवन में काफी प्रभाव देखा गया है। हालांकि बहुत से विद्वान उसे ज्योतिष का अंग नहीं मानते हैं। परन्तु यह एक विवादास्पद बात है। सत्य को नकारा भी नहीं जाता।

दीख निषादनाथ भल टोलू।
कहेउ बजाउ जुझाउ ढोलू।।
एतना कहत छींक भई बाए।
कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाए।।

भरत को वन को जाता देख निषादराज समझे कि भरत के मन में कपट भाव है। वह लक्ष्मण सहित श्रीराम को मारकर सुख से निष्कण्टक राज्य करना चाहते हैं तो उन्होंने अपनी जाति के सब लोगों को एकत्रित कर सेना तैयार की। सेना कवच पहनकर सिर पर लोहे के टोप रखते हैं और फरसे, भाले तथा बरछों को संभालते हैं। वीरों के दल को देखकर निषादराज ने ढोल बजाने का आदेश दिया। उसी समय बायीं ओर छींक हुई शकुन विचारने वालों ने कहा कि समय शुभ है और विजय निश्चित है।

बुढु एकु कह सगुन विचारी।
भरतहि मिलिअ न होइहि रारी।
रामहि भरतु मनावन जाही।
सगुन कहइ अस बिग्रह नाहीं।

(रामचरितमानस अयोध्याकांड दोहा 161)

वहीं एक वयोवृद्ध सज्जन भी थे। उन्होंने कहा कि आप भरतजी से मिल लीजिये उसमें कोई युद्ध या टकराव की स्थिति नहीं उत्पन्न होगी। शकुन के अनुसार श्री भरत जी रामजीको मनाने जा रहे हैं।

शकुन विचार ठीक प्रकार करने से एक भंयकर युद्ध होने से बच गया और सैंकड़ों लोग मृत्यु से बच गये।

हम सभी ने शकुन का प्रयोग अपने-अपने परिवारों में देखा है और उनका फल भी देखा है। परंतु उसे अंधविश्वास कहना गलत हैं।

(xi) ज्योतिष क्या हैं?

अध्याय 3 पढ़ें।

(xii) छः वेदांगों के नाम बताइए।

प्रभम अध्याय देखें।

(xiii) पराशरी युग में (3000 ई. पू. से 51 ई. पू.) वैदिक ज्योतिष के क्रमानुसार विकास के विषय में अध्याय देखें।

(xiv) धर्म अर्थ काम मोक्ष के संदर्भ में भावों का वर्गीकरण कीजिए।

लग्न, पंचम तथा नवम	धर्म त्रिकोण
द्वितीय, षष्ठ तथा दशम	अर्थ त्रिकोण
तृतीय, सप्तम तथा एकादश	काम त्रिकोण
चतुर्थ, अष्टम तथा द्वादश	मोक्ष त्रिकोण

अध्याय 9 देखें।

(xv) ज्योतिष के उपयोगों

अध्याय 10 देखें।

(xvi)	पुस्तक	लेखक
(क)	जातक परिजात	वैद्यनाथ दीक्षित
(ख)	जातक चंद्रिका	दक्षिण में रचित
(ग)	शम्भु होरा	श्री पुंज राज
(घ)	सारावली	श्री कल्याण वर्मा
(अ)	वृहत संहिता	आचार्य वराहमिहिर
(आ)	ताजिक शास्त्र	आचार्य नीलकंठ
(इ)	वृहत जातक	आचार्य वराहमिहिर
(ई)	वृहत पाराशर होराशास्त्रम्	महर्षि पराशर
(उ)	सर्वाथ् चिंतामणी	श्री वेंकटेश शर्मा
(ऊ)	फलदीपिका	मन्त्रेश्वर

(ए)	उत्तरकालामृत	कवि कालिदास
(ऐ)	पूर्व कालामृत	कवि कालिदास
(ओ)	वृद्धयवन जातकम्	आचार्य मीनराज
(औ)	वीर सिंहावलोक*	वीरसिंह तोमर

*सन् 1148 (शक 1070) में कबीर के समकालीन राजा वीर सिंह तोमर ने पूर्ववर्ती जातक ग्रन्थों में प्रतिपादित विविध रोगों के योगों, कर्म विपाक संहिता से निरूपित उन रोगों के प्रायश्चित और चरक-सुश्रुत आदि के आयुर्वेद ग्रन्थों आदि से संकलन कर इस ग्रन्थ की रचना की।

□□□

विषय-सूची

यम गण्ड काल, 58
यात्रा मुहूर्त, 12
युग प्रमाण, 55
यजुः, 8
ढुण्ढि राज, 54
त्रेता युग, 55
द्वीप-महाद्वीप, 4
द्वापर युग, 56
ऋणानुबंधन, 94, 95
ऊहा-पोह-पटुः, 36
इच्छा शक्ति, 80
इलावृत, 5
बृहस्पति, 9
बोलने की शक्ति, 37
बुध, 9
बुद्धिमान, 35
बेबीलोनियन, 53
बेसी, 21
ब्रह्मा की आयु, 56
कर्मों के साक्षी, 137
कर्म का बलाबल, 92
कर्म विपाक संहिता, 117
कर्म शरीर, 102
कर्म-भूमि, 6
कर्म-फल के लक्षण, 103
कर्मभूमि, 17
कर्मफल, 104
कलियुग, 56
कायक, 96
कार्यक्षमता, 36
काम, 87, 99, 104, 158
काम त्रिकोण, 87, 158
काल-निर्णय, 48
कुंभ पर्व, 18
कुमकुम शर्मा, 114
कल्याण वर्मा, 54
कल्प, 8
महायुग, 56
महाभारत, 51
मांदी, 111
धर्म, 87, 99, 104, 158
धर्म त्रिकोण, 87, 158
माहात्म्य, 11
मोक्ष, 87, 99, 104, 158
मोक्ष त्रिकोण, 87, 158
मानसिक, 96
मानव देह, 31
मुंडेन, 28
मुहूर्त की उपयोगिता, 15
मेरू, 9
मेधावी, 37
मन्वन्तर, 56, 57
मनुओं के नाम, 57
त्रिस्कन्ध, 62
पिछला जन्म, 111
पिछले जन्म का स्थान, 105
पितामह सिद्धांत, 26
शिक्षक काल, 49, 52

शिक्षा, 8
शिक्षा तथा व्यवसाय, 41
शिवपुराण, 17
सिद्धांत, 27, 29, 50, 112
सिद्धान्त, 26
दिशाशूल, 12
दिशाशूल के परिहार, 14
दिशाशूल के उपाय, 14
विष्णुपुराण, 61
क्रियमाण कर्म, 90
विपरीत राजयोग, 21
विश्व सृष्टिमान, 56
जितेन्द्रिय, 36
निरूवत, 8
नियत, 79
निर्भीक, 37
निवृत्ति मार्ग, 98
होरा, 26, 29, 50
होरा शास्त्र, 25
होरा स्कंध, 36
भृगु संहिता, 117
भविष्य की योजनाएं, 40
भविष्य का जन्मस्थान, 111
भाग्य, 79
भाग्य एवं स्वतंत्र संकल्प, 78
भाग्य और संकल्प शक्ति, 119
भद्राश्व, 5
पृथ्वी, 4, 104
पंक्तिदूषक, 15
पंचक विचार, 151
पंचक शान्ति, 152
पंचांग, 11
परिश्रमी, 137
पवित्रता, 36
परोक्ष दर्शन, 31
पांचवा स्थान, 87
पाराशर, 53
पाराशरी काल, 49, 51, 53
पौलिश सिद्धांत, 26
पौराणिक काल, 49, 50
पदार्थीकरण, 100
ऋचाओं, 2
पुरुषार्थ, 90
पुराणों, 7
पुनर्जन्म, 112
पुनर्जन्म का सिद्धांत, 94
पूर्णमासी के प्रकार, 57
पूर्व की यात्रा, 13
पूर्व और अग्रिम जन्म, 59
ऋग, 8
प्रारब्ध, 88, 90
प्रारब्ध कर्म, 90
प्रातः काल, 57
प्रस्थान विचार, 12
प्रदोष काल, 58
प्रवृत्ति मार्ग, 98
प्रवर्तक, 50
प्रेयस कर्म, 98
प्रश्नशास्त्र, 30
श्री गोपाल गुप्ता, 113
श्रीमती शांती देवी, 112
रामायण, 51
राशियों का तारतम्य, 32
राहु काल, 58
रोमक, 26
श्रवण सम्मतः, 36
श्रुति, 2, 46
श्रेयस कर्म, 98
शब्द शास्त्र में परिश्रमी, 35
शकुन, 30

शकुन तथा संकेत, 37
शांत अन्तर्मन, 37
शाप, 111
शारीरिक चिन्ह, 112
षडंग, 12
शुभ चंद्रमा, 13
शुभ लग्न, 13
शुक्र, 9
संहिता, 27, 28, 50
संचित, 88
संचित कर्म, 90, 92
संपात का अयन, 47
संस्कार क्या हैं?, 96
समय का रेखाचित्र, 49
समयशूल, 13
स्मृति, 2, 46
सम्पात का अयन, 48
समुद्र मंथन, 17
समुद्रों, 4
स्थूल शरीर, 102
सभ्यता पर आक्रमण, 46
सीरियन, 53
सप्तर्षियों, 9
साम, 8
सौभाग्यशाली जीवन, 43
स्वतंत्र इच्छा का क्षेत्र, 127
स्वतंत्र इच्छा शक्ति, 119
स्वतंत्र संकल्प, 80
सुमेरू, 5
सुमेयिन, 53
सुनफा, 21
सत्य युग, 55
सत्याचार्य, 54
सेन्चुरी, 24
सूर्य सिद्धान्त, 26
सूक्त, 2
उषा काल, 57
उच्च शिक्षा, 107
उच्च पठन, 71
उत्तर में, 13
दृढ़, 89, 97
दृढ़ संकल्प, 37
दृढ़-अदृढ़, 89
दृढ़ादृढ़, 97
छंद, 8
दक्षिण यात्रा, 13
दक्षिण में, 13
दुर्धरा योग, 21
देश दिक्कालज्ञो, 36
दैव एवं पुरूषार्थ, 96
व्याख्याकारों का दोष, 46
व्याकरण, 8
व्यसन, 37
व्यवसाय, 42
वशिष्ठ सिद्धांत, 26
वीर सिंहावलोकन, 99
वायु, 104
वाराह मिहिर काल, 49, 52, 54
वाचक, 96
वोसी, 21
वर्तमान एवं भविष्य, 110
वैद्यनाथ, 54
वेंकटेश शर्मा, 54
वैदिक, 3
वैदिक काल, 49
वैदिक ज्योतिषशास्त्र का काल, 52
वैज्ञानिक प्रमाण, 99
वेदांग, 1, 3, 8
वेदव्यास, 61
चंद्रमा, 9

चंद्रमा, सूर्य तथा आयु, 12
चतुर्युगी, 56
चन्द्रशेखर, 131
ऐस्ट्रोलौजी, 24
ऐस्टर, 24
ज्योतिष, 24
ज्योतिष की तार्किकता, 16
ज्योतिष का इतिहास, 60
ज्योतिष के आचार्य, 62
ज्योतिष शांति प्रदायक, 16
ज्योतिषशास्त्र, 40
जयन्त, 17
जैमिनी, 53
जन्म लेने का प्रसंग, 110
जन्म-नक्षत्र, 50
जल, 104
न्यायविद, 35
नक्षत्र से, 14
नक्षत्र सूची, 15
नक्षत्र और उनके देवता, 59
नीच भंग, 21
नरसिंह राव, 124
नारद पुराण, 61
नाड़ी, 117
नव ग्रहों का स्वरूप, 10
अरुणेदयकाल, 57
अठारह प्रवर्तक, 53
अमृत कलश, 17
अमावस्या के प्रकार, 57
अभिजित काल, 57
अथर्व, 8
अर्थ, 87, 99, 104, 158
अर्थ त्रिकोण, 87, 158
अनिवार्य, 69
अग्नि, 104
अग्निपुराण, 61
अराधना, 111
आइज़न हावर, 19
आईसटीन, 44
आकाश तत्त्व, 104
अशुभ-लग्न, 14
आगामी, 88
अदृढ़, 89, 97
अवतार, 109
अनफा, 21
अन्तर्ज्ञान, 31
गरूड़पुराण, 61
गृहशांति, 111
गणित ज्योतिष, 27
गणितेषु प्रवीणो, 34
गोधूलि काल, 58
गुलिक काल, 58
गजकेसरी, 21
गर्ग, 53
ग्रीक, 53
लक्ष्मी सरस्वती आवाहन मन्त्र, 151
लघु पिंड-सूक्ष्म शरीर, 102
लाभजनक प्रयास, 44
लोगस, 24

□□□

Bookkish.com Bookstore
UG-1, Madhu Vihar Market, IP Extn.,
Patparganj, Delhi - 110092, India.
9958138227

R.V.S. Book Distributors

G-4/30, Gali No-3, G Block, Paanchva Pusta, Sonia Vihar, Delhi-110094
Mobile : 9953918219

Distributors of the Books Published by Bharatiya Prachya Evam Sanatan Vigyan Sansthan & K.V.R. Publishers All Astrological Books also Available.

The following books are published for astrologers and students of astrology for having deep knowledge of the subject. The authors are learned teachers who are dedicated for the propagation of astrology and astrological researches.

English	Price	Author	Hindi	Price
Mathematical Astrology	300.00	Y.K. Bansal वाई. के. बंसल	गणित ज्योतिष 1	300.00
Astronomy Relevant to astrology	200.00	V.P. Jain वी. पी. जैन	खगोल शास्त्र	150.00
General Astrology	250.00	S.N. Kapoor & Others एस. एन कपूर व अन्य	सामान्य ज्योतिष	200.00
Predictive Astrology	400.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	फलित ज्योतिष	400.00
Nine Planets and Twelve Bhavas	310.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	द्वादशभाव एवं नवग्रह	280.00
Delineation and Dynamic Configuration	300.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	जन्मपत्री का चित्रण एवं गतिशील संरूपण	200.00
Textbook on Shadbala and Bhava Bala	80.00	V.P. Jain वी. पी. जैन	ग्रह बल एवं भाव बल	120.00
Judgement of Bhavas and Timing through dasha and Transit	260.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	भावनिर्णय, दशा एवं गोचर द्वारा समय निर्धारण	260.00
Medical Astrology	255.00			
Mundane Astrology	320.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	संहिता ज्योतिष	500.00
Timing of Marriage	200.00	M.N. Kedar and others	विवाह का समय	200.00
Annual Horoscopy	250.00	M.N. Kedar एम. एन. केदार	वर्षफल एवं भविष्य	120.00
Introduction to Vastu	100.00	M.N. Kedar		
Muhurta	200.00	Kusum Vashistha	मुहुर्त प्रकरण	200.00
Advanced Techniques of Astrological Predictions-I	400.00	M.N. Kedar	फलित दर्पण-I	400.00
		M.N. Kedar	फलित दर्पण-II	600.00
Advanced Techniques of Astrological Predictions-II	600.00	ग्रहशांति तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए संकलनकर्ता	अमृतवाणी	151.00
		एम. एन. केदार	कल्पवृक्ष	201.00

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

देवता बोले-देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार है। प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम नियमपूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

जो देवी सब प्राणियों की बुद्धिरूप में स्थित है, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है।

ISBN No. : 81-86089-10-1

Rs. 200-00